

---

51<sup>वां</sup> 51<sup>st</sup>  
राष्ट्रीय फ़िल्म National Film  
पुरस्कार Awards  
**2004**

---



Directorate of Film Festivals  
Ministry of Information & Broadcasting  
Government of India



Indian Airlines  
Travel Partner

**संपादन**

मंजुला नेगी

**Editor**

Manjulaa Negi

**समन्वय**

मनोज श्रीवास्तव

**Co-ordination**

Manoj Srivastava

**सहयोग**

मंजु खन्ना

कौशल्या मेहरा

**Assistance**

Manju Khanna

Kaushlaya Mehra

**उत्पादन**

एस. राय

वी. के. मीणा

ए. के. गुलाटी

विलास पगारे

**Production**

S. Roy

V. K. Meena

A. K. Gulati

Vilas Pagare

फिल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित  
मुद्रक : बंगाल ऑफसेट वर्क्स, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

Designed and published by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Bengal Offset Works, Karol Bagh, New Delhi-110005

No. : 2/14/2004 PP-III

1700 Copies

Jan. 2005

## Page

### निर्णायक मंडल

### दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

राष्ट्रपति के स्वर्णकमल विजेता

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता

### कथाचित्र पुरस्कार

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म

राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म

अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म

पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म

सर्वोत्तम बाल फिल्म

सर्वोत्तम निर्देशक

सर्वोत्तम अभिनेता

सर्वोत्तम अभिनेत्री

सर्वोत्तम सह अभिनेता

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री

सर्वोत्तम बाल कलाकार

सर्वोत्तम पार्श्व गायक

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका

सर्वोत्तम छायांकन

सर्वोत्तम पटकथा

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

सर्वोत्तम संपादन

सर्वोत्तम कला निर्देशन

### JURY MEMBERS

### DADASAHEB PHALKE AWARD

Past Winners of Swarna Kamal

Dadasaheb Phalke Award Winners

### AWARDS FOR FEATURE FILMS

Best Feature Film

Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director

Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment

Nargis Dutt Award for Best Film on National Integration

Best Film on Family Welfare

Best Film on Other Social Issues

Best Film On Environment / Conservation / Preservation

Best Children's Film

Best Direction

Best Actor

Best Actress

Best Supporting Actor

Best Supporting Actress

Best Child Artist

Best Male Playback

Best Female Playback

Best Cinematography

Best Screenplay

Best Audiography

Best Editing

Best Art Direction

सर्वोत्तम वेषभूषा	52	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	54	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	56	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	58	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	60	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन	62	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया फीचर फिल्म	64	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगला फीचर फिल्म	66	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम हिन्दी फीचर फिल्म	68	Best Feature Film In Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ फीचर फिल्म	70	Best Feature Film In Kannada
सर्वोत्तम मलयालम फीचर फिल्म	72	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मराठी फीचर फिल्म	74	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम उड़िया फीचर फिल्म	76	Best Feature Film in Oriya
सर्वोत्तम तमिल फीचर फिल्म	78	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलुगू फीचर फिल्म	80	Best Feature Film in Telugu
सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म	82	Best Feature Film in English
विशेष उल्लेख	84	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	86	Awards Not Given

### गैर कथाचित्र पुरस्कार

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार	88	Award for the Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार	92	Award for the Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म	94	Award for the Best Anthropological / Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी/ऐतिहासिक पुननिर्माण संकलन फिल्म	96	Award for the Best Biographical / Historical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म	98	Award for the Best Arts / Cultural Film
सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण फिल्म	100	Award for the Best Environment / Conservation Film
सर्वोत्तम संवर्धनात्मक फिल्म	102	Award for Best Promotional Film
सर्वोत्तम कृषि सम्बन्धी फिल्म	104	Award for the Best Film on Agriculture
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	106	Award for the Best Film on Social Issues

### NON FEATURE FILM WINNERS



सर्वोत्तम शिक्षाप्रद / प्रेरक फिल्म	108	Award for the Best Educational / Motivational Film
सर्वोत्तम गवेषणा / साहसी फिल्म	110	Award for the Best Exploration / Adventure Film
सर्वोत्तम खोजी फिल्म	112	Award for the Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फिल्म	114	Award for the Best Animation Film
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	116	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म	118	Award for the Best Short Fiction Film
सर्वोत्तम निर्देशन	120	Award for the Best Direction
सर्वोत्तम छायांकन	122	Award for the Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	124	Award for the Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	126	Award for the Best Editing
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	128	Award for the Best Music Direction
सर्वोत्तम प्रकथन / वाएस ओवर	130	Best Narration / Voice Over
विशेष उल्लेख	132	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	134	Awards not given

### सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	136	Award for Best Book on Cinema
सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक	138	Award for Best Film Critic
विशेष उल्लेख	140	Special Mention

### AWARDS FOR BEST WRITING ON CINEMA

### सारांश : कथाचित्र

अबार अरण्ये	146	Abar Aranye
एइते	147	Aithe
आकाशीतोरार कोथारे	148	Akashitoraar Kathare
अ आकरे आ	149	Aw Akkare Aa
भाले थेको	150	Bhalo Theko
चोखेर बाली	151	Chokher Bali
डांस लाइक ए मैन	152	Dance Like a Man
एन्टे वीडू अपून्ते	153	Ente Veedu ... Appoontem

### SYNOPSIS - FEATURE FILMS

इयरकई	154	Eyarkai
गंगाजल	155	Gangaajal
जूये पूरा हून	156	Juye Poora Xoon
कल हो ना हो	157	Kal Ho Naa Ho
कोई मिल गया	158	Koi... Mil Gaya
मार्गम	159	Maargam
मकबूल	160	Maqbool
मीनाक्षी : टेल ऑफ थ्री सिटीज	161	Meenaxi: Tale of Three Cities
मौनी	162	Mouni
मुन्नाभाई एम बी बी एस	163	Munnabhai M.B.B.S
नॉट ऑनली मिसेज राउत	164	Not Only Mrs Raut
पादम ओन्नु : ओरु विलपम्	165	Padam Onnu: Oru Vilapam
पिंजर	166	Pinjar
पितामगन	167	Pithamagan
प्रीति प्रेमा प्रणया	168	Preethi Prema Pranaya
रघु रोमियो	169	Raghu Romeo
सबलम्	170	Sabhalam
समय	171	Samay
श्वास	172	Shwaas
टैगोर	173	Tagore
तोरा	174	Tora

### सारांश गैर कथाचित्र

### SYNOPSIS NON-FEATURE FILMS

ए साइलेन्ट किलर	176	A Silent Killer
एन एन्काउंटर विद लाइफ लिविंग	177	An Encounter with Life Living
और घुमन्तु ठहर गए	178	Aur Ghumantu Thahar Gaye
भाबा पागला	179	Bhabha Paagla
एक आकाश	180	Ek Aakash
फिडलर्स ऑन दी थैच	181	Fiddlers on the Thatch

जिओ और जीने दो	182	Jeo aur Jeene Do
काया पूछे माया से	183	Kaya Pooche Maya Se
लद्दाख, दी लैंड ऑफ मिस्ट्री	184	Ladakh, The Land of Mystery
दी लिज्जत सिस्टरहुड	185	The Lijjat Sisterhood
मैडनेस इन दी डेजर्ट	186	Madness in the Desert
मंगली : एक एक्सोरसिऑ	187	Mangali: An Exorcision
पिकासो मेटामोर्फॉसिस	188	Picasso Metamorphoses
सती राधिका	189	Sati Radhika
सीड्स ऑफ लाइफ	190	Seeds of Life
द एटीन्थ एलीफेन्ट – श्री मोनोलॉग्स	191	The 18 <sup>th</sup> Elephant – 3 Monologues
उन्नी	192	Unni
वैद्यारत्नम् पी.एस. वारियर	193	Vaidyaratnam P.S. Varier
वार एंड पीस	194	War and Peace
वाटर	195	Water
वे बैक होम	196	Way Back Home

---

निर्णायक मंडल **Jury Members**

---

कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR FEATURE FILMS



बासु चटर्जी (अध्यक्ष)  
Basu Chatterji (Chairman)



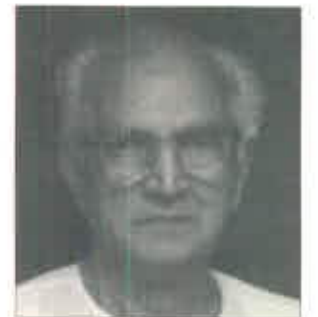
वी. निर्मला  
V. Nirmala



एन. कृष्ण कुमार उन्नी  
N. Krishna Kumar Unni



सुमा लता  
Suma Lata



के. बी. तिलक  
K. B. Tilak



शीलजा बाजपेयी  
Shailaja Bajpai



वीरेन्द्र सैनी  
Virendra Saini



मधु जैन  
Madhu Jain



रश्मि दोराईस्वामी  
Rashmi Doraiswamy



गायत्री चटर्जी  
Gayatri Chatterjee



राज दत्त  
Raj Dutt



मखोन्मणि मोंगसाबा  
Makhonmani Mongsaba



शेर चौधरी  
Sher Choudhary



मोहन कोण्डाजी  
Mohan Kondaji



अलय कुमार मोहन्ती  
Alay Kumar Mohanty



ज्योति सरूप  
Jyoti Swaroop



एन. शंकर  
N. Shankar

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन निर्णायक मंडल JURY FOR BEST WRITING ON CINEMA



अरुणा अनंत दामले  
Aruna Anant Damle



के. एन. टी. शास्त्री (अध्यक्ष)  
K. N. T. Sastry (Chairman)



कोडल्ली शिवराम  
Kodalli Sivaram



गैर-कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR NON-FEATURE FILMS



भीम सेन (अध्यक्ष)  
Bhim Sain (Chairman)



राजीव खंडागले  
Rajiv Khandagle



जोज़ सेबेस्टियन  
Jose Sebastian



सत्यव्रत कलिता  
Satyabrata Kalita



एन. एस. शंकर  
N. S. Shanker



अनवर जमाल  
Anwar Jamal



हेमन्ती बनर्जी  
Haimanti Banerjee



---

दादा साहेब  
फाल्के पुरस्कार

**Dada Saheb**  
**Phalke Award**

---



दुंदीराज गोविन्द फाल्के (बायें)  
Dhundiraj Govind Phalke (Left)

## ABOUT DADASAHEB PHALKE

This prestigious top most award of the Indian cinema is named after the father of Indian cinema Dhundiraj Govind Phalke. He is credited with making the first ever Indian feature film in the year 1913. Beginning with *Raja Harishchandra*, Dadasaheb Phalke, as he was popularly called, went on to make 95 movies and 26 shorts films in a span of 19 years, until 1932.

To honour this enterprising film personality, the Dadasaheb Phalke award was introduced in the year 1970 with a view to recognize the contribution of film personalities towards growth and development of Indian cinema. The first award was presented to the actress and pioneer of studio system in India, Devika Rani.

### दादा साहेब फाल्के

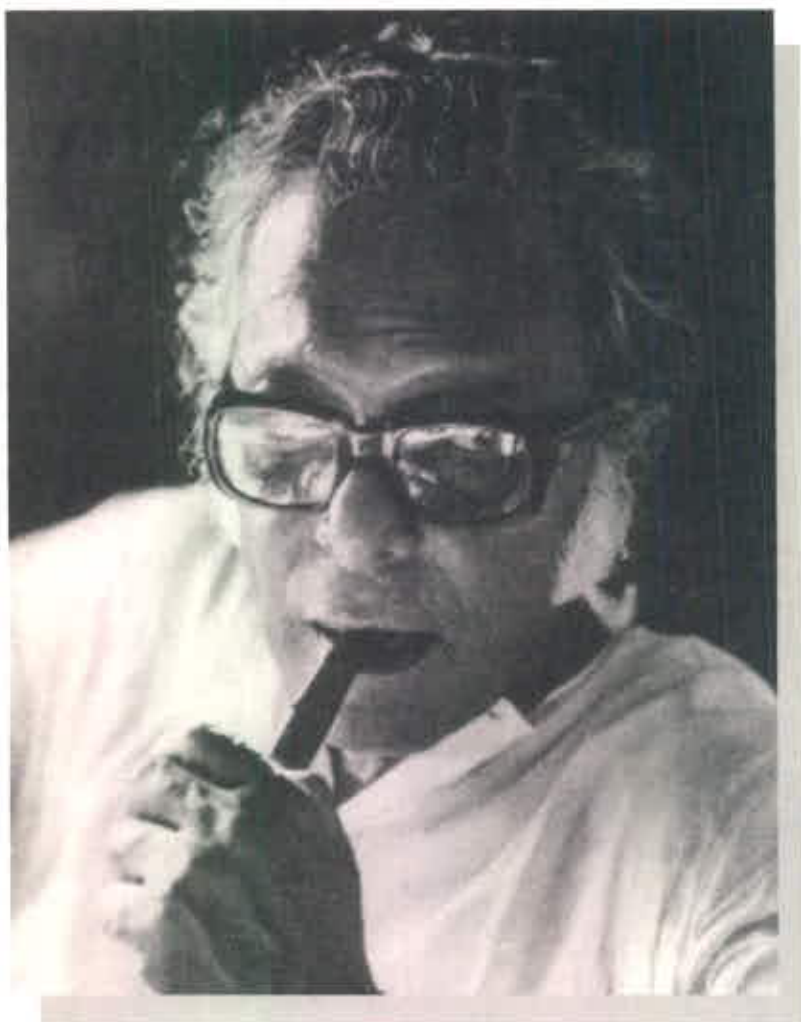
भारतीय सिनेमा का सर्वोच्च पुरस्कार भारत में सिनेमा के जनक माने जाने वाले दुंदीराज गोविन्द फाल्के के नाम से सुशोभित है।

राजा हरिश्चन्द्र से फिल्मी जीवन का प्रारंभ करने वाले दादा साहेब फाल्के ने 19 वर्षों में 95 फिल्में तथा 26 लघु फिल्में बनाई हैं।

दादा साहेब फाल्के के सम्मानार्थ यह नामित पुरस्कार सन् 1970 में पहली बार उत्कृष्ट अभिनेत्री देविका रानी को प्रदान किया गया। प्रत्येक वर्ष भारतीय सिनेमा के विकास के लिए आजीवन काम करने वाले व्यक्ति को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Handwritten signature and initials in blue ink.

*Arinal Pen*





## DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER 2003

Awards and honours are nothing new for Mrinal Sen. Apart from the Lifetime Achievement Awards that have been conferred upon him at the Milan and Pune International Film Festivals, he has also received the Nehru Soviet Land Award (1979), the Padma Bhushan in 1981, Commandeur de Ordre des Arts et Lettres (France, 1983) and Order of Friendship from the Russian Federation (2000). He has also served on numerous international juries including Cannes, Chicago, Berlin, Venice, Delhi and Moscow, Karlovy Vary, Tokyo, Mannheim and Oberhausen. Sen has also been the Swarna Kamal recipient four times for his films *Bhuvan Shome* (1969), *Chorus* (1974), *Mrigaya* (1976), *Akaler Sandhane* (1980). Though his entry into films was 'accidental' Sen's journey through the medium has been phenomenal. He is credited with having begun the 'Art Cinema Movement' (with *Bhuvan Shome*, 1969) in a country which hosts the world's largest and complex film industry. Sen has made films in Hindi, Oriya and Telugu besides Bengali.

Born on May 14, 1923, Sen's initial interest lay in sound recording since he was a student of Physics. But the real beginning was made after he "stumbled" upon *Film* by Rudolf Arnheim. Sen had a bit of a rough start as a filmmaker, what with his debut *Raat Bhore* (1956) taking a nosedive at the box-office. However, the maker persisted because he'd come to believe in the power of the medium. His next film *Neel Akaasher Neeche* (1959) fortunately fared much better. Today with over 30 films to his credit including *Aamar Bhuvan*, *Antareen*, *Khandhar*, *Kharij*, *Calcutta 71*, *Genesis*, *Ek Din Achanak*, *Ek Din Pratidin*, *Mahapritihvi*, *Akaler Sandhaney*, the Kolkata trilogy *Padatik*, *Interview* and *Kolkata Ekattor*, *Oka Uri Katha* and *Genesis*, Sen has remained true to "the possibility of building a New Cinema."

His films have fetched an assortment of Gold, Silver and Bronze prizes at various coveted festivals like Cannes, Venice, Berlin, Moscow, Karlovy Vary, Montreal, Chicago, Valladolid (Spain), Avellino (Italy), Carthage (Tunisia) and Columbo. He was nominated to the Rajya Sabha from 1997-2003. A Padma Bhushan awardee, Sen has formerly been Chairman of the FTII, Pune, a Member of NFDC, served three terms as President of the International Federation of Film Societies, and is currently a Member of the Public Service Broadcasting Trust. He has also authored several books in English and Bengali.

## दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता 2003

पुरस्कार एवं सम्मान मृणाल सेन के लिए कोई नई बात नहीं। मिलान, और पूना अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार के अतिरिक्त इन्हें सोवियत लैंड अवार्ड (1979), पद्म भूषण (1981) फ्रांस का कमांडर डी ओड्र डेस आर्ट्स एट लैटर्स (1983) एशियन फेडरेशन का आर्डर ऑफ फ्रेंडशिप (2000) प्राप्त हो चुके हैं। मृणाल सेन कान्स, शिकागो, बर्लिन, वीनस, देहली, मास्को कार्लोवीवेरी, टोक्यो, मेनहीम, ओबेर हाउसन इत्यादि समारोहों में निर्णायक रह चुके हैं। इन्हें *भुवन शोम* (1969), *कौरस* (1974), *मृगया* (1976) तथा, *अकालेर सन्धाने* (1980) के लिए स्वर्ण कमल प्राप्त हो चुके हैं।

भारतीय बंगला फिल्म उद्योग में समानान्तर सिनेमा के आन्दोलन का श्रेय मृणाल सेन (1969 में *भुवन शोम* के साथ) को ही है। मृणाल सेन हिन्दी, उड़िया, तेलुगु तथा बंगला भाषाओं में फिल्में बनायीं हैं। 14 मई 1923 को जन्मे सेन की रुचि शुरू में ध्वनि आलेखन की ओर थी क्योंकि ये फिजिक्स के छात्र थे किंतु वास्तविक शुरुआत रुडॉल्फ आर्नहीम की पुस्तक *फिल्म* के साथ हुई।

*रात भोरे* (1956) इनकी पहली फिल्म थी। अगली फिल्म *नील आकाशेर नीचे* (1959) सफल रही। मृणाल सेन अब तक 30 से अधिक फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं, जिनमें *आमार भुवन*, *अंतरीन*, *खंडहर*, *खारिज*, *कलकत्ता 71*, *जेनेसिस*, *एक दिन अचानक*, *एक दिन प्रतिदिन*, *महापृथ्वी*, *अकालेर सधाने*, *कोलकतात्री*, *पादातिक*, *इंटरव्यू* इत्यादि शामिल हैं।

## PAST WINNERS OF SWARNA KAMAL


Sr. No.	Film	Director	Language	Year
1.	Shyamchi Aai	P.K. Atre	Marathi	1953
2.	Mirza Ghalib	Sohrab Modi	Hindi	1954
3.	Pather Panchali	Satyajit Ray	Bengali	1955
4.	Kabuliwala	Tapan Sinha	Bengali	1956
5.	Do Ankhen Barah Haath	V. Shantaram	Hindi	1957
6.	Sagar Sangame	Debaki Kumar Bose	Bengali	1958
7.	Apur Sansar	Satyajit Ray	Bengali	1959
8.	Anuradha	Hrishikesh Mukherjee	Hindi	1960
9.	Bhagini Nivedita	Bijoy Basu	Bengali	1961
10.	Dada Thakur	Sudhir Mukherjee	Bengali	1962
11.	Shehar Aur Sapna	Khwaja Ahmed Abbas	Hindi	1963
12.	Charulata	Satyajit Ray	Bengali	1964
13.	Chemmeen	Ramu Kariat	Malayalam	1965
14.	Teesri Kasam	Basu Bhattacharya	Hindi	1966
15.	Hatey Bazare	Tapan Sinha	Bengali	1967
16.	Goopy Gyne Bagha Byne	Satyajit Ray	Bengali	1968
17.	Bhuvan Shome	Mrinal Sen	Hindi	1969
18.	Samskara	T. Partabhiram Reddy	Kannada	1970
19.	Seemabaddha	Satyajit Ray	Bengali	1971
20.	Swayamvaram	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1972
21.	Nirmalyam	M.T. Vasudevan Nair	Malayalam	1973
22.	Chorus	Mrinal Sen	Bengali	1974
23.	Chomana Dudi	B.V. Karanth	Kannada	1975



Sr. No.	Film	Director	Language	Year
24.	Mrigaya	Mrinal Sen	Hindi	1976
25.	Ghatashraddha	Girish Kasaravalli	Kannada	1977
26.	No award recommended			1978
27.	Shodh	Biplab Ray Choudhri	Hindi	1979
28.	Akaler Sandhane	Mrinal Sen	Bengali	1980
29.	Dakhal	Goutam Ghose	Bengali	1981
30.	Chokh	Utpalendu Chakraborty	Bengali	1982
31.	Adi Sankaracharya	G.V. Iyer	Sanskrit	1983
32.	Damul	Prakash Jha	Hindi	1984
33.	Chidambaram	G. Aravindan	Malayalam	1985
34.	Tabarana Kathe	Girish Kasaravalli	Kannada	1986
35.	Halodhia Choraye Bodhan Kahi	Jahnu Barua	Assamese	1987
36.	Piravi	Shaji N. Karun	Malayalam	1988
37.	Bagh Bahadur	Buddhadeb Dasgupta	Hindi	1989
38.	Maruppakkam	K. S. Serhumadhavan	Tamil	1990
39.	Agantuk	Satyajit Ray	Bengali	1991
40.	Bhagavad Gita	G. V. Iyer	Sanskrit	1992
41.	Charachar	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1993
42.	Unishe April	Rituparno Ghosh	Bengali	1994
43.	Kathapurushan	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1995
44.	Lal Darja	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1996
45.	Thai Saheb	Girish Kasaravalli	Kannada	1997
46.	Samar	Shyam Benegal	Hindi	1998
47.	Vanaprastham	Shaji N. Karun	Malayalam	1999
48.	Shantham	Jayaraj	Malayalam	2000
49.	Dweepa	Girish Kasaravalli	Kannada	2001
50.	Mondo Meyer Upakhyan	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	2002

## DADASAHEB PHALKE AWARD DOWN THE YEARS

SR. NO.	YEAR	AWARDEE
1.	1970	Devika Rani Roerich
2.	1971	B. N. Sircar
3.	1972	Prithviraj Kapoor
4.	1973	Pankaj Mullick
5.	1974	Sulochana (Ruby Myers)
6.	1975	B. N. Reddi
7.	1976	Dhiren Ganguly
8.	1977	Kanan Devi
9.	1978	Nirin Bose
10.	1979	R. C. Boral
11.	1980	Sohrab Modi
12.	1981	P. Jairaj
13.	1982	Naushad Ali
14.	1983	L. V. Prasad
15.	1984	Durga Khote
16.	1985	Satyajit Ray
17.	1986	V. Shantaram
18.	1987	B. Nagi Reddy
19.	1988	Raj Kapoor
20.	1989	Ashok Kumar
21.	1990	Lata Mangeshkar
22.	1991	Akkineni Nageshwara Rao
23.	1992	Balachandra Govind Pendharakar
24.	1993	Dr. Bhupen Hazarika
25.	1994	Majrooh Sultanpuri
26.	1995	Dilip Kumar
27.	1996	Dr. Rajkumar
28.	1997	Shivaji Ganesan
29.	1998	Kavi Pradeep
30.	1999	B. R. Chopra
31.	2000	Asha Bhosle
32.	2001	Yash Chopra
33.	2002	Dev Anand



---

कथाचित्र  
पुरस्कार

**Awards for  
Feature Films**

---

## सर्वोत्तम कथाचित्र

### श्वास (मराठी)

निर्माता अरुण नलावाडे को रजत कमल एवं रू 50,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक संदीप सावंत को रजत कमल एवं रू 50,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार मराठी फिल्म *श्वास* को दिया गया है । *श्वास* में एक बालक, जिसकी दृष्टि क्षीण हो रही है और उसके दादा के बीच संबंध का भावुक और हृदयस्पर्शी चित्रांकन है ।

## **BEST FEATURE FILM**

### **SHWAAS (Marathi)**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 50,000 to the Producer **ARUN NALAWADE**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 50,000 to the Director **SANDEEP SAWANT**

### **CITATION**

The award for the Best Feature Film of 2003 is given to the film *Shwaas* for its sensitive and moving portrayal of the relationship between a grandfather and his grandson when the child is about to lose his vision.



## अरुण नलावाडे

शवास निर्माता के रूप में अरुण की पहली फिल्म है। ये फिल्म में दादा का रोल भी निभा रहे हैं। वर्ष 2004 में अरुण अनेक प्रतियोगिताओं में सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार पा चुके हैं। ये 25 वर्षों से अभिनेता एवं निर्देशन के रूप में मराठी रंगमंच से जुड़े हैं। मराठी धारावाहिकों में भी इन्हें ख्याति प्राप्त है। अरुण को टेलीविजन धारावाहिकों के लिए महाराष्ट्र टाइम्स पुरस्कार 2004 तथा मराठी फिल्मों के लिए महाराष्ट्र राज्य सरकार पुरस्कार 2003 का सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।



## संदीप सांवत

पश्चिमतटीय भारत के एक गाँव में 1965 में जन्मे संदीप मुम्बई में बड़े हुए। इन्होंने व्यवहारिक मनोविज्ञान में एम. ए. किया है और इस दौरान मनोवैज्ञानिक सलाहकार का काम भी किया है।

संदीप प्रवह वर्षों से समान्तर मराठी नाटकों का लेखन एवं निर्देशन करते आ रहे हैं। इन्होंने कई एकांकी नाटकों का निर्देशन भी किया है, जो प्रतियोगिताओं में शामिल किए गए और उनके लिए पुरस्कार प्राप्त किए। वर्ष 1996 में इन्होंने एक दूरदर्शन के हिन्दी धारावाहिक अश्वमेध का निर्देशन किया। संदीप ने बहुत सी लघु और व्यवसायिक फिल्में बनायी हैं तथा टेलीविजन धारावाहिक के लिए लिखा है।

फीचर फिल्म निर्देशन में शवास इनका पहला प्रयास है। इन्होंने इस फिल्म के पटकथा एवं संवाद भी लिखे हैं। संदीप को वर्ष 2004 में सर्वोत्तम निर्देशन, सर्वोत्तम पटकथा एवं सर्वोत्तम संवाद पुरस्कार मिले हैं।



## ARUN NALAWADE

Arun Nalawade makes his debut as producer with *Shwaas*. He is also performing the role of the grandfather in the film. He has to his credit several best actor awards in different competitions in 2004 for the same film. With theatre as his background Nalawade has been active on the Marathi stage as an actor and director for almost 25 years. He is well-known and appreciated in Marathi television serials and films as well. He has also won the Maharashtra Times Award 2004 for Best Actor in television serials and the Maharashtra State Award 2003 for Best Actor in Marathi films.

## SANDEEP SAWANT

He was born in 1965 in a small village in Western coastal India and grew up in Mumbai. He has done his Masters in Applied Psychology and has worked as a counsellor for sometime during and after his degree.

Sawant has been an active writer and director in the Marathi parallel theatre for the last 15 years. He has directed several one act plays which have participated and won in competitions. In 1996 Sawant directed a 45 minute pilot episode of a Hindi television serial *Ashmavedh*. He has also made several short and corporate films and written for television serials.

With *Shwaas* he makes his directorial debut. Sawant has written the screenplay and dialogues as well. He has won several awards in 2004 for Best Direction, Best Screenplay and Best Dialogues for the film.

## निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म

मार्गम् (मलयालम)

निर्माता राजीव विजय राघवन को स्वर्णकमल एवं रु 25,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक राजीव विजय राघवन को स्वर्णकमल एवं रु 25,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म का इंदिरा गाँधी पुरस्कार *मार्गम्* फिल्म को एक अछेड़ व्यक्ति द्वारा वर्तमान सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में अपने विगत राजनैतिक जीवन के निरीक्षण के मर्मस्पर्शी अभिग्रहण के लिए दिया गया है ।

## INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

**MAARGAM (Malayalam)**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 25,000 to the Producer **RAJIV VIJAY RAGHAVAN**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 25,000 to the Director **RAJIV VIJAY RAGHAVAN**

### CITATION

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 2003 is given to *Maargam* for poignantly capturing the troubled journey of a middle-aged individual re-examining his political past in the light of prevailing socio-political values.



## राजीव विजय राघवन

कोट्टयम में 1958 में जन्मे राजीव ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से फिल्म मेकिंग का कोर्स किया है। इन्होंने छः वर्ष तक जी. अरविन्दन के सहायक के रूप में काम किया है। इन्होंने नौ वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है जिनमें *सिस्टर अल्फोजा ऑफ मरनन्गानम्*, *पीपुल मैटर*, *केसरी* तथा *सीड्स ऑफ मालाबार* शामिल हैं। राजीव को दो राज्य पुरस्कार तथा एक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

मार्गम् इनकी पहली फीचर फिल्म है तथा इन्हें केरल अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 2003 में फिप्रेसी विशेष उल्लेख तथा सर्वोत्तम फिल्म सहित केरल राज्य पुरस्कार 2003 के सात पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।



## RAJIV VIJAY RAGHAVAN

Rajiv Vijay Raghavan was born in Kottayam in 1958. He graduated from University of Kerala and joined Film and Television Institute of India, Pune for an integrated course on filmmaking. He also assisted G. Aravindan on his last six films.

He has directed nine documentaries including *Sister Alphonsa of Bharananganam*, *People Matter*, *Kesari* and *Seeds of Malabar*. He is the recipient of two state awards and a National Award.

*Maargam* is his debut feature film and has won the FIPRESCI Special Mention in IFFK 2003 and seven Kerala State Awards including for the Best Film in 2003.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म

मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस.(हिन्दी)

निर्माता विधु विनोद चोपड़ा को स्वर्णकमल एवं रुपये 40,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक राज कुमार हिरानी को स्वर्णकमल एवं रुपये 40,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म का पुरस्कार मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस को महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को हास्य विनोद एवं संवेदना के साथ प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है ।

**BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT**

**MUNNABHAI M.B.B.S (Hindi)**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 40,000 to the Producer **VIDHU VINOD CHOPRA**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 40,000 to the Director **RAJ KUMAR HIRANI**

**CITATION**

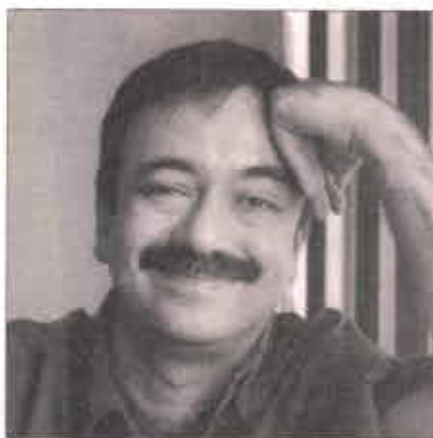
The award for the Best Popular Film of 2003 providing wholesome entertainment is given to *Munnabhai M.B.B.S.* for dealing with social issues with humour and compassion.

## विधु विनोद चोपड़ा

विधु विनोद चोपड़ा श्रीनगर, कश्मीर में पैदा व बड़े हुए। अर्थशास्त्र में स्नातक होने के पश्चात् इन्होंने एफ.टी.आइ.आइ., पुणे से निर्देशन का अध्ययन किया। अध्ययन काल में ही अपनी डिप्लोमा फिल्म *मर्डर एट मंकी हिल* के लिए सर्वोत्तम प्रयोगात्मक फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा सर्वोत्तम स्टुडेंट फिल्म का गुरुदत्त मेमोरियल पुरस्कार प्राप्त करके अपनी पहचान बना ली। इनकी अगली फिल्म *एन एन्काउंटर विद फ्रेसिज* को अनेक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले तथा आस्कर में लघु गैर-कल्पित फिल्म के लिए भी नामित हुई और उसके बाद *सजाये मौत*, *खामोशी द म्याजीकल*, *परिदा*, *1942 ए लव स्टोरी*, *करीब*, *मिशन कश्मीर* जैसी बहु आयामी फिल्में। आजकल विनोद चोपड़ा हिन्दी फिल्म *यज्ञ* और अंग्रेजी फिल्म *मूव 5* पर काम कर रहे हैं।

## राज कुमार हिरानी

राज कुमार नागपुर में जन्मे तथा स्नातक तक वहीं पढ़े। छात्रकाल से ही वह हिन्दी रंगमंच से जुड़े रहे। ग्रेजुएशन के पश्चात् इन्होंने एफ.टी. आइ.आइ. से सिनेमा एवं संपादन में डिप्लोमा किया। इनके प्रॉडक्शन हाऊस कैनवास फिल्मस के अनेक भारतीय व्यवसायियों के लिए विज्ञापन फिल्में बनाने का गौरव प्राप्त है। इन्होंने विज्ञापन, वृत्तचित्र, धारावाहिक, म्यूजिक वीडियोज आदि विभिन्न विषयों में निर्देशन किया। ये कभी कभी दूसरे निर्देशकों के लिए संपादन कार्य भी करते हैं। विधु विनोद चोपड़ा की मिशन कश्मीर के लिए इन्हें जी सिने अवार्ड्स का सर्वोत्तम संपादक पुरस्कार प्राप्त हुआ।



## VIDHU VINOD CHOPRA

Vidhu Vinod Chopra was born and raised in Srinagar, Kashmir. After graduating in Economics he studied direction at the FTII in Pune. His student diploma film *Murder at Monkey Hill* won the National Award for best short experimental film and the Guru Dutt Memorial Award for Best Student film. His next film, *An Encounter with Faces* won numerous international awards and was nominated for an Oscar in the short, non-fiction film category. A substantial body of work followed – *Saaza-e-Maut*, *Khamosh*, *Parinda*, *1942 – A Love Story*, *Kareeb* and *Mission Kashmir*. His films applauded by both critics and the box-office reveal an extraordinary range of content, and mastery over form.

## RAJ KUMAR HIRANI

Raj Kumar Hirani was born in Nagpur and studied there upto graduation. Right through his student days, he was very actively involved with Hindi theatre in Nagpur. Following his graduation, he headed for the FTII, Pune, where he specialised in Editing.

As a director, he's looked for variety. Generally, human interest subjects have attracted him the most – capturing the humour in a situation or the warmth of a moment. Occasionally, he has also edited for other directors. One such assignment for Vidhu Vinod Chopra's *Mission Kashmir* got him the Best Editor Award at Zee Cine Awards.

## राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

पिंजर (हिन्दी)

निर्माता लकी स्टार एन्टरटेनमेन्ट लिमिटेड को रजत कमल एवं रुपये 30,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक डा. चन्द्र प्रकाश द्विवेदी को रजत कमल एवं रुपये 30,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का नरगिस दत्त पुरस्कार *पिंजर* को दिया गया है। *पिंजर* की कहानी यह बताती है कि मानवीय संबंध एवं अनुभूतियाँ सामाजिक एवं धार्मिक विच्छेद को किस प्रकार पराजित करने में सक्षम है।

## **NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION**

**PINJAR (Hindi)**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 30,000 to the Producer **LUCKY STAR ENTERTAINMENT LTD.**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 30,000 to the Director **Dr. CHANDRA PRAKASH DWIVEDI**

### **CITATION**

The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film of 2003 on National Integration is given to the film *Pinjar* for exploring the power of human relationships in overcoming social and religious schism.



## लकी स्टार एन्टरटेनमेन्ट

*पिंजर* लकी स्टार का हिन्दी फिल्म जगत में नया प्रयास है। अत्यधिक सुव्यवस्थित लकी स्टार ने अपना सफर म्यूजिक एलबमों एवं गानों से कुछ वर्ष पहले ही शुरू किया। अमृता प्रीतम की कहानी पर आधारित और डा. चन्द्र प्रकाश द्विवेदी द्वारा निर्देशित इनके पहले प्रयास *पिंजर* को भरपूर सराहना मिली है।

## डा. चन्द्र प्रकाश द्विवेदी

1960 में जन्मे चन्द्र प्रकाश 18 वर्षों से लेखक, निर्देशक एवं कलाकार के रूप में रंगमंच, फिल्म एवं टेलीविजन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों से जुड़े हैं। तीनों विधाओं में इन्हें अनेक पुरस्कार मिले हैं। इन्होंने सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य काल के राजनीतिज्ञ चाणक्य, जिन्होंने *अर्थशास्त्र* की रचना की, के जीवन पर आधारित सुप्रसिद्ध धारावाहिक *चाणक्य* का लेखन एवं निर्देशन किया तथा इसमें अभिनय भी किया। डा. द्विवेदी को चाणक्य में अभिनय के लिए 1991 में अपट्रान द्वारा सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला। इस धारावाहिक को सर्वोत्तम धारावाहिक, छायांकन तथा कला निर्देशन के लिए भी पुरस्कार मिले।

डा. द्विवेदी के अन्य पुरस्कृत धारावाहिकों में महाभारत के नायक कर्ण पर आधारित *मृत्युंजय* शामिल हैं। इन्होंने सुप्रसिद्ध खजुराहो के मन्दिरों पर एक वृत्तचित्र का निर्देशन भी किया है। *पिंजर* उनकी पहली फीचर फिल्म है।



## LUCKY STAR ENTERTAINMENT

It is a new venture in the Hindi film industry and is one of the most organized production houses. Started a few years back with the aim to promote fresh talent, Lucky Star began its journey by promoting and releasing music albums and songs and has now ventured into film production. Its maiden film *Pinjar*, based on the short story by Amrita Pritam and directed by Dr. Chandraprakash Dwivedi has won rave reviews at various forums.

## DR. CHANDRA PRAKASH DWIVEDI

Born in 1960 Dr. Dwivedi has been involved with creative fields of theatre, film and television since the past 18 years as writer, director and actor. He has won several awards at the inter-collegiate level competitions in all three categories. He also wrote, directed and acted in *Chanakya*, a popular television serial based on the life of the noted economist and kingmaker Chanakya. Dr. Dwivedi was awarded the Best Actor Award for *Chanakya* by Upton in 1991. The serial also received awards for cinematography, art direction and best serial by Upton.

Dr. Dwivedi's other major award-winning work includes television serial *Mrityunjay* based on the life of the epic hero of the *Mahabharata* Karna and *Ek Aur Mahabharat*.

*Pinjar* is Dr. Dwivedi's debut feature film.

## परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म

पाठ्म ओन्नु : ओरु विलापम् (मलयालम)

निर्माता आर्यदन शौकत को रजत कमल एवं रुपये 30,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक टी.वी. चन्द्रन को रजत कमल एवं रुपये 30,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार *पाठ्म ओन्नु : ओरु विलापम्* को रूढ़िवादी समाज में छोटी आयु में विवाह के विरुद्ध आवाज उठाने एवं स्त्री शिक्षा की वकालत करने के लिए दिया गया है।

## **BEST FILM ON FAMILY WELFARE**

### **PADAM ONNU : ORU VILAPAM (Malayalam)**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 30,000 to the Producer **ARYADAN SHOUKATH**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 30,000 to the Director **T.V. CHANDRAN**

### **CITATION**

The Award for Best Film on Family Welfare goes to *Padam Onnu : Oru Vilapam* for raising a voice against early marriage and for its advocacy of Women's Education in a conservative society.



## आर्यदन शौकत

आर्यदन शौकत ने कालीकट यूनिवर्सिटी से जुआलजी में बी.एस.सी. किया है। कथा साहित्य लिखने के पश्चात् ये अब लघु कथाएं तथा पटकथा लिखते हैं। आर्यदन ने फिल्म निर्माता के रूप में भी काम किया है। शौकत की कहानियाँ कई मलयाली पत्रिकाओं में छपी है। इन्हीं में से एक कहानी थी शाहिना जो पुरस्कृत फिल्म पादम ओन्नु : ओरु विलपम की प्रेरणा बनी।



## ARYADAN SHOUKATH

Aryadan Shoukath has done his B.Sc. in Zoology from the Calicut University. He later turned to fiction writing and is now a short story and screenplay writer. He has also been working as a film producer. Shoukath's stories have been published in some of the leading Malayalam periodicals. And it was one of his short stories *Shahina* which was the inspiration behind the award-winning *Padam Onnu : Oru Vilapam*.

## टी. वी. चन्द्रन

*पोथन माडा* को सर्वोत्तम निर्देशन के लिए राष्ट्रपति का स्वर्ण कमल प्राप्त होने पर टी. वी. चन्द्रन को ख्याति मिली। इन्हें अन्य दो फिल्मों *ओरमाइकल उन्डायरिक्कनम्* और *मंगम्मा* के लिए भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। ये दोनों क्रमशः 1995 तथा 1997 सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्में चुनी गईं। ये सभी फिल्में भारतीय पैनोरमा में भी शामिल की गई हैं।

केरल राज्य स्तर पर चन्द्रन को *एलिसिन्ते अन्वेषणम्*, *पोथन माडा*, *ओरमाइकल उन्डायरिक्कनम्*, *सुसन्ना* तथा *डैनी* के लिए पुरस्कार मिले हैं।

*डैनी* केरल अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह की सर्वोत्तम फिल्म चुनी गई। इसे जॉन अब्राहम पुरस्कार भी मिला।



## T.V. CHANDRAN

He rose to national prominence when *Ponthan Mada* fetched him the Golden Lotus for Best Direction in 1993. He has won the National Award for two other films – *Ormaikal Undayirikkanam* and *Mangamma*, which were adjudged the best Malayalam films of 1995 and 1997 respectively.

At the Kerala state level, the director has won awards for *Aliceinte Anweshanam*, *Ponthan Mada*, *Omaikal Undayirikkanam*, *Susanna* and *Dany*, which was also adjudged the best film at the International Film Festival of Kerala. It has also won the John Abraham Award.

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियाँ, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म

कोई मिल गया (हिन्दी) और गंगाजल (हिन्दी)

निर्माता राकेश रोशन को रजतकमल एवं रुपये 15,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक राकेश रोशन को रजतकमल एवं रुपये 15,000/- का नकद पुरस्कार

निर्माता एन्टरटेन्मेन्ट वन एवं प्रकाश झा प्रोडक्शन प्रत्येक को रजत कमल एवं 7,500/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक प्रकाश झा को रजतकमल एवं रुपये 15,000/- का नकद पुरस्कार गंगाजल के लिए

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार हिन्दी फिल्मों *कोई मिल गया* तथा *गंगाजल* को संयुक्त रूप से दिया गया है। *कोई मिल गया* को यह पुरस्कार एक तरुण के संवेदनशील चित्रण के लिए दिया है जो मानसिक रूप से विचलित होते हुए भी ब्रह्मांड की ऊँचाइयों को छूने में सफल होता है।

और

*गंगाजल* को यह पुरस्कार समाज में व्याप्त बुराइयों को कठोर चित्रण के लिए दिया गया है।

**BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROSTITUTION, WOMEN, CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.**

**KOI MIL GAYA (Hindi) & GANGAAJAL (Hindi)**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 15,000 each to the Producer & Director **RAKESH ROSHAN**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 7,500 each to the Producer Entertainment One and **PRAKASH JHA** Productions

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 15,000 each to the Director **PRAKASH JHA**

**CITATION**

The Award for the Best Film on Other Social Issues of 2003 is given to *Koi Mil Gaya* for its compassionate portrayal of a mentally challenged young man who is able to reach out to the wonders of the Universe.

**and**

The Award for the Best Film on Other Social Issues of 2003 is given to the film *Gangaajal* for its stark delineation of a wide range of wrongs pervading society and state.

## राकेश रोशन

सुप्रसिद्ध संगीत निर्देशक रोशन के पुत्र राकेश रोशन ने अपना कैरियर एच. एस. रवेल और मोहन कुमार के सहायक निर्देशक के रूप में शुरू किया। राकेश ने *घर घर की कहानी* में पहली बार अभिनय करने के बाद लगभग 100 फिल्मों में अभिनय किया, जिनमें *खेल खेल में खट्टा भीटा*, *आँखों आँखों में*, *पराया धन*, *खूबसूरत* तथा *आखिर क्यों* शामिल हैं। 1978 में रोशन ने फिल्म क्राफ्ट नाम से अपनी प्राडक्शन कम्पनी शुरू की और *आप के दीवाने*, *कामचोर*, और *भगवान दादा* जैसी फिल्मों का निर्माण किया। *सुदगर्ज* से निर्देशन की तरफ मुड़े राकेश रोशन ने *खून भरी माँग*, *किशन कन्हैया*, *कर्ण अर्जुन* जैसी हिट फिल्मों का निर्देशन किया। *कहो ना प्यार है* से राकेश अपने बेटे हृतिक रोशन को फिल्मों में लाए, जिसे अपार सफलता मिली।

## प्रकाश झा

प्रकाश झा ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से सपादन में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्होंने अब तक 8 फीचर, 25 वृत्तचित्र तथा टेलीविजन के लिए दो फीचर और तीन सीरीज बनाई हैं। झा को 1985 में *दामुल* के लिए स्वर्णकमल प्राप्त हुआ। 2002 में उनके वृत्तचित्र *सोनल* को स्वर्णकमल प्राप्त हुआ। उनकी अन्य फिल्मों को भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। *फेसिज आटर दी स्टार्म* (1982), *कुडिआट्टम* (1987) और *लुकिंग बैक* (1988) सभी ने रजतकमल प्राप्त किए। इनकी अन्य पुरस्कृत फीचर फिल्मों में *मृत्युदंड* एवं *परिणति* शामिल हैं।



## RAKESH ROSHAN

The son of the celebrated music director Roshan, Rakesh Roshan began his career as an assistant director to filmmaker H. S. Rawail and Mohan Kumar in 1968. He made his acting debut with *Ghar Ghar Ki Kahani* and has since acted in over a 100 films. Some of them are *Khel Khel Mein*, *Khatta Meetha*, *Aankhon Ankhon Mein*, *Khoobsurat*, *Kaamchor* and *Aakhir Kyon*.

Roshan launched his own film production company Film Kraft (1978) and produced films like *Aap Ke Deewane*, *Jaag Utha Insaan* and *Bhagwan Dada*. He switched to direction with *Khudgarz*, *Khoon Bhari Maang* and *Karan Arjun*. With *Kaho Naa...Pyaar Hai*, Rakesh Roshan launched his son, Hrithik. He has since made *Koi...Mil Gaya*.

## PRAKASH JHA

The filmmaker has produced eight feature films and over 25 documentaries. Jha won the Golden Lotus for *Damul* (1985). He has also won the Golden Lotus for Best Documentary for *Sonal* (2002).

He has won the Silver Lotus for *Faces After The Storm* (1982) *Koodiattam* (1987) and *Looking Back* (1988).

This apart, his other features include award-winning *Mrityudand* and *Parinati*. He has been Chairman of the Jury for 50th National Film Awards.



## पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म

जूये पूरा हून (असमिया)

निर्माता संजीब सभापंडित को रजतकमल एवं रुपये 30,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशक संजीब सभापंडित को रजतकमल एवं रुपये 30,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण का सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार असमिया फिल्म *जूये पूरा हून* को व्यापक स्थानान्तरण तथा बाढ़ एवं औद्योगीकरण के कारण छिन्न भिन्न पारम्परिक जीवन शैली के सटीक चित्रण के लिए दिया गया है।

## BEST FILM ON ENVIRONMENT CONSERVATION/PRESERVATION

**JUYE POORA XOON (Assamese)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer **SANJIB SABHAPANDIT**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Director **SANJIB SABHAPANDIT**

### CITATION

The Award for the Best Film on Environment Conservation/Preservation goes to *Juye Poora Xoon* for its representation of large-scale migration and the erosion of a way of life by floods and industrialisation.

## संजीव सभापंडित

1957 में जन्मे संजीव मैकेनिकल इंजीनियर हैं, इन्होंने एम.बी.ए. भी किया है। असम इंजीनियरिंग कॉलेज, गुवाहाटी में पाँच वर्षों तक प्राध्यापक रहने के बाद इन्होंने कुछ लोगों के साथ मिलकर उत्तर-पूर्व भारत की सबसे बड़ी कपड़ा मिल स्थापित की। वर्ष 2002 तक उसके निदेशक रहे। सन् 1994 में इन्होंने गुवाहाटी में असम जातीय विद्यालय नाम से एक गैर-परम्परागत शिक्षा संस्थान स्थापित किया। दो पुस्तकों के लेखक संजीव ने गुवाहाटी में पहला लाइट एंड शो किया जिसकी परिकल्पना से लेकर डिजाइन और कार्यान्वयन तक का श्रेय संजीव को ही है।

संजीव ने बकरियों का परिवहन के लिए एक अनोखा तरीका निकाला जो पूर्णतया मानवीय है। सुविख्यात निर्देशक जाहनु बरूआ की फिल्म *कुहखल* में संजीव ने मुख्य भूमिका अदा की है।

*जूये पूरा हून* निर्देशक के रूप में इनकी पहली फिल्म है।



## SANJIB SABHAPANDIT

Born in 1957, Sanjib Sabhapandit is a Mechanical Engineer with an MBA degree. After a five-year stint as a lecturer in Assam Engineering College, Guwahati, he along with a few others established the largest textile mill of North-East India and worked as a director till 2002. In 1994, he along with a few others established a non-conventional educational institute name Asom Jatiya Vidyalaya at Guwahati.

A writer of two books he was the first to conceive, design and execute the first and light and sound show of North-East India at Guwahati. He designed and introduced a unique goat transportation system which is also a 'humane' one.

He has also acted in the title role of *Kuhkal* by the internationally acclaimed filmmaker, Jahnu Barua.

*Juye Poora Xoon* is his first feature film as a director.

## सर्वोत्तम बाल फिल्म

तोरा (असमिया)

निर्माता भारतीय बाल चित्र समीति को स्वर्णकमल एवं रूपये 30,000/- का नकद पुरस्कार.

निर्देशक जाहनु बरुआ को स्वर्णकमल एवं रूपये 30,000/- का नकद पुरस्कार.

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम बाल का पुरस्कार असमिया फिल्म *तोरा* को यह प्रतिपादित करने के लिए दिया गया है कि वयस्कों द्वारा बनायी गयी अनावश्यक सीमाओं एवं बन्धनों को एक बालिका तोड़ पाने में सफल होती है।

## BEST CHILDREN'S FILM

**TORA (Assamese)**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 30,000 to the Producer **CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 30,000 to the Director **JAHNU BARUA**

### CITATION

The Award for the Best Children's Film of 2003 is given to the film *Tora* for showing how a child brings down the boundaries and barriers created by adults.



## भारतीय बाल चित्र समिति

भारतीय बाल चित्र समिति की स्थापना 1955 में हुई। संस्था बच्चों की फिल्मों के निर्माण, वितरण, प्रदर्शन एवं उन्नयन में कार्यरत है। समिति भारत तथा विदेश में बच्चों की फिल्मों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। ये अपनी फिल्मों की वीडियो कैसेट्स का वितरण भी करते हैं। भारतीय बाल चित्र समिति की फिल्में नियमित रूप से दूरदर्शन पर प्रसारित होती रहती है। सी.एस.एफ.आई. द्वारा निर्मित फिल्में अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की जा चुकी है। भारतीय बाल चित्र समिति हर दूसरे वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह का आयोजन करती है।

## जाहनु बरुआ

पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित असमिया फिल्मकार जाहनु बरुआ की फिल्में उनके सामाजिक विषयों के लिए प्रसिद्ध हैं, जिनमें असम की समकालीन संस्कृति और राजनीति प्रतिबिम्बित है। गुवाहाटी विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद इन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इनकी पहली फिल्म *अपारूपा* (1982) थी, जिसका निर्माण राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने किया है। जाहनु की सभी फिल्मों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। जाहनु को नौ बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। *पापोरी*, *बनानी*, *पोखी*, *हलोदिया चोराए बाओधन खाए* इनकी चर्चित फिल्में हैं।



## CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA

CFSI was established in 1955 to provide value-based entertainment to children through the medium of films. The organisation is engaged in production, acquisition, distribution, exhibition and promotion of childrens' films.

The Society is committed to spreading and encouraging the children's film movement in India and abroad.

## JAHNU BARUA

The Assamese filmmaker and Padmashree Jahnun Barua's films are known for their social themes, which address the contemporary culture and politics of Assam, deploying an almost expressionistic approach to regional reformism. Graduating from the Guwahati University and subsequently the Film and Television Institute of India, Pune, he made his first feature film, *Aparooopa* (1982), the first Assamese film produced by NFDC. Most of his films have won acclaim nationally and internationally. He has been awarded the "Padma Shree" by the Government of India and received the National Award nine times.

## सर्वोत्तम निर्देशन

गौतम घोष

निर्देशक गौतम घोष को स्वर्णकमल एवं रुपये 50,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार गौतम घोष को बंगला फिल्म *अबार अरण्ये* के लिए दिया गया है। निर्देशक ने इस फिल्म में सामाजिक-राजनैतिक जीवन में भवितव्यता का जटिल सन्निवेश किया है।

## **BEST DIRECTION**

**GOUTAM GHOSE**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 50,000 to the Director **GOUTAM GHOSE**

### **CITATION**

The Award for Best Direction of 2003 is given to Goutam Ghose for *Abar Aranye* for his complex weaving of human destinies across a wide range of socio-political and cinematic histories.

## गौतम घोष

कलकत्ता में 1950 में जन्मे गौतम घोष ने 1970 में फिल्में बनाना शुरू किया। इनके दूसरे वृत्तचित्र *हंगरी ऑटम* को ओबेरआउसन फिल्म समारोह (1978) का मुख्य पुरस्कार मिला। घोष ने अपनी पहली फीचर फिल्म तेलंगाना आंदोलन पर आधारित *मा भूमि* (1980) तेलुगु में बनाई और उसके बाद *दखल* (1982), *पार* (1984),

*लैंड ऑफ सैंड ड्यून्स* (1985), *अंतर्जली यात्रा* (1988), *मीटिंग ए माइलस्टोन* (शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खॉं पर, 1989), *पद्मा नदीर माझी* (1992), *पतंग* (1993), *बियान्ड द हिमालयाज* (सिल्क रूट पर आधारित वृत्तचित्र, 1995), *गुडिया* (1997), *राय* (1999), *कालाहडी* (2000), *देखा* (2001), *ए ट्रेंजर इन द स्नो* (2001), *अबार अरण्ये* (2003) और *इम्परमानेन्स* (2004)। यह सभी फिल्में अत्यंत सराहनीय रहीं।

गौतम घोष को अब तक तेरह राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं जिनमें नौ रजत तथा चार स्वर्णकमल शामिल हैं। इनकी फिल्में वीनस, कान्स, लंदन, मान्द्रीयल, रोटरडम, ताशकद, सेन फ्रांसिस्को, न्यूयार्क, नान्स, भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और अन्य कई फिल्म समारोह में दिखाई जा चुकी हैं और पुरस्कृत भी हुई हैं।

घोष को 1997 में विख्यात ईरानियन फिल्मकार अब्बास किआरस्तामी और पौलैंड के क्रिस्टॉफ जानुसी के साथ विट्टोरिओ डि सिका पुरस्कार प्राप्त हुआ है।



## GOUTAM GHOSE

Born in Kolkata in 1950, Goutam Ghose started making films in the 1970s. His second documentary film, *Hungry Autumn* won the main prize at the Oberhausen Film Festival in 1978. Ghose made his first feature *Maa Bhoomi* (1980), following it up with the widely acclaimed *Dakhil* in 1982, *Paar* (1984), *Land of Sand Dunes* (1985), *Antarjali Yatra* (1988), *Meeting a Milestone* (on the Shehnai maestro Ustad Bismillah Khan, 1989), *Padma Nadir Majhi* (1992), *Patang* (1993), *Beyond the Himalayas* (a documentary on the Silk Route, 1995), *Gudiya* (1997), *Ray* (1999), *Kalahandi* (2000), *Dekha* (2001), *A Treasure in the Snow* (2001), *Abar Aranye* (2003) and *Impermanence* (2004).

Ghose has received 13 National Awards to date, which include Nine Silver Lotuses and Four Golden Lotuses. His films have been shown and awarded at various festivals like Venice, Cannes, London, Montreal, Rotterdam, Tashkent, International Film Festival of India, San Francisco, New York and Nantes among others.

Ghose is the recipient of Vittorio Di Sica Award in 1997 along with the acclaimed Iranian filmmaker Abbas Kiarostami and the Polish film auteur Krystof Zanussi.

## सर्वोत्तम अभिनेता

### विक्रम

अभिनेता विक्रम को रजतकमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार विक्रम को तमिल फिल्म *पितामगन* में एक कठिन रोल में सशक्त अभिनय के लिए दिया गया है।

## **BEST ACTOR**

### **VIKRAM**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to actor **VIKRAM**

### **CITATION**

The award for Best Actor of 2003 is given to Vikram in *Pithamagan* for his powerful performance in a difficult and demanding role.



## विक्रम

वर्ष 1964 में जन्मे कैंडी जॉन विक्रम ने अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. किया है और 1989 से फिल्मों में अभिनय कर रहे हैं। इन्होंने अभी तक अठारह फिल्मों में अभिनय किया है, जिनमें *कावल गीतम्*, *थंडू वित्ताइन एन्नई*, *उल्लासम्*, *हाऊसफुल*, *पुदिया मनारगल*, *सेतु*, *समय* और अब *पितागमन* शामिल हैं।

पागलखाने के निवासी के रूप में विक्रम ने भावुकतापूर्ण अभिनय किया है। इसके लिए कई संस्थाओं से सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला, जैसे तमिलनाडू राज्य सरकार पुरस्कार, फिल्मफेयर और सिनेमा एक्सप्रेस। विक्रम को सिंगापुर सरकार से एम.जी.आर. पुरस्कार भी मिल चुका है।

पितागमन में अत्येष्टि प्रबंधक की भूमिका के साथ न्याय करने में शारीरिक रूप से पूर्णतया रूपान्तरित किया। बिना संवादों के संकेतों और भावाभिव्यक्ति द्वारा संदेश देना अपने आप में चुनौतीपूर्ण था।



## VIKRAM

Born in 1964, Kenndy John Victor a.k.a Vikram has done his post-graduation in English Literature and has been acting in films since 1989. He has so far done 18 films including *Kaval Geetham*, *Thandhu Vittaen Ennai*, *Meera*, *Ullasam*, *Housefull*, *Pudhiya Mannargal*, *Sethu* and *Samy* and now *Pithamagan*.

As an inmate of a mental asylum, Vikram had given a most moving performance much acclaimed in *Sethu*. Rewarded with several Best Actor Awards from various agencies, he also received the honour from the Government of Tamil Nadu, the Filmfare team and Cinema Express for the film. Vikram is also the recipient of the Best Actor M.G.R. Award from the Government of Singapore.

As an undertaker in the film *Pithamagan*, Vikram underwent a complete physical transformation in order to do justice to the role. He also had to communicate without dialogue and the challenge lay in expressing himself through gestures, expressions and body language.



## सर्वोत्तम अभिनेत्री

मीरा जैस्मिन

अभिनेत्री मीरा जैस्मिन को रजतकमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार मीरा जैस्मिन को *पादम औन्नु : ओरु विलापम्* एक ऐसी युवती के अभिनय के लिए दिया है, जो छोटी आयु में तथा पहले से विवाहित पुरुष के साथ विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों में फँसी है। मीरा का अभिनय सूक्ष्म और अविच्छिन्न है। इनमें छोटी छोटी खुशियों और महान दुःखों को अभिव्यक्त करने की क्षमता है।

## BEST ACTRESS

MEERA JASMIN

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to actress **MEERA JASMIN**

### CITATION

The award for the Best Actress of 2003 is given to Meera Jasmin in *Padam Onnu : Oru Vilapam* for her sustained and subtle portrayal of a young girl trapped in an early, polyandrous marriage and her ability to convey her little joys and large sorrows.

## मीरा जैस्मिन

मीरा जैस्मिन दक्षिण भारतीय सिनेमा की मुख्यतम अभिनेत्रियों में से एक है। इन्होंने लोहित दास द्वारा निर्देशित *सूत्रधारम्* से अपने फिल्मी जीवन की शुरुआत की। यद्यपि यह फिल्म सफल नहीं हुई, किन्तु मीरा की प्रतिभा की पहचान अवश्य हो गई और इन्हें उसके बाद कई फिल्मों में काम करने का अवसर मिला।

इनकी पहली तमिल फिल्म *रन* को अपार व्यावसायिक सफलता मिली तथा *गुडुम्ब शंकर* इनकी पहली कन्नड फिल्म थी।

जोसेफ फिलिप और अलेयम्मा की पुत्री मीरा मलयालम सिनेमा की प्रतिभाशाली अभिनेत्री हैं। पाठम ओन्नु ओरु विलपम् में एक पहले से विवाहित पुरुष के साथ शादी के बंधन में फंसी किशोरी के सफल अभिनय के लिए इन्हें केरल राज्य सरकार का सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है। इन्हें *कस्तूरीमान* फिल्म में अभिनय के लिए भी पुरस्कृत किया जा चुका है।



### MEERA JASMIN

Meera Jasmine is one of the biggest stars in South Indian Films. She started her film career from a Malayalam film *Sootradharan* directed by Lohitha Das. And even though the film *Sootradharan* flopped, her talent for histrionics was noticed and Meera was picked up for subsequent films which showcased her acting skill. She also won the Bharathan Memorial Gold Medal and Sanakaradi Memorial Award.

Meera was snapped up by prestigious filmmakers from all over the South. Her debut film in Tamil is *Run* which became the biggest commercial success of the year and Meera won the Sivaji Ganesan Award and the Dinakaran Award for it. Her first film in Kannada is *Mourya*. She has also been awarded for her performance in *Kastooriman*.

Meera was born to Jose Philip and Eliyamma Jose in Pathanamthitta district of Kerala. One of the most promising new faces of Malayalam cinema, Meera bagged the State Award for Best Actress for her both critically acclaimed and commercially successful role of a young girl caught in a polyandrous marriage in *Padam Onnu: Oru Vilapam*.

This is her first National Award.

## सर्वोत्तम सह-अभिनेता

पंकज कपूर

अभिनेता पंकज कपूर को रजतकमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम सह-अभिनेता का पुरस्कार पंकज कपूर को *मकबूल* फिल्म में माफिया डॉन की भूमिका में जकड़े जाने एवं न्यूनोक्त होने के बावजूद सशक्त भूमिका के लिए दिया गया है।

## **BEST SUPPORTING ACTOR**

**PANKAJ KAPUR**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to actor **PANKAJ KAPUR**

### **CITATION**

The award for the Best Supporting Actor of 2003 is given to Pankaj Kapur for *Maqbool* for his riveting yet understated performance as a mafia don.

## पंकज कपूर

उत्कृष्ट अभिनेता पंकज कपूर लम्बे समय से रंगमंच सिनेमा और टेलीविजन के साथ जुड़े हुए हैं। जो लोग दूरदर्शन के शुरू धारावाहिक, *करमचन्द* और *जबान संभाल के* जैसे हास्य विनोद को देखकर बड़े हुए हैं वे आज भी पंकज के *ऑफिस ऑफिस* को नियम से देखते हैं।

यद्यपि दूरदर्शन के साथ हास्य कलाकार के रूप में अधिक जुड़े रहे, इन्होंने कुछ बहुत ही अच्छी फिल्मों में काम किया है।

*जाने भी दो यारों* फिल्म में खलनायक तरनेजा के रूप में इनका अभिनय यादगार था।

पुरस्कृत फिल्मों *एक रुका हुआ फैसला* और *एक डाक्टर की मौत* में पंकज के अभिनय की छाप सिने प्रेमियों के मन में आज भी है। ये चुनी हुई भूमिकाएं ही करते हैं और उन्हें दक्षता से निभाते हैं। *ये वो मन्जिल तो नहीं, खामोश, मोहन जोशी हाजिर हो, खंडहर, जलवा* और *राख* इनकी अन्य यादगार फिल्में हैं।

*मकबूल* में अब्बाजी के रूप में, जिसके लिए इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है, पंकज का अभिनय अभूतपूर्व है। पंकज लोकप्रसिद्धि से दूर रहना पसंद करते हैं, चाहते हैं उनका काम हो उनके बारे में बताए और ऐसा होता भी है।



## PANKAJ KAPUR

An actor par excellence, Pankaj Kapur has had a long association with theatre, films and television. He has been around since the early days of soaps and comedy shows on television in the country. People who have grown up on *Karamchand* and *Zabaan Sambhalke* are still hooked on his *Office*. *Office* currently on air.

Although his television work has largely been associated with comedy, this talented actor has made a mark in the few films that he chose to be in. Count among them the cult classic *Jaane Bhi Do Yaaron* where his portrayal of the main villain Tameja was nothing short of brilliant.

His subsequent performances in the award-winning *Ek Ruka Hua Faisla* and *Ek Doctor Ki Maut* have etched his image in the minds of countless cine goers. He is choosy about the characters he wishes to portray and is a self-acknowledged stickler for perfection. His other memorable films include *Yeh Woh Manzil To Nahin*, *Khamosh*, *Mohan Joshi Hazir Ho*, *Khandhar*, *Jalwa* and *Raakh*.

His performance as Abbaji in *Maqbool* for which he has won the National Award was one of the most minimalist and commanding performances ever to grace the Indian film screen. Despite the stellar performances and the awards they have drawn, Kapur has always shied away from the limelight, preferring his work to speak for him instead.

## सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री

शर्मिला टैगोर

अभिनेत्री शर्मिला टैगोर को रजतकमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का पुरस्कार शर्मिला टैगोर को बंगला फिल्म *अबार अरण्ये* में सामाजिक एवं व्यक्तिगत संबंधों को गरिमापूर्वक निभाने के लिए दिया गया है।

## BEST SUPPORTING ACTRESS

SHARMILA TAGORE

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to actress **SHARMILA TAGORE**

### CITATION

The award for the Best Supporting Actress of 2003 is given to Sharmila Tagore in *Abar Aranye* for the grace with which she handles social and personal relationships.



## शर्मिला टैगोर

भारतीय सिनेमा के महान फिल्मकार सत्यजित राय की खोज शर्मिला टैगोर *अप्यूत्रयी* का अभिन्न हिस्सा है। अपने समय के मुख्य अभिनेता शम्मी कपूर के साथ *कश्मीर की कली* फिल्म में अभिनय के साथ शर्मिला हिन्दी मुख्यधारा सिनेमा के साथ जुड़ी। इन्होंने समानान्तर और व्यावसायिक सिनेमा दोनों में सहज अभिनय किया है। एक तरफ सत्यजित राय की *देवी* तो दूसरी तरफ यश चोपड़ा की *वक्ता*। हिन्दी फिल्मों *अमानुष*, *अमर प्रेम*, *न्यू देहली टाइम्स*, *दूसरी दुल्हन*, *मौसम* और *गृह प्रवेश* में इनका अभिनय अविस्मरणीय है।

सुप्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रपौत्री शर्मिला अपने फिल्मी जीवन में सफलता की शिखर पर थीं जब इन्होंने महान क्रिकेटर मंसूर अली खान पटौदी से विवाह किया। बाद में भी ये गिनी चुनी भूमिकाएँ करती रही जैसे मीरा नायर की *मिसीसिपी मसाला* और ऋतुपर्णो घोष की *शुभो मुहूर्त*। *अबार अरण्य* भी ऐसी ही फिल्म है और वास्तव में शर्मिला ने सत्यजित राय की *अरण्येर दिन रात्रि* में भी अभिनय किया है, जो गौतम घोष का इस फिल्म का आधार है।



## SHARMILA TAGORE

Originally a discovery of the great master Satyajit Ray, Sharmila Tagore is an inseparable part of the Apu Trilogy. She moved over to Hindi mainstream cinema and turned a major star with *Kashmir Ki Kali* where she starred opposite the leading star of his times, Shammi Kapoor. Tagore is one actress who straddled the distinctive worlds (at the time) of parallel and commercial cinema with ease. If she had on one hand performed in Ray's *Devi*, she was equally at home in Yash Chopra's *Waqt*. Her notable performances in Hindi cinema include *Amanush*, *Aradhana*, *Amar Prem*, *New Delhi Times*, *Doosri Dulhan*, *Mausam* and *Grihapravesk*.

The great-granddaughter of poet-laureate Rabindranath Tagore, Sharmila married the cricketing legend Nawab Mansur Ali Khan Pataudi while still at the peak of her career. However, she has continued to be a part of films, occasionally returning with roles that do justice to her as an actor. She has also acted in Mira Nair's *Mississippi Masala* and Rituparno Ghosh's *Shubho Muhurat*.

Tagore had also featured in Satyajit Ray's *Aranye Din Ratri* which inspired Ghose's vision for *Abar Aranye* and for which she wins this award.

## सर्वोत्तम बाल कलाकार

अश्विन चितले तथा कालिदास

अश्विन चितले तथा कालिदास प्रत्येक को रजत कमल एवं रु 5000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार अश्विन चितले को *शवास* फिल्म में एक ऐसे बालक के सशक्त अभिनय के लिए दिया जा रहा है जो यह जान चुका है कि उसकी दृष्टि हमेशा के लिए खो जाने वाली है।

और

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार कालिदास को *एन्टे वीडु अपून्ते* में जटिल मनोभावों के सर्वतोमुखी अभिनय के लिए दिया गया है।

## BEST CHILD ARTIST

**ASHWIN CHITALE and KALIDAS**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000 each to **ASHWIN CHITALE** and **KALIDAS**

### CITATION

The Award for the Best Child Artist of 2003 is given to Ashwin Chitale in *Shwaas* for his haunting performance as a child who realises that he is going to lose his eyesight.

and

The Award for the Best Child Artist of 2003 is given to Kalidas for *Ente Veedu... Appoitem* for his versatility in performing a range of complex emotions.

## अश्विन चितले

अश्विन चितले ने सात वर्षीय परशुराम का अभिनय किया है, जिसे डाक्टर ने बताया है कि ऑपरेशन के बाद वह कभी देख नहीं पाएगा।

अश्विन की यह पहली फिल्म है। वह पूना के एन ए वी प्राइमरी स्कूल में छठी कक्षा में पढ़ता है। दो वर्ष पहले जब वह चौथी कक्षा में था तभी यह फिल्म पूरी हो चुकी थी। *शवास* में अभिनय के लिए इसे कई पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें अल्फा गौरव और माता सम्मान भी शामिल है।



## ASHWIN CHITALE

He performs the role of Parushram, a seven-year-old who is informed by his doctor that owing to a rare type of cancer, he would have to be operated but will lose his eyesight in the process.

This is Ashwin's debut film. He goes to NAV Primary School in Pune and is studying in sixth standard. He was in fourth standard when the film was completed two years ago. He has won all the awards in 2004 for his performance in *Shwaas* including Alpha Gaurav and Mata Samman.

## कालिदास

कालिदास वस्तुतः *एन्टे वीडु अप्पुन्ते* का मुख्य अभिनेता है। यह इसकी दूसरी फिल्म है और इसे *कोचु कोचु सन्तोषंगल* में अपने पहले अभिनय के लिए अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। कालिदास मुख्यकलाकार जयराम एवं पार्वती का बेटा है।

लगभग सभी राज्यीय संस्थाओं ने *एन्टे वीडु अप्पुन्ते* में अभिनय के लिए कालिदास को पुरस्कृत किया है।



## KALIDAS

Kalidas is in fact the hero of *Ente Veedu... Appoitem*. This is his second film and he has won numerous awards even for his maiden performance in *Kochu, Kochu Santhoshangal*. He is the son of leading film artists Jayaram and Parvathy.

Almost every state organization that has awards for Best Child Artist has given it to Kalidas for his performance in *Ente Veedu...* in 2003.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक

सोनू निगम

सोनू निगम को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम पार्श्व गायक का पुरस्कार सोनू निगम को *कल हो ना हो* फिल्म के शीर्षक गीत के यादगार गायन के लिए दिया है ।

## **BEST MALE PLAYBACK**

### **SONU NIGAM**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to **SONU NIGAM**

### **CITATION**

The award for the Best Male playback singer of 2003 is given to Sonu Nigam in *Kal Ho Naa Ho*, for his memorable rendition of the title song that captures the spirit of the film.



## सोनू निगम

दिल्ली के निकट फरीदाबाद में जन्मे सोनू निगम प्रसिद्ध गायक अगम कुमार निगम के पुत्र हैं। बचपन से संगीत का वातावरण मिलने के कारण स्वाभाविक ही था कि सोनू अपने पिता के पद चिन्हों पर चलते।

दिल्ली में स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद सोनू मुंबई चले गए और वहीं पत्राचार से अपनी शिक्षा पूरी की।

गायक के रूप में सोनू तब तक संघर्ष करते रहे, जब तक वे टी. सीरिज के (स्व.) गुलशन कुमार से नहीं मिला। 19 वर्ष की आयु में ही *अच्छा सिला दिया तूने मेरे प्यार का* गीत ने सोनू को गायन की ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया। तब से ये अनेक हिन्दी फिल्मों के लिए पार्श्वगायन कर चुके हैं, जिनमें *ताल*, *संघर्ष*, *हसीना मान जाएगी*, *दिल से*, *परदेस*, *बार्डर*, *मेजर साब*, *रिफ्यूजी*, *दुल्हन हम ले जाएँगे*, *हद कर दी आपने*, *जंगल* और कई अन्य शामिल हैं। सोनू ने एक फिल्म में अभिनय भी किया, जो असफल रही, किन्तु उनका अन्तिम उद्देश्य संगीत ही है।



## SONU NIGAM

Sonu Nigam was born on 30 July, in Faridabad (near Delhi) and is the only son of Agam Kumar Nigam, a popular singer himself. The child was introduced to musical strains from an early age and it was only natural that he'd follow in his father's footsteps. He completed his schooling in Delhi and then shifted base to Mumbai where he completed his college studies through correspondence courses.

His struggle as a singer continued until he met (the late) Gulshan Kumar of T-Series music company, who gave him his first break. It was *Achcha sila diya tune mere pyar ka* that turned Sonu Nigam into a singing star across the nation at the age of 19. He has since sung for various popular Hindi films and most of his numbers top the charts. The films that he has playbacked for include *Taal*, *Sangharsh*, *Haseena Maan Jayegi*, *Dil Se*, *Pardes*, *Border*, *Major Saab*, *Refugee*, *Dulhan Hum Le Jayenge*, *Hadh Kar Di Aapne*, and *Jungle* among several others.

He also has one hit musical show on television *Sa Re Ga Ma* to his credit and one flop film on the record. But the thrust of his career remains his music.



## सर्वोत्तम पार्श्व गायिका

तरली सरमा

तरली सरमा को रजतकमल एवं रुपये 10,000/- को नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम पार्श्वगायिका का पुरस्कार तरली सरमा को एक भक्तिपूर्ण गीत को वाद्यों की संगत के बिना ही लयात्मक गायन के लिए दिया है।

## **BEST FEMALE PLAYBACK**

**TARALI SARMA**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to **TARALI SARMA**

### **CITATION**

The award for the Best Female Playback singer of 2003 is given to Tarali Sarma in *Akashitoraar Kathare*, for her tuneful rendition of a devotional song without instrumental accompaniment.

## तरली सरमा

गुवाहाटी यूनिवर्सिटी के अंग्रेजी में पोस्टग्रेजुएट तरली सरमा ने लखनऊ की भातखंडे यूनिवर्सिटी से संगीत विशारद किया है। इन्होंने कई फिल्मों के लिए पार्श्वगायन, संगीत रचना तथा संगीत निर्देशन किया है। *अभिमान, प्रजापति, तोतालीर अनुभव, तोमार मौरमोर कौन* तथा *बोरगीत* इनकी गैर-फिल्मी एलबम हैं।

तरली ने *जोन जोलाये कोपालोट, हिया दिया निया, प्रिया ओ प्रिया, कोकादयुतेर घर जवाई* और *हेपाह* के लिए पार्श्व गायन किया है। इन्होंने असमिया फिल्मों *आकाशी तोरार कोथारे, स्नेहा, पोहार, जीवन अरु संगीत, अरोष्ठा अब्बास्थान, सोंजनी* तथा *लाज* के लिए संगीत भी दिया है।

यूनिवर्सिटी एवं राज्य स्तर पर तरली को अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। वर्ष 1998 में ये गुवाहाटी विश्वविद्यालय की सर्वोत्तम गायिका चुनी गई। *मोतीचागोंधा* और *हेपाह* असमिया फिल्मों में पार्श्वगायन के लिए इन्हें दो बार ज्योतिरूपा ज्वाइंट मीडिया पुरस्कार मिल चुका है।



## TARALI SARMA

Tarali Sarma is a post-graduate in English from Guwahati University and has done her Bachelors in Music (Visharad) from Bhatkhande University in Lucknow. She has been a playback singer, composer and music director for several films. Not only that she has also cut individual non-film albums like *Abhimaan, Projapati, Totalir Anubhav, Tomar Mourmor Kaun* and *Borgit*.

As a playback singer she has been associated with *Jon Jolae Kopalot, Hiya Diya Niya, Priya O Priya, Kokadeuter Ghar Jowai* and *Hepah*. She has successfully given music for a number of Assamese films like *Akashitaraar Kathare, Tomar Mouramor Koun, Sneha, Pohar, Jivan Aru Sangeet, Arosth Abasthan, Sonjoni* and *Laaz*.

Tarali has won several awards at the University and State levels. She was adjudged the Best Singer of Guwahati University in 1998. She has won twice over the Jyotirupa Joint Media Award for the Best Female Playback singer for the Assamese films, *Moitchocondha* and *Hepah* in 1993.

## सर्वोत्तम छायांकन

### अभीक मुखोपाध्याय

छायाकार अभीक मुखोपाध्याय को रजतकमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

फिल्म को प्रोसेसिंग लैबोरेटरी रैनबो कलर लैब, हैदराबाद को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार अभीक मुखोपाध्याय को बंगला फिल्म *भालो थेको* के वृत्तान्त को छायांकन के द्वारा शान्ति एवं सौन्दर्य से अभिवृद्ध करने के लिए दिया गया है।

## BEST CINEMATOGRAPHY

### ABHIK MUKHOPADHYAY

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to **ABHIK MUKHOPADHYAY**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to **RAINBOW COLOUR LAB**, Hyderabad for processing the film

### CITATION

The award for the Best Cinematography of 2003 is given to Abhik Mukhopadhyay for *Bhalo Theko*, for enriching the narrative with tranquillity and beauty.

## अभीक मुखोपाध्याय

कोलकाता यूनिवर्सिटी से कॅमिस्ट्री में स्नातक अभीक बहुमुखी प्रतिभाशाली हैं और इन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पूना से छायांकन में डिप्लोमा किया है। अभीक एक मंजे हुए छायाकार व वीडियोग्राफर हैं। इन्होंने भारत में और विदेश में भी काम किया है। इन्होंने फीचर फिल्मों, वृत्तचित्रों के साथ साथ विज्ञापन फिल्मों के लिए भी काम किया है, जिसमें रोजर कोरमन द्वारा निर्मित एवं गैनेथ गिब्ले द्वारा निर्देशित *नाइटफाल* शामिल है।

बंगाल में इन्होंने अपर्णा सेन और मृणाल सेन जैसे ख्याति प्राप्त निर्देशकों के साथ काम किया है। *चोखर वाली* ऋतुपर्णा घोष की पाँचवीं फिल्म है, जिसका छायांकन अभीक ने किया है। अन्य फिल्में हैं - *असूख*, *उत्सव*, *शुगो मुहुर्त* और *रैनकोट* अभीक को पिछले वर्ष *पातालघर* फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।



## ABHIK MUKHOPADHYAY

A graduate in Chemistry from Kolkata University, Abhik diversified and did his Diploma in Cinematography from the Film and Television Institute of India, Pune.

Abhik Mukhopadhyay is by far one of India's most accomplished cinematographers and videographers. He has been working both in India and abroad. He has worked on feature films as well as advertising commercials, including the Roger Corman produced *Nightfall* directed by Gywneth Gilby.

In Bengal, he has worked with well-known directors like Aparna Sen and Mrinal Sen. *Chokher Bali* is the fifth film that he has cinematographed for Rituparno Ghosh. The others are *Asookh*, *Utsab*, *Shubho Muhurat* and *Raincoat*.

He has previously received the National Award for Cinematography for the film *Patalghar*, which was a comic-book adventure.

## सर्वोत्तम पटकथा

गौतम घोष

पटकथा लेखक गौतम घोष को रजतकमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार गौतम घोष को बंगला फिल्म *अबार अरण्ये* के पटकथा लेखन के लिए दिया है। घोष समय के तंतुओं को बुनने तथा विगत और आज में एक संवाद कायम करने में सफल हुए हैं।

## **BEST SCREENPLAY**

**GOUTAM GHOSE**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to Screenplay Writer **GOUTAM GHOSE**

### **CITATION**

The award for the Best Screenplay of 2003 is given to Goutam Ghose in *Abar Aranye* for weaving together the strands of time, creating a resonant dialogue between the past and the present.



## गौतम घोष

कलकत्ता में 1950 में जन्मे गौतम घोष ने 1970 में फिल्में बनाना शुरू किया। इनके दूसरे वृत्तचित्र *हंगरी ऑटम* को ओबेरआउसन फिल्म समारोह (1978) का मुख्य पुरस्कार मिला। घोष ने अपनी पहली फीचर फिल्म तेलंगाना आंदोलन पर आधारित मां भूमि (1980) तेलुगु में बनाई और उसके बाद *दखल* (1982), *पार* (1984),

*लैंड ऑफ सैंड ड्यून्स* (1985), *अंतर्जली यात्रा* (1988), *मीटिंग ए माइलस्टोन* (शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ पर, 1989), *पदमा नदीर माझी* (1992), *पतंग* (1993), *बियान्ड द हिमालयाज* (सिल्क रूट पर आधारित वृत्तचित्र, 1995), *गुडिया* (1997), *राय* (1999), *कालाहंडी* (2000), *देखा* (2001), *ए ट्रेजर इन द स्नो* (2001), *अबार अरण्ये* (2003) और *इम्परमानेन्स* (2004)। यह सभी फिल्में अत्यंत सराहनीय रही।

गौतम घोष को अब तक तेरह राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं जिनमें नौ रजत तथा चार स्वर्णकमल शामिल हैं। इनकी फिल्में वीनस, कान्स, लंदन, मन्ट्रीयल, रोट्टरडम, ताशकंद, सेन फ्रांसिस्को, न्यूयार्क, नान्स, भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और अन्य कई फिल्म समारोह में दिखाई जा चुकी हैं और पुरस्कृत भी हुई हैं।

घोष को 1997 में विख्यात फिल्मकार ईरानियन अब्बास किआरस्तामी और पौलैंड के क्रिस्टॉफ जानुसी के साथ विट्टोरिओ डि सिका पुरस्कार प्राप्त हुआ है।



## GOUTAM GHOSE

Born in Kolkata in 1950, Goutam Ghose started making films in the 1970s. His second documentary film, *Hungry Autumn* won the main prize at the Oberhausen Film Festival in 1978. Ghose made his first feature *Maa Bhoomi* (1980), following it up with the widely acclaimed *Dakhal* in 1982, *Paar* (1984), *Land of Sand Dunes* (1985), *Antarjali Yatra* (1988), *Meeting a Milestone* (on the Shehnai maestro Ustad Bismillah Khan, 1989), *Padma Nadir Majhi* (1992), *Patang* (1993), *Beyond the Himalayas* (a documentary on the Silk Route, 1995), *Gudiya* (1997), *Ray* (1999), *Kalahandi* (2000), *Dekha* (2001), *A Treasure in the Snow* (2001), *Abar Aranye* (2003) and *Impermanence* (2004).

Ghose has received 13 National Awards to date, which include Nine Silver Lotuses and Four Golden Lotuses. His films have been shown and awarded at various festivals like Venice, Cannes, London, Montreal, Rotterdam, Tashkent, International Film Festival of India, San Francisco, New York and Nantes among others.

Ghose is the recipient of Vittorio Di Sica Award in 1997 along with the acclaimed Iranian filmmaker Abbas Kiarostami and the Polish film auteur Krystof Zanussi.

## सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

अनूप मुखोपाध्याय तथा दीपन चटर्जी

अंतिम मिश्रित ट्रैक के लिए प्रत्येक री-रिकार्डिस्ट अनूप मुखोपाध्याय तथा दीपन चटर्जी को रजतकमल और / रूपये 5000/- का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का पुरस्कार अनूप मुखोपाध्याय तथा दीपन चटर्जी को बंगला फिल्म *भालो थेको* में ध्वनि के अभिनव प्रयोग, इसकी गुणवत्ता और विशिष्टता के लिए दिया गया है।

## **BEST AUDIOGRAPHY**

**ANUP MUKHOPADHYAY and DEEPAN CHATTERJEE**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000 each to Re-recordists (of the final mixed track) **ANUP MUKHOPADHYAY** and **DEEPAN CHATTERJEE**

### **CITATION**

The award for the Best Audiography of 2003 is given to Anup Mukhopadhyay and Deepan Chatterjee in *Bhalo Theko* for the innovative use of sound, its quality and timbre.

## अनूप मुखोपाध्याय

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से ध्वनि आलेखन तथा ध्वनि अभियांत्रिकी में ग्रेजुएट अनूप मुखोपाध्याय ने दूरदर्शन, एनएफडीसी और रुपायन में काम किया है। अनूप ने 250 से अधिक फिल्मों तथा वृत्त चित्रों के लिए ध्वनि आलेखन, पुनरालेखन किया।

इन्होंने सत्यजित राय, बुद्धदेव दास गुप्ता, तरुण मजूमदार, तपन सिन्हा, मृणाल सेन, अपर्णा सेन, नबेन्दु चटर्जी, गौतम घोष, डा. भावेन्द्र नाथ सैकिया, गौतम बोरा, प्रदीप किशन, विक्टर बनर्जी, अंजन चौधरी, स्वप्न सिन्हा, वीरेश चटर्जी, सलिल दत्त और अरविन्द मुखर्जी जैसे फिल्मकारों के साथ काम किया।

अनूप को पहले *सॉन्स ऑफ महलबनीर* तथा *उत्तरा* के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

## दीपन चटर्जी

दीपन चटर्जी ने संगीतज्ञ के रूप में अपना कैरियर सुप्रसिद्ध निर्देशक पंचम के साथ 1970 में शुरू किया। हिन्दी फिल्म *शोलै* के बाद इनकी रुचि संगीत और ध्वनि के तकनीकी पक्ष की ओर हुई। 1977 में चटर्जी ने आर. डी. बर्मन और आशा भोंसले के संगीत दल के साथ विश्व भ्रमण किया। *शालीमार* फिल्म के अंतिम ट्रैक की मिक्सिंग करते हुए इन्होंने *इएमआई स्टुडियोज*, लंदन में भी काम किया। 1978 में रॉयल अनबर्ट हाल में आशा भोंसले के गायन कार्यक्रम के लिए रिकार्डिंग तथा मिक्सिंग की। स्वतंत्र ध्वनि आलेखक और साउंड इंजीनियर के रूप में चटर्जी ने अनेक हिन्दी, मलयालम, तमिल, तेलुगु और बंगला फिल्मों के लिए काम किया। इनकी स्वर की परख, तकनीकी जानकारी और कला कौशल फिल्म के ध्वन्यात्मक सौन्दर्य में चार चौद लगा देते हैं। इन्हें केरल राज्य पुरस्कार तथा स्क्रीन वीडियोकॉन पुरस्कार भी मिल चुके हैं।



## ANUP MUKHOPADHYAY

An FTII graduate in Sound Recording and Sound Engineering, Anup Mukhopadhyay has worked in Doordarshan, NFDC, Rupayan and WBFDC Government of West Bengal.

He has worked for more than 250 films and documentaries made by many eminent filmmakers like Satyajit Ray, Buddhadeb Dasgupta, Tarun Mazumdar, Tapan Sinha, Mrinal Sen, Aparna Sen, Goutam Ghose, Gautam Bora, Pradip Kishen, Victor Banerjee and mainstream filmmakers like Anjan Chowdhury, Swapan Saha and Arabinda Mukherjee.

## DEEPAN CHATTERJEE

Enamoured by the sounds of music since an early age, Deepan Chatterjee began his career as a professional musician with the acclaimed music director (the late) Rahul Dev Burman in 1970. The post-production of the Hindi film *Sholay*, awoke his interest in the technical aspects of music and sound. Several hundred compositions by Pancham (as R. D. Burman was known among friends) were fine-tuned by Chatterjee.

He also worked at the EMI Studios in London, when doing the final mixing Chatterjee stayed with Pancham till the latter's demise in 1994.

Chatterjee has since worked on Hindi, Malayalam, Tamil, Telegu and Bengali feature films. He has won the National Award for the Malayalam film *Kaala Paani* and Hindi film *Halo*.

## सर्वोत्तम संपादन

आरिफ शेख

संपादन आरिफ शेख को रजतकमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम संपादन का पुरस्कार आरिफ शेख को हिन्दी फिल्म *समय* के संपादन द्वारा फिल्म की रहस्य सफलता पूर्वक बनाए रखने के लिए दिया गया है।

## **BEST EDITING**

**AARIF SHEIKH**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 each to editor **AARIF SHEIKH**

### **CITATION**

The award for the Best Editing for the year 2003 is given to Aarif Sheikh in *Samay*, for the crisp cutting that successfully sustains the tempo of the film's suspense.



## आरिफ शेख

10 जनवरी 1975 को मुंबई में जन्मे आरिफ शेख फिल्मों में रुचि के कारण संपादन की ओर मुड़े। इन्होंने चन्दन अरोड़ा के सहायक के रूप में शुरुआत की।

विशाल भारद्वाज की *मकड़ी* (1999) का स्वतंत्र रूप से संपादन करने के बाद आरिफ विशाल भारद्वाज की ही *मकबूल*, रॉबी गरेवाल की *समय* (जिसके लिए इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल रहा है) ई. निवास की *बरदाश्त* तथा सौरभ नारंग की *वास्तुशास्त्र*।

आने वाले कुछ ही समय में आरिफ शेख द्वारा संपादित रिलीज होने वाली फिल्में हैं सौरभ शुक्ला की *चेहरा* तथा *ऐ दिल*, राहुल डोलकिया की *परजानिया* रमेश खटकर की *रोकड़ा* तथा विशाल भारद्वाज की *ब्लू अम्बरेला*।



## AARIF SHEIKH

Aarif Sheikh was born in Mumbai on 10<sup>th</sup> January 1975. His interest in filmmaking made him turn to editing. He began his career as an assistant to Chandan Arora (of *Mein Madhuri Dixit Banna Chahti Hoon*) on various commercials.

In '99 when Vishal Bhardwaj was looking for an editor for his film *Makdee*, Aarif Sheikh grabbed his first independent film as an editor. He also went on to edit the highly acclaimed *Maqbool* (again by Vishal Bhardwaj), *Samay* by Robbie Grewal (for which he takes home his first National Award), *Bardashu* by E. Niwas and *Vaastu Shastra* by Saurabh Narang.

With a spate of films awaiting release in the coming months, Aarif Sheikh has already hit mainstream film editing. His upcoming projects include *Chehra* by Saurabh Shukla, *Aey Dil* by Saurabh Shukla, *Parzania* by Rahul Dholakia, *Rokda* by Ramesh Khatkar and *Blue Umbrella* by Vishal Bhardwaj.

## सर्वोत्तम कला निर्देशन

इंद्रनील घोष तथा शर्मिष्ठा रॉय

कला निर्देशन इंद्रनील घोष तथा शर्मिष्ठा रॉय प्रत्येक को रजतकमल तथा रूपये 5,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम कला निर्देशन का पुरस्कार इंद्रनील घोष तथा शर्मिष्ठा रॉय को संयुक्त रूप से दिया गया है। इंद्रनील घोष को यह पुरस्कार बंगला फिल्म *चोखेर बाली* में कला द्वारा काल एवं परिवेश के पुनर्निर्माण के लिए दिया गया है।

और

शर्मिष्ठा रॉय को यह पुरस्कार *मीनाक्षी : द टेल ऑफ थ्री सिटीज* में फिल्म की कहानी के अनुरूप रंगों के सुन्दर संयोजन के लिए दिया गया है।

## BEST ART DIRECTION

**INDRANIL GHOSH and SHARMISTHA ROY**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000 each to Art Directors **INDRANIL GHOSH** and **SHARMISTHA ROY**

### CITATION

The Award for Best Art Direction of 2003 is given to Indranil Ghosh in *Chokher Bali* for his muted recreation of a period and its ambience.

and

The Award for Best Art Direction of 2003 is given to Sharmistha Roy for creating a colourful ambience which effectively supported the narrative of the Hindi film, *Meenaxi: A Tale of Three Cities*.

## इन्द्रनील घोष

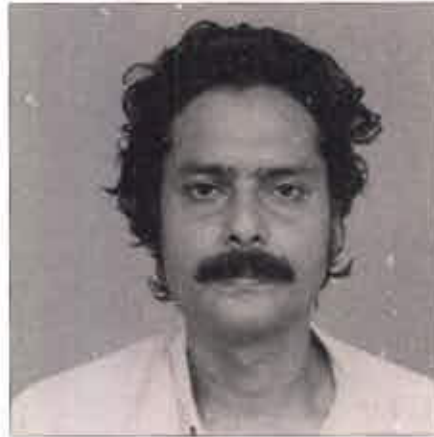
इन्द्रनील घोष 18 वर्षों से कला निर्देशक हैं। इन्होंने पहली बार श्याम बनेगल *भारत एक खोज* के सहायक कला निर्देशक का काम किया। तब से आन्तरिक साज सज्जा और क्लोज अप, नेस्ले, ब्रुक बॉड, कुकमी, शेफ, जूनियर हार्लिक्स जैसे अनेक ब्रांड्स के लिए बनी विज्ञापन फिल्मों का कला निर्देशन कर चुके हैं।

इन्होंने ऋतुपर्णा घोष की *असूख*, श्यामानन्द जलान की *मुकामिनय* तथा हाल ही में ऋतुपर्णा घोष की *चोखेर बाली* का कला निर्देशन किया है।

## शर्मिष्ठा राय

शर्मिष्ठा राय ने एस एन डी टी यूनिवर्सिटी, मुंबई से 1986 में इंटीरियर डिजाइन में डिप्लोमा किया तथा स्वतंत्र रूप से कार्य करने से पूर्व छः वर्षों तक सुविख्यात कला निदेशक सुधेन्दु राय के साथ प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1994 में *ये दिल्लगी* तथा *अनाड़ी* से स्वतंत्रा रूप से कला निर्देशन करने लगीं।

कई विज्ञापन फिल्मों तथा धारावाहिकों के अतिरिक्त ये अब तक 30 फीचर फिल्मों के लिए कला निर्देशन कर चुकी हैं। इस क्षेत्र में इन्हें अनेक पुरस्कार मिले हैं जिसमें यश चोपड़ा की *दिल तो पागल है* के लिए फिल्मफेयर तथा स्क्रीन अवार्ड शामिल हैं।



## INDRANIL GHOSH

Indranil Ghosh has been working as Art Director for the last 18 years. He first worked as an Assistant Art Director on Shyam Benegal's *Bharat Ek Khoj*. He has since dabbled in interior decoration and been art director for various commercials for brands such as Close Up, Nestle, Brooke Bond, CookMe, Chef, Junior Horlicks among others.

He has also worked as Art Director on *Asookh* by Rituparno Ghosh, *Mukha-bhinaya* by Shyamanand Jalan and more recently *Chokher Bali* by Rituparno Ghosh again.

## SHARMISTHA ROY

Sharmistha Roy completed her Diploma in Interior Design from SNDT University Mumbai in 1986. She has trained with the renowned art director Sudhendu Roy for a period of six years before venturing on her own. She began her independent practice in 1994 with the films *Yeh Dillagi* and *Anari*.

To date, she has 30 feature films as Art Director to her credit, besides having worked on a number of ad films and serials. Sharmistha has also won several awards in her field. Her accolades include the Filmfare and Screen Awards for Yash Chopra's *Dil To Pagal Hai* (1996) and Karan Johar's *Kuch Kuch Hota Hai* (1997).

She also received the Zee Award for KKHH the same year. *Kabhie Khushi Kabhi Gham* has fetched for Sharmistha the IIFA as well as the Filmfare in 2001. She also won the IIFA once again and the Sansui Award in 2004 for *Kal Ho Naa Ho*.

## सर्वोत्तम वेशभूषाकार

बीबी राय, सुशान्त पॉल

वेशभूषाकार बीबी राय तथा सुशान्त पॉल को रजतकमल तथा प्रत्येक को रूपये 5,000/- का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम वेशभूषाकार का पुरस्कार बीबी राय एवं सुशान्त पॉल को *चोखेर बाली* फिल्म में कला निर्देशन के साथ सामंजस्य बनाते हुए वेशभूषा द्वारा उस समय का आह्वान करने के लिए दिया गया है।

## **BEST COSTUME DESIGNER**

**BIBI RAY, SUSHANTA PAL**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000 each to Costume Designers **BIBI RAY and SUSANTA PAL**.

### **CITATION**

The award for the Best Costume Designer of 2003 is given to Bibi Ray and Susanta Pal in *Chokher Bali*, for evoking a period in harmony with the spirit of the Film's Art Direction.



## सुशान्त पॉल

सुशान्त पॉल कोलकाता में 2 दिसम्बर, 1972 में जन्मे। कोलकाता यूनिवर्सिटी से टेक्सटाइल डिजाइन में एम.बी.ए. पूरा करने से पहले ही सुशान्त ने विभिन्न बंगला फिल्मकारों के लिए वेशभूषाकार का काम शुरू कर दिया था। इन्होंने *बारीबली* (2000), तथागत भट्टाचार्य की *अन्तर्घात* (2001), ऋतुपर्णा घोष की *चोखेर बाली* (2003) और *रैनकोट* (2004) तथा *अन्तर्महल* (जो अभी रिलीज नहीं हुई) के लिए वेशभूषा सज्जित की है।

इन्होंने दूरदर्शन के लिए भी काम किया है, जिसमें सहारा टेलीविजन का बहुचर्चित धारावाहिक *साहिबी, बीबी गुलाम* शामिल है।



## बीबी राय

17 सितम्बर, 1938 को जन्मी बीबी राय ने दिल्ली से ओरिएण्टल आर्ट में पाँच वर्षीय डिप्लोमा किया है। ये लम्बे समय से बंगला फिल्मों से जुड़ी हैं। इन्होंने अपर्णा सेन की फिल्म *परोमा* (1985) के सेट्स और वेशभूषा सज्जित करने का काम किया है।

बीबी राय ने ऋतुपर्णा घोष का *उनिशे अप्रैल* (1995), *शुभो मुहूर्त* (2002), अपर्णा सेन की *जुगान्तो* (1997) और *पारोमीतार एक दिन* (1999) के लिए कला निर्देशन का भी काम किया है।

इन्होंने ऋतुपर्णा घोष की *रैनकोट* (2004) के लिए इन्टीरियर सेट डिजाइन का काम भी किया है। बीबी राय ने मदुरा कोट्स, लार्सन एण्ड टूब्रो, इंडियन ऑयल, एचपी, इंडियन एन्सुमीनियम तथा पार्क होटल के लिए सज्जा का काम भी किया है।

बीबी राय ने आन्तरिक साज सज्जा पर बंगला में *गृहसज्जा* नाम से एक पुस्तक भी लिखी है।



## SUSANTA PAL

Susanta Pal was born on December 2, 1972 in Kolkata, India.. Even before completing his M.V.A in Textile Design from Kolkata University in 2001, Pal had already been working with different Bengali filmmakers as a Costume Designer. He has designed costumes for *Bariwali* (2000) *Tathaghat* Bhattacharya's *Antarghat* (2001), Rituparno Ghosh's *Chokher Bali* (2003) and *Raincoat* (2004) and the yet to be released *Antarmahal*.

Pal has won several awards and scholarships for his outstanding work in Designing. He has also lent his expertise to TV serials, designing for the much publicized *Sahib, Bibi Ghulam* made for Sahara Television.

## BIBI RAY

Born on September 17, 1938, Bibi Ray finished a five-year Diploma Course in Oriental Art from Delhi. She has been associated with the Bengali films for long years. Her work as a set and costume designer includes well-known films like Aparna Sen's *Paroma* (1985).

Bibi Ray has also worked as Art Director on Rituparno Ghosh's *Unishe April* (1995), and *Shubho Muhurat* (2002), Aparna Sen's other prestigious projects *Yuganto* (1997) and *Paromiter Ek Din* (1999).

She has also done the Interior Set Design for Ghosh's latest film *Raincoat* (2004). Her other work includes Interior Designing for corporate houses like Madura Coats, Larsen and Toubro, Indian Oil, HP, Indian Aluminium and Park Hotel.

## सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

शंकर महादेवन, अल्लोयसिस मेन्डोन्सा, एहसान नूरानी

संगीत निर्देशक शंकर महादेवन, अल्लोयसिस मेन्डोन्सा और एहसान नूरानी प्रत्येक रजतकमल एवं रुपये 3,333/- का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का पुरस्कार शंकर महादेवन, अल्लोयसिस मेन्डोन्सा एवं एहसान नूरानी का हिन्दी फिल्म *कल हो ना हो* को संगीत की विभिन्न शैलियों द्वारा फिल्म की विषय वस्तु को समृद्ध करने के लिए दिया गया है।

## BEST MUSIC DIRECTION

**SHANKAR MAHADEVAN, ALOYSIS MENDONSA, EHSAN NOORANI**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 3,333 each to Music Directors (songs and background music score) **SHANKAR MAHADEVAN, ALOYSIS MENDONSA, EHSAN NOORANI**

### CITATION

The award for the Best Music Direction of 2003 is given to *Kal Ho Naa Ho*, for its wide range of styles and modes, enriching the themes of the film.

## शंकर महादेवन, अल्लोयसिस मेन्डोन्सा एवं एहसान नूरानी

शंकर महादेवन, अल्लोयसिस मेन्डोन्सा एवं एहसान नूरानी ने अपना त्रिक 1996 में बनाया जब (स्व0) मुकुल आनन्द ने इन्हें अपनी फिल्म *दस* के गीतों के लिए संगीत देने के लिए कहा। इन तीनों ने मिलकर उस फिल्म के सभी गीतों को संगीतबद्ध किया किन्तु मुकुल आनन्द के असामयिक निधन के कारण यह फिल्म पूरी न हो सकी।

तब से इन तीनों ने मिलकर *शूल*, *दिल्लीगी*, *भोपाल एक्सप्रेस*, *रॉकफोर्ड*, *मिशन कश्मीर*, *दिल चाहता है* और *लक्ष्य* फिल्म के लिए संगीत दिया है। *दिल चाहता है* का संगीत विशेष रूप से हिट हुआ। *दिल चाहता है* की सफलता के बाद तीनों ने *एक और एक ग्यारह*, *अरमान* और *कुछ ना कहो* पर काम किया।

रिलीज होने के एक वर्ष पश्चात् धर्मा प्रोडक्शन्स की *कल हो ना हो* का संगीत आज भी चाव से सुना जाता है।



## SHANKAR MAHADEVAN, EHSAN NOORANI and LOY MENDONSA

Shankar Mahadevan, Ehsaan Noorani and Loy Mendonsa formed their trio in 1996 when they were approached by the late Mukul Anand to compose a couple of songs for his film, *Dus*. The trio composed all the songs for the film but unfortunately the film never got made after Mukul Anand's untimely death in 1997.

The three have since then composed for films like *Shool*, *Dillagi*, *Bhopal Express*, *Rockford*, *Mission Kashmir*, *Dil Chahta Hai* and *Lakshya*. The music of *Dil Chahta Hai* (DCH) particularly, became a rage when released with its unique and distinct melodies. The trio signed on many big banners after the success of DCH and these included *Ek Aur Ek Gyaarah*, *Armaan* and *Kuch Na Kaho*.

The trio then created waves with what can be arguably called their best soundtrack to date with Dharma Productions, *Kal Ho Naa Ho*, which continues to rock the charts even today – more than a year after its release.

## सर्वोत्तम गीतकार

सुददला अशोक तेजा

गीतकार सुददला अशोक तेजा को रजतकमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम गीतकार का पुरस्कार सुददला अशोक तेजा को तेलुगु फिल्म *टैगोर* में श्रीश्री की कविता ननुसैतम् को समकालीन परिप्रेक्ष्य में रचने के लिए दिया गया है।

## BEST LYRICS

### SUDDALA ASHOK TEJA

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to Lyricist **SUDDALA ASHOK TEJA**

### CITATION

The award for the Best Lyricist of 2003 is given to Suddala Ashok Teja for the Telugu film *Tagore*, for adapting SriSri's poem *Nenusaitam* to a contemporary context.



## सुद्धला अशोक तेजा

ये सुद्धला और मेटपल्ली में जन्मे तथा बड़े हुए। तेलुगु फिल्मों में आने से पूर्व तेजा मेटपल्ली में अध्यापक थे। पिता, प्रसिद्ध कवि हनुमन्त (*मा भूमि* फिल्म में जिनका गीत *ओ पालबुग्गा जीतागा* आज भी याद किया जाता है) की मृत्यु के पश्चात् परिवार की आर्थिक समस्याओं को देखते हुए अध्यापन के अतिरिक्त भी कुछ करने की आवश्यकता थी।

ये बचपन से गीत लिखते आ रहे थे और अच्छे गीत लिख लेते थे, अतः इन्होंने अपने भतीजे उत्तेज जो पहले से ही फिल्मों में काम कर रहे थे, मदद करने के लिए कहा। इस तरह इन्होंने 1994 में पहली बार *नमस्ते अन्ना* फिल्म के लिए गीत लिखे। (यह गीत के श्रीनिवास राव तथा तेनीकला भरनी पर फिल्माया गया था और तेलंगाना बोली में लिखा गया था)। इन्होंने अत्यंत सफल फिल्म *ओसे रामुलम्मा* (1997) तथा *निन्ने पेल्ले दत्ता* (1997) के लिए गीत लिखे।

अशोक तेजा ने दर्शन शास्त्र में एम. ए. किया है तथा अब तक विभिन्न फिल्मों के लिए एक हजार से ज्यादा गीत लिखे हैं। इन्हें अब तक *दलम* (1996) के लिए मद्रास कला सागर, *ओसे रामुलम्मा* के लिए मनस्विनी आत्रेय स्वर्णपदक तथा *कांटे कुतुरने कनु* (1998) के लिए आंध्रप्रदेश सरकार का नन्दी पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

यह इनका पहला राष्ट्रीय पुरस्कार है।



## SUDDALA ASHOK TEJA

He was born and brought up in Suddala and Metpalli areas. Prior to joining the Telugu film industry, Ashok Teja was a teacher in Metpalli. After his father, the well-known poet Hanumantha (whose *O paalabugga jeetaagaa Daa* from the film *Maa Bhoomi* is still remembered) expired, Ashok Teja needed to do something more to make both the ends meet. Teaching alone could not help him tide over the financial crisis that the family was going through.

Since he was well versed with lyrics (as he had been lyric-writing ever since he was a child), he asked his nephew, Uttej, who was already in films to help out. That is how his first film, *Namaste Anna* (1994) came about. (The song was picturised on K. Srinivas Rao and Tanikella Bharani and was written in the Telegana accent). He also wrote lyrics for the hugely successful *Osey Ramulamma* in 1997 and *Ninne Pelley Dataa* in the same year.

Ashok Teja has done his Masters in Philosophy and has penned over a 1000 songs for various films. He has worked on several films and has won the Madras Kala Sagar for *Dalam* (1996), Manaswini Attreya Goldmedal for *Osey Ramulamma* (1997) and the Nandi Govt. of Andhra Pradesh Award for *Kante Katurune Kanu* (1998).

This is his first National Award.

## निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

मनोज बाजपेयी और भालो थेको (बंगला)

अभिनेता मनोज बाजपेयी को रजतकमल एवं रुपये 12,500/- का नकद पुरस्कार  
और

निर्माता रूपकथा को रजतकमल एवं रुपये 6,250/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक गौतम हलदर को रजतकमल एवं रुपये 6,250/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का निर्णायक मंडल का पुरस्कार अभिनेता मनोज बाजपेई को हिन्दी फिल्म *पिंजर* में एक ऐसे व्यक्ति के अभिनय के लिए दिया गया है जो अपने समुदाय के दबाव और पत्नी के प्रति प्रेम की दुविधा में फँसा है।

और

वर्ष 2003 का निर्णायक मंडल का पुरस्कार बंगला फिल्म *भालो थेको* को सिनेमा की नई विधा को दक्षतापूर्वक अंकित करने लिए दिया गया है।

## SPECIAL JURY AWARD

**MANOJ BAJPAI and BHALO THEKO (Bengali)**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 12,500 each to Actor **MANOJ BAJPAI**

and

**RAJAT KAMAL** and cash prize of Rs. 12,500 each to the Bengali feature film **BHALO THEKO**

### CITATION

The Special Jury Award of 2003 is given to the actor Manoj Bajpai for *Pinjar* for his portrayal of the dilemma of a man caught between the diktats of his community and love for his wife.

and

The Special Jury Award of 2003 is given to the film *Bhalo Theko* for its quiet but masterful foray into the new cinematic idioms.

## मनोज वाजपेयी

मनोज वाजपेयी पंद्रह वर्षों से रंगमंच से जुड़े थे और इन्होंने सुप्रसिद्ध रंगमंच के कलाकार बैरी जॉन से प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

इनकी फिल्मों में राम गोपाल वर्मा की *सत्या* (मुम्बई अन्डरवर्ल्ड पर आधारित), श्याम बेनेगल की *जुबेदा*, ई. निवास की *शूल*, जे. पी. दत्ता की *एल. ओ. सी.-कारगिल* और वर्मा की अन्य फिल्में *कौन* तथा *रोड* शामिल हैं।

राकेश मेहरा की *अक्स*, जिसमें इन्होंने अमिताभ बच्चन के साथ अभिनय किया, पूजा भट्ट की *तमन्ना* और *दिल पे मत ले यार* में भी बाजपेयी का अभिनय सराहा गया।

## गौतम हलदर

1957 में गौतम हलदर ने तुलनात्मक साहित्य में एम ए किया। इन्हें रचनात्मक संतुष्टि फोटोग्राफी में मिली। इन्होंने भारत में अचल चित्रों की कई प्रदर्शनियाँ लगाईं तथा इन्हें निरसहाय बच्चों के लिए काम करना अच्छा लगता है। इन्हें शास्त्रीय संगीत में रूचि है तथा ये स्वयं एक अच्छे गायक भी हैं। ये लिखते भी हैं। 1995 में इनके पहले वृत्तचित्र *ए स्टोरी ऑफ इंटीग्रेशन* को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला तथा भारतीय पैनोरमा में शामिल की गई। महान सरोदवादक अमजद अली खॉं पर इनके वृत्तचित्र *स्ट्रिंग्स फॉर फ्रीडम* को भी भारतीय पैनोरमा 1999 में दिखाया गया। आजकल ये सुप्रसिद्ध गायक अजय चक्रवर्ती पर एक वृत्तचित्र बना रहे हैं।

*भालो थेको* इनकी पहली फीचर फिल्म है।



## MANOJ BAJPAI

Was involved in theatre for more than 15 years and had the honour of being trained under the renowned theatre personality Barry John.

His feature film work includes the Ram Gopal Varma directed *Satya* (the hugely successful hit was based on Mumbai's underworld), *Zubeidaa* by Shyam Benegal, E.Niwas' *Shool*, J.P. Dutta's *LOC - Kargil*, and other Varma productions like *Kaun* and *Road*. Bajpai was also recognized for his performances in Rakesh Mehra's *Aks* where he co-starred with Amitabh Bachchan, Pooja Bhatt's *Tamanna* and *Dil Pe Mat Le Yaar*.

## GAUTAM HALDAR

He was born in 1957. Obtained his Masters degree in Comparative Literature and found his creative pursuits in Photography. He has several still photography exhibitions to his credit in India and loves working with destitute children.

Haldar is fond of classical music and is a singer too. He also has a flair for writing. His maiden documentary film, *A Story of Integration* won the National Award in 1995 and was selected for the Indian Panorama the same year. Another docu-feature on the living legend Ustad Amjad Ali Khan *Strings for Freedom* was also selected in the International Film Festival of India 1999. He is currently working on a docu-feature on the renowned vocalist Pandit Ajoy Chakraborty.

*Bhalo Theko* is his debut feature film.

## सर्वोत्तम विशेष प्रभाव

प्रभाव सृजक डिजीटल आर्ट मीडिया को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार वर्ष 2003 का

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का विशेष प्रभाव सृजन का पुरस्कार *डिजीटल आर्ट मीडिया* को हिन्दी फिल्म *कोई मिल गया* में कल्पना में विशेष प्रभाव को समायोजित करने के लिए दिया गया है।

## **BEST SPECIAL EFFECTS**

### **DIGITAL ART MEDIA**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to the Creators **DIGITAL ART MEDIA.**

### **CITATION**

The Award for the Best Special Effects of 2003 is given to Digital Art Media for Hindi Feature Film *Koi... Mil Gaya* for its apt incorporation of special effects in its depiction of fantasy.



## डिजीटल आर्ट मीडिया

डिजीटल आर्ट मीडिया कम्प्यूटाइन विन्फोसिस्टम्स लिमिटेड (सी डब्ल्यू एल ग्लोबल) की बंगलौर स्थित एन्टरटेनमेंट सर्विसेज शाखा है। सी डब्ल्यू एल ग्लोबल ने एस एस दाहिया एवं आविष्कार दाहिया के साथ भारत में 1994 में काम करना शुरू किया। आविष्कार दाहिया ने सी डब्ल्यू एल ग्लोबल का रचनात्मक कार्यभार संभाला। अभी तक डिजीटल आर्ट मीडिया 70 अन्तर्राष्ट्रीय फिल्मों पर काम कर चुका है, जैसे हालीवुड की सफल फिल्म *इंडिपेंडेंस डे* (जिसके लिए इन्हें आस्कर में नामित किया गया) *गॉडजिला* तथा *स्वर्डफिश* इत्यादि। डी ए एम को *स्टार्टर्कडीपस्पेसनाइन* के लिए एमी पुरस्कार तथा *देवदास* और *ब्याएज़* के लिए सीगेट टेक्नीकल एवार्ड प्राप्त हो चुका है। इन्हें *कोई मिल गया* के लिए स्क्रीन अवार्ड, जी सिने अवार्ड, इंटरनेशनल इंडियन फिल्म अकादमी पुरस्कार तथा अप्सरा प्रोड्यूसर्स गिल्ड पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

डी ए एम ने अभी तक 30 टेलीविजन धारावाहिकों, हिन्दी फिल्म *देवदास* तथा अनुराग कश्यप की ब्लैक फ्राइड (अभी रिलीज नहीं) के लिए काम किया है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर डिजनी, यूनिवर्सल स्टुडियो, मीरामैक्स, न्यू लाइन सिनेमा, 20वीं सेन्चुरी फॉक्स, वार्नर ब्रदर्स, एच बी ओ तथा एम जी एम जैसे दिग्गजों के लिए काम कर रहे हैं।



## DIGITAL ART MEDIA

Digital Art Media (DAM) is the Entertainment Services arm of Compudyne Winfosystems Limited (CWL Global) based in Bangalore, India. CWL Global commenced operations in the year 1994 with a team of two, S S Dahiya and Avishkar Dahiya. The latter was instrumental in setting-up CWL Global's creative division.

Till date, Digital Art Media has worked on 70 international productions including Hollywood blockbusters like *Independence Day* (for which they it also received an Oscar nomination), *Godzilla* and *Swordfish* among others. They have won the Emmy Award for *Star Trek Deep Space Nine* and won the Seagate Technical Awards for *Devdas* and *Boys*.

They have won several awards including the Screen Award, the Zee Cine Award, the International Indian Film Academy Award, the Apsara Producers Guild Award for their work in *Koi... Mil Gaya*.

DAM has also to its credit over 30 television series, commercials and other Hindi films like *Devdas* and the yet to be released Anurag Kashyap's *Black Friday*. Their international clientele includes Disney, Universal Studios, Miramax, New Line Cinema, 20th Century Fox, Warner Brothers, HBO and MGM

## सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन

फराह खान

नृत्य निर्देशिका फराह खान को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन का पुरस्कार फराह खान की हिन्दी फिल्म *कोई मिल गया में मैं इधर चला, मैं उधर चला* गीत को विभिन्न नृत्य शैलियों को संगीत के साथ संयोजित किया है।

## BEST CHOREOGRAPHY

**FARAH KHAN**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to the choreographer, **FARAH KHAN**

### CITATION

The Award for Best Choreography of 2003 is given to Farah Khan for the song, *Idhar Chala, Mein Udhar Chala* in the film *Koi... Mil Gaya* for its seamless weaving of different dance styles in the best traditions of the musical.

## फराह खान

9 जनवरी 1965 को जन्मी फराह ने सेंट थेरेसा कॉन्वेंट स्कूल, मुम्बई तथा सेंट जेवियर कालेज मुम्बई से शिक्षा प्राप्त की। 1989 में मंसूर खान की *जो जीता वो ही सिकन्दर* के सभी गानों के नृत्य निर्देशन के साथ फराह ने फिल्मी दुनिया में कदम रखा। उसके बाद विधु विनोद चोपड़ा की *1942: ए लव स्टोरी*, आदित्य चोपड़ा की *दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे*, करण जोहर की *कुछ कुछ होता है*, कभी खुशी कभी गम, अजीज मिर्जा की *चलते चलते अशोका*, निखिल अडवाणी की *कल हो ना हो* तथा *मोहब्बतें* के लिए नृत्य निर्देशन किया है।



इन्हें अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें *विरासात*, *दिल से*, *कहो ना प्यार है*, *दिल चाहता है* और *कोई मिल गया* के लिए फिल्म फेयर पुरस्कार शामिल हैं। एन्ड्रयू लॉयड वेबर की फिल्म *बॉम्बे ड्रीम* का नृत्य निर्देशन करने वाली तथा इसी के लिए टोनी अवार्ड्स के लिए नामित होने वाली यह पहली भारतीय हैं।

मीरा नायर की *मानसून वेडिंग* में नृत्य निर्देशन के लिए इन्हें अमेरिकन कोरियोग्राफर्स एसोसिएशन द्वारा भी नामित किया गया। फराह ने मीरा नायर की नवीनतम फिल्म *वेनिटी फेयर* के लिए भी नृत्य संयोजन किया है। *मैं हूँ ना* निर्देशन के रूप में इनका पहला प्रयास था। यह फिल्म अत्यंत सफल रही। इस फिल्म के लिए कहानी, पटकथा और नृत्य निर्देशन फराह ने स्वयं किया है।

## FARAH KHAN

Born on 9<sup>th</sup> January, 1965, Farah completed her schooling from St. Theresa's Convent, Mumbai and her college education from St. Xavier's College, Mumbai. She joined films in 1989 and her first project was Mansoor Khan's *Jo Jeeta Wohi Sikander* for which Farah choreographed all the songs. She subsequently worked as Choreographer on Vidhu Vinod Chopra's *1942: A Love Story*, Aditya Chopra's *Dilwale Dulhaniya Le Jayenge*, Karan Johar's *Kuch Kuch Hota Hai*, *Kabhi Khushi Kabhi Gham*, Aziz Mirza's *Chalte Chalte*, *Asoka*, Nikhil Advani's *Kal Ho Naa Ho* and *Mohabaatein*.

She has won several awards including Filmfare Awards for the following films: *Virasaat*, *Dil Se*, *Kaho Na Pyaar Hai*, *Dil Chahta Hai* and *Koi...Mil Gaya*. She is the first Indian choreographer to work in an Andrew Llyod Weber's West End Production of *Bombay Dreams* and is the first Indian to be nominated for the Prestigious TONY Awards for *Bombay Dreams*.

She has also been nominated by the American Choerographer's Association for the film *Monsoon Wedding* by Mira Nair and has choreographed Nair's latest, *Vanity Fair* starring Reese Witherspoon.

Her first directorial venture *Main Hoon Na* for which she had also penned the story, screenplay and choreographed the songs was declared a hit.

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल प्रत्येक भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र

सर्वोत्तम असमिया फीचर फिल्म  
आकाशीतोरार कथारे

निर्मात्री संगीता तामुली को रजतकमल एवं रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशिका मंजु बोरा को रजतकमल एवं रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम असमिया फिल्म का पुरस्कार *आकाशीतोरार कथारे* को नारी द्वारा अपनी सांस्कृतिक विरासत की खोज तथा उसकी पहचान खो जाने के द्वन्द्व को सन्निहित करने के लिए दिया गया है।

## **BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES SPECIFIED IN THE SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION**

### **BEST FEATURE FILM in ASSAMESE AAKSHITORAARKATHARE**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Producer **SANGEETA TAMULI**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Director **MANJU BORAH**

#### **CITATION**

The Award for the Best Feature Film in Assamese of 2003 is given to *Aakashitoraar Kathare*, for its juxtaposition of a woman's search for her cultural heritage and her loss of identity.



## संगीता तामुली

गुवाहाटी यूनिवर्सिटी से 1989-90 में ग्रेजुएशन करने के पश्चात् संगीता तामुली ने डब्ल्यू टी टी आई, दिल्ली से 1992 में मास कम्युनिकेशन, टी वी एण्ड रेडियो प्रोडक्शन तथा प्रिंट मीडिया में डिप्लोमा किया। दिल्ली के ला फिल्म यूनिवर्स के लिए इन्होंने अनेक वृत्त चित्रों, फीचर फिल्मों और दूरदर्शन कार्यक्रमों के लिए सहायक निर्देशन का कार्य किया।

यं *आकाशीतारा कथारे* की कार्यकारी निर्मात्री हैं, जो ढाका अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 2004 में दिखाई जा चुकी है। इस फिल्म को यहाँ ब्यूअर्स बेस्ट फिल्म का पुरस्कार मिला। इसे ज्योतिरूप ऑयल मीडिया ग्रुप का सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार भी मिल चुका है।

## मंजु बोरा

गुवाहाटी यूनिवर्सिटी से दर्शन शास्त्र में एम ए मंजु बोरा उत्तर पूर्वी भारत की संस्कृति एवं जन जातियों की प्रकृति पर कहानियां एवं लेख नियमित रूप से लिखती रही हैं। इनकी लघु कहानियों का संकलन *बीवोक्सना मैन* प्रकाशित हो चुका है।

इन्होंने 1999 में असमिया फीचर फिल्म *बैभब* का निर्देशन किया जिसे ढाका अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वोत्तम एशियाई फिल्म का पुरस्कार मिला। इसी फिल्म के लिए मंजु बोरा को चेन्नई में सर्वोत्तम निर्देशन का गोलापुड़ी श्रीनिवास पुरस्कार (1999) भी प्राप्त हुआ। 47वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जूरी ने बैभब फिल्म का विशेष उल्लेख किया था।



## SANGEETA TAMULI

Sangeeta Tamuli completed her under-graduation from Guwahati University in 1989-90. She went on to do her Diploma in Mass Communication, TV and Radio Production and Print Media from WTTI, New Delhi in 1992.

She has also directed documentaries for various agencies and her themes have ranged from mushroom development in Arunachal Pradesh to victims of terrorism and victims of AIDS.

She is the Executive Producer for *Aakashitaraar Kathare*, which has been screened at various film festivals including Dhaka International Film Festival in January 2004 where it won the Viewer's Best Film.

## MANJU BORAH

An MA in Philosophy from Guwahati University, Manju Borah has been a regular writer of short stories and articles on diverse cultural customs and ethos of small ethnic groups of North Eastern India. She has also has to her credit a published collection of Short Stories *Biboxana Man* and has directed several tele-films.

She has directed *Baibhab* a feature film in Assamese in 1999, which received Best Film in Asia Award at the Dhaka International Film Festival in 2000. The same film also fetched for Borah the Gollapudi Srinivasa Award as the Best New Director in India in 1999 in Chennai.



## सर्वोत्तम बंगला फिल्म

### चोखेर बाली

निर्माता श्री वेंकटेश फिल्मस को रजतकमल तथा रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशन ऋतुपर्णो घोष को रजतकमल एवं रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

#### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम बंगला फिल्म का पुरस्कार *चोखेर बाली* को मनोभावों के सांगीतीय चित्रण एवं सामाजिक मानदण्डों तथा बन्धनों को तोड़ने के लिए दिया गया है।

## **BEST FEATURE FILM IN BENGALI**

### **CHOKHER BALI**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Producer **SHREE VENKATESH FILMS**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Director **RITUPARNO GHOSH**

#### **CITATION**

The Award for the Best Feature Film in Bengali of 2003 is given to *Chokher Bali*, for operatic play of passions, and for breaking social norms and taboos.

## मनो मूर्ति

मनो मूर्ति स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, कैलीफोर्निया से कम्प्यूटर विज्ञान में पोस्ट-ग्रेजुएट हैं। किन्तु इन्हें हमेशा संगीत की धुन रही और इन्होंने तीन कन्नड़ फिल्मों के लिए संगीत दिया। इन्होंने स्वतंत्र रूप से कई गैर फिल्मी संगीत एल्बम का निर्माण भी किया।

इन्होंने *अमेरिका! अमेरिका* और *नाना प्रीतियो हुडुगे* फिल्मों का संगीत निर्देशन किया है, इन दोनों फिल्मों का निर्देशन नागातिहल्ली चन्द्रशेखर ने किया है। *प्रीति प्रेमा प्रणय* का संगीत निर्देशन भी मनो मूर्ति ने ही किया है।



## MANO MURTHY

Mano Murthy is a post-graduate from Stanford University, California in Computer Science. His passion however remains music and he has composed for three Kannada feature films as also produced independent non-film music albums. The films he has been music director for include *America! America!* and *Nanna Preethiya Huduge* – both directed by Nagathihalli Chandrashekhar, and *Preethi Prema Pranaya*.

Murthy received his training as a musician under the tutelage of Ustad Zakir Hussain and private instruction in Western Classical Musical theory from Jerry Gerber, the film composer based in California.

## कविता लंकेश

कर्नाटक में जन्मी कविता सुप्रसिद्ध कन्नड़ निर्देशक पी. लंकेश की पुत्री हैं। इन्होंने शुरू में बच्चों पर एक वृत्तचित्र बनाया। फिल्मों में रूचि 1994 बाजार फिल्मस नाम से एक दृश्य-श्रव्य निर्माण केंद्र खोलने में परिणत हुई और उसके बैनर तले 30 वृत्तचित्रों और चार फीचर फिल्मों का निर्माण किया है।

*देवीरि* इनकी पहली फीचर फिल्म थी जिसे 12 राज्य पुरस्कार, राष्ट्रीय पुरस्कार तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले। 2002 में इनकी फिल्म *बिम्ब* को सर्वोत्तम पटकथा लेखन पुरस्कार और सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार मिले।



## KAVITHA LANKESH

Born in Karnataka, Kavitha Lankesh's foray into films began with a documentary on a children's nature camp. Under her own production house banner *Bazaar* Films she has scripted, produced and directed over 30 documentaries, a dozen corporate films and four feature films. She made her debut as director with *Deveeri*, which went on to win 12 State and National and International Awards. In 2002, Lankesh's film *Bimba* won the Best Screenplay Award and the Best Child Artist award. The post-graduate in English Literature from Bangalore University is working on scripting and directing 15 new tele-films of *Malgudi Days* and feature film *Man-Eater of Malgudi* in Hindi based on R.K. Narayan's works.

## सर्वोत्तम मलयालम फिल्म

### सबलम्

निर्माता अनिल थॉमस को रजतकमल एवं रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक अशोक आर नाथ को रजतकमल एवं रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम मलयालम फिल्म का पुरस्कार *सबलम्* को एक वृद्ध दम्पती के साथ और एकाकीपन के भावपूर्ण चित्रण के लिए दिया गया है।

## **BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM**

### **SABHALAM**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Producer **ANIL THOMAS**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Director **ASOK. R. NATH**

### **CITATION**

The Award for the Best Feature Film in Malayalam of 2003 is given to *Sabhalam* for its sensitive portrayal of an old couple in their loneliness and togetherness.



## अदिति देशपांडे

अदिति देशपांडे ने पाँच वर्ष पूर्व माई ग्रुप प्रॉडक्शन का गठन किया। इन्होंने दो मराठी धारावाहिकों *पाऊस येता येता* तथा *अथांग* की कार्यकारी निर्मात्री के रूप में काम किया। देशपांडे मराठी रंगमंच से अभिनेत्री के रूप में 19 वर्षों से जुड़ी हुई हैं। इनके नाटकों में पंडित सत्यदेव दुबे का *सावल्या* प्रोफेसर वामन केंद्रे का *झुलवा* और *तीन पैश्यांचा तमाशा* तथा डा. विजय केंकरे का *संगीत पूर्णावतार* शामिल हैं।

इन्होंने *नॉट ओनली मिसेज राउत* में मुख्य अभिनेत्री सहित कई फिल्मों में अभिनय भी किया है। इनकी अन्य फिल्में हैं—परेश कामदार की *टुन्नू की टीना* तथा सई परांजपे की *पपीहा* एवं *साज*।

## गजेन्द्र अहिरे

*नॉट आनली मिसेज राउत* के निर्देशक गजेन्द्र अहिरे पटकथा लेखक तथा गीतकार हैं। इन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया है। इन्होंने मराठी के कई नाटक जैसे *ऊच माझा झोका गा*, *आईच घर उन्हाच* तथा *जन्मसिद्धा* आदि लिखे हैं। आईच घर उन्हाच के लिए इन्हें दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार भी मिला है। अहिरे ने विभिन्न भाषाओं में 21 धारावाहिक लिखे और अकेले ही 1500 कड़ियां लिखने का कीर्तिमान स्थापित किया है। इन्होंने *पाऊस येता येता* तथा *झाले मोकले आकाश* का निर्देशन किया है। इसके लिए इन्हें महाराष्ट्र टाइम्स सम्मान प्राप्त हुआ। गजेन्द्र अभी तक चार फीचर फिल्मों *कृष्णा काठची मीरा*, *विट्ठल! विट्ठल* और *पांढर* का निर्देशन कर चुके हैं।



## ADITE DESHPANDE

'My Group' Production was formed by Aditi Deshpande five years back. She began as an executive producer for two Marathi television serials, namely *Paus Yeta Yeta*, and *Athang*.

Deshpande's repertoire includes 19 years of experimental Marathi theatre as an actress. She has to her credit well-known plays like *Savlya* by Pt. Satyadev Dubey, *Zulwa* by Prof. Waman Kendre, *Sangeet Pooranvatar* by Dr. Vijay Kenkre and *Teen Paishyacha Tamasha* by Prof. Waman Kendre. She has also acted in films, including playing the lead role in *Not Only Mrs. Raut*. Her credits include Paresh Kamdar's *Tunnu Ki Tina* and *Papecha* and *Saaz* by Sai Paranjpe.

## GAJENDRE AHIRE

A screenplay writer and lyricist by profession, the Director of *Not Only Mrs. Raut*, Gajendra Ahire has done his Masters in English Literature. He has written prominent plays in Marathi – including *Unch Mazha Zhoka Ga*, *Aaicha Ghar Unhacha* and *Janamsidha*. In fact, *Aaicha...* has won the Dinanath Mangeshkar Award. Ahire has written 21 serials in different languages and holds a record for writing 1500 episodes as a single writer for television serials. He has directed *Paus Yeta Yeta* and *Zhale Mokale Akash* which won for him the Maharashtra Times Samman. He has so far directed four feature films, *Krishna Kathchi Meera*, *Vithal!*, and *Pandhar*.

## सर्वोत्तम उड़िया फिल्म

अ आकारे आ

निर्माता सुभास दास को रजतकमल एवं रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशक सुभास दास को रजतकमल एवं रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम उड़िया फिल्म का पुरस्कार *अ आकारे आ* को शिक्षातंत्र में सुधार की भावप्रवण पुकार के लिए दिया गया है।

## **BEST FEATURE FILM IN ORIYA**

### **AW AKKARE AA**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Producer **SUBAS DAS**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Director **SUBAS DAS**

### **CITATION**

The Award for the Best Feature Film in Oriya of 2003 is given to *Aw Akkare Aa* for a passionate call for reforms in the present education system.

## सुभास दास

भूविज्ञान में एम.एस.सी. सुभास दास फिल्मी दुनिया में भूल से ही आ गये। ये 16 वर्षों से विख्यात उडिया फिल्मकारों के साथ सहायक निर्माता/निर्देशक के रूप में काम कर रहे हैं। इन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय मुद्दों पर कुछ वृत्त-चित्र तथा दूरदर्शन के लिए धारावाहिक बनाए हैं।

इन्होंने बढ़ती जनसंख्या की समस्या पर आधारित वूडेंड मून वृत्त-चित्र का निर्देशन एवं पटकथा लेखन किया जो मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के वीडियो प्रतियोगिता खंड में चुनी गई। उसी वर्ष यह फिल्म जापान के इमेज फोरम फेस्टीवल के लिए भी चुनी गई।

इन्होंने भारतीय बाल चित्र समीति के लिए एक कार्टून फिल्म *इट हैप्स ओनली इन माइ स्कूल* (2002) का निर्देशन भी किया है।

*अ आकारे आ* निर्माता, पटकथा लेखक तथा निर्देशक के रूप में इनकी पहली फीचर फिल्म है। यह फिल्म जमशेदपुर अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह तथा केरल सरकार द्वारा भी आमंत्रित की गई है।



## SUBAS DAS

With an M.Sc in Geology, Subas Das stepped into the world of films quite by mistake. He has worked with renowned filmmakers of Orissa as an associate director/producer for the last 16 years. He has to his credit a few documentaries, short films on different national issues and television serials for Doordarshan.

He scripted and directed *Wounded Moon*, a short documentary on the population growth in the country, which was selected for Mumbai International Film Festival 2000 in the Video Competition Section. The film was also selected for Japan's Image Forum Festival the same year.

He has also directed *It Happens Only in My School* (2002), an animation film for Childrens' Film Society of India.

*Aw Akkare Aa* is his first feature film as producer, script-writer and director. It has been invited for screenings at the International Film Festival in Jamshedpur and by the Kerala Government.

## सर्वोत्तम तमिल फिल्म

### इयरकई

निर्माता प्रिज्म फिल्मस को रजत कमल एवं रू० 20000 का नकद पुरस्कार

निर्देशक एम. पी. झनानाथन को रजत कमल एवं रू० 20000 का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम तमिल फिल्म का पुरस्कार *इयरकई* को एक प्रेम कहानी के सुन्दर एवं अदभुत चित्रण के लिए दिया गया है।

## BEST FEATURE FILM IN TAMIL

### EYARKAI

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 each to the Producer **Prisem Films**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Director **S. P. JHANANATHAN**

### CITATION

The Award for the Best Feature Film in Tamil of 2003 is given to *Eyarkai* for a rich visual portrayal of a love story set against a unique canvas.



## एस. पी. झनानाथन

एस. पी. झनानाथन तमिल फिल्मों के लिए 15 वर्षों से सहायक/सह निर्देशक के रूप में काम कर रहे हैं। *सोलाइकुइल* से शुरुआत करके इन्होंने *नलया सीथी* फिल्म के लिए जी. बी. विजय के सहायक निर्देशक का काम किया। ये साउथ इंडियन फिल्म चेम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष रह चुके के. आर. की की फिल्मों *वनजा गिरिजा*, *अलेक्जेंडर*, *ईरामणा रोजावे* तथा अन्य के सहायक निर्देशक भी रह चुके हैं।

ये महान निर्देशक भीम सिंह के पुत्र बी. लेनिन के सहायक निर्देशक भी रह चुके हैं। इन्होंने तमिल फिल्म उद्योग की पत्रिका *नक्करन* के लिए 35 सप्ताह तक कॉलम भी लिखा है।



## S. P. JHANANATHAN

S.P. Jhananathan has been working as assistant/associate director for over 15 years in the Tamil film industry. He began his career with Solai Kulil and later was Associate Director under G. B. Vijay for his film *Nalaya Seithi*. He has also assisted director K.R. who was also the President of South Indian Film Chamber of Commerce, for films like *Vanaja Girija*, *Alexander*, *Eeramana Rojave* and others.

He later worked as Associate Director under B. Lenin, son of the yesteryears great director Bhim Singh. He has had a regular column on the Tamil Film Industry in *Cinema Nijama* in the magazine *Nakkeran* for 35 weeks.

## सर्वोत्तम तेलुगु फिल्म

### एइते

निर्माता गुन्नम् गंगा राजु को रजत कमल एवं रु. 20000 का नकद पुरस्कार  
निर्देशक चंद्रशेखर येलेति को रजत कमल एवं रु. 20000 का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम तेलुगु फिल्म का पुरस्कार *एइते* को युवा वर्ग की कुंठा को दर्शाने तथा उसके समाधान के प्रति सकारात्मक सोच के लिए दिया गया है। फिल्म में यह प्रतिपादित किया गया है कि यदि युवाशक्ति को संगठित कर लिया जाए तो वे समाज के लिए आदर्श बन सकते हैं।

## **BEST FEATURE FILM IN TELUGU**

### **AITHE**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the producer **GUNNAM GANGA RAJU**  
Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the director **CHANDRASHEKHAR YELETI**

### **CITATION**

The Award for the Best Feature Film in Telugu of 2003 is given to *Aithe* for its depiction of frustration in the youth, solving it through a positive approach almost making the characters role models and the suggestion that if their energies are channelised, they can turn into role models.

## गुन्नम् गंगा राजु

वर्ष 2000 में जस्ट येलो मीडिया बनाने के साथ गंगा राजु तथा वेंकट ने फिल्म एवं टेलीविजन निर्माण में एक साथ काम शुरू किया। पहला प्रयास विभिन्न 100 कहानियों पर आधारित धारावाहिक *अमृतम्* था जो अपनी एक हजार कड़ियाँ पूरी कर चुका है। और उसके बाद *एइते* जो हिन्दी में *पचास लाख* तथा तमिल में नाम शीर्षकों से पुनः बन चुकी है। इन्होंने 1995 में *लिटल सोल्जर्स* फीचर फिल्म का पटकथा लेखन तथा निर्देशन किया जिसे एक राष्ट्रीय पुरस्कार तथा ग्यारह नन्दी पुरस्कार प्राप्त हुए।



## चन्द्रशेखर येलेती

इन्होंने गुन्नम् गंगा राजु की *लिटल सोल्जर्स* (1995) के सहायक निर्माता के रूप में काम किया। आंध्रप्रदेश सरकार के लिए विज्ञापन बनाने के कार्य से वे निर्देशन के क्षेत्र में उतरे। *अमृतम्*, जस्ट येलो मीडिया का धारावाहिक इनका अगला प्रयास था।

*एइते* का लेखन एवं निर्देशन फीचर फिल्मों में इनका पहला प्रयास है।



## GUNNAM GANGA RAJU

Just Yellow Media came into existence in the year 2000 when Ganga Raju and Venkat joined hands to produce for film and television. Their venture was *Amrutham*, a weekly soap on TV which has already completed 1000 episodes. The next in line was the Telugu feature film, *Aithe*. It has been remade in Hindi as *Pachaas Lakh* and in Tamil as *Naam*.

Dr. Venkat is a General Surgeon, based in London, while Ganga Raju started off as a creative head in an advertising agency. He has written and directed a Telugu feature film called *Little Soldiers* which has won 11 Nandi Awards (given by the State government) and One National Award.

## CHANDRASHEKHAR YELETI

He began his career as a production assistant on the film *Little Soldiers* which was written and directed by Gunnam Ganga Raju in 1995. His first forays into direction led him to make ad films for the Government of Andhra Pradesh. His next venture was *Amrutham*, a comic television serial for the media company Just Yellow.

He followed it up by writing and directing his first feature film *Aithe*.

सर्विधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से इतर भाषाओं में सर्वोत्तम कथाचित्र

सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म

डांस लाइक ए मैन

निर्माता राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम को रजत कमल एवं रु. 20000 का नकद पुरस्कार

निर्देशक पामेला रूक्स को रजत कमल एवं रु. 20000 का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 की सर्वोत्तम अंग्रेजी फिल्म का पुरस्कार *डांस लाइक ए मैन* को रचनात्मकता एवं लिंग भेद जैसे मुद्दों को दर्शाने के लिए दिया गया है।

**BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES OTHER THAN THOSE SPECIFIED IN SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION**

**BEST FEATURE FILM IN ENGLISH  
DANCE LIKE A MAN**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Producer **National Film Development Corporation Ltd.**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Director **PAMELA ROOKS**

**CITATION**

The award for the Best Feature film in English language of 2003 is given to *Dance Like A Man*, a human drama that engages issues of creativity and gender dynamics.



## एन एफ डी सी

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एन एफ डी सी) की स्थापना 1975 में हुई। इसका मुख्य उद्देश्य अच्छे सिनेमा का विकास एवं उन्नयन है। 1980 में पुनर्गठित एन एफ डी सी सिनेमा की गुणवत्ता, इसके तकनीकी तथा कलात्मक विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने अब तक 300 से अधिक फीचर फिल्मों, लघु फिल्मों वृत्तचित्रों इत्यादि का निर्माण / सह निर्माण / वित्तीय प्रबन्ध इत्यादि किया है। इनमें से अनेक फिल्मों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

## पेमेला रूक्स

पेमेला रूक्स फीचर फिल्मों में आने से पूर्व राजनैतिक एवं सामाजिक विषयों पर अनेक वृत्तचित्र बना चुकी हैं। इनकी पहली फीचर फिल्म *मिस बेट्टीज विल्डन* इनके अपने ही उपन्यास पर आधारित है तथा इसे राष्ट्रीय पुरस्कार सहित कई पुरस्कार मिले। दूसरी फिल्म *ट्रेन टू पाकिस्तान* विभाजन पर खुशवंत सिंह द्वारा लिखे उपन्यास पर आधारित थी। इस फिल्म को पूरे विश्व में सराहा गया। पेमेला दिल्ली में रहती हैं।



## NFDC

National Film Development Corporation incorporated in 1975, is the central agency established to promote the good cinema movement in the country. Restructured in 1980 the primary objective of NFDC is to foster excellence in cinema and to develop state-of-art technology. The agency is credited with the production/co-production/ financing and co-financing of over 300 features, shorts and documentaries, several of which have won national and international awards.

## PAMELA ROOKS

Pamela Rooks had made numerous documentaries on political and social issues before venturing into the world of movies. Her first feature film, *Miss Beatty's Children* was based on her own novel about missionaries in South India and won numerous awards.

Her second film *Train to Pakistan* was based on the classic novel on Partition, written by Khushwant Singh. It has won critical acclaim the world over. Rooks is based in New Delhi.

## विशेष उल्लेख

### एच.जी. दत्तात्रेय

#### प्रशस्ति

निर्णायक मंडल ने अभिनेता एच.जी. दत्तात्रेय का कन्नड फिल्म *मौनी* में उनके विशिष्ट अभिनय के लिए विशेष उल्लेख किया है।

### नेदुमुदी वेणु

#### प्रशस्ति

निर्णायक मंडल ने वर्ष 2003 की मलयालम फिल्मों में भूमिकाओं के वैभिन्न्य एवं विशिष्टता के लिए अभिनेता नेदुमुडी वेणु का विशेष उल्लेख किया है।

## SPECIAL MENTION

### H.G. DATTATREYA

#### CITATION

The Jury makes a special mention of actor *Dattatreya* for his work in the Kannada feature film *Mouni* for his tremendous screen presence that makes the film.

### NEDUMUDI VENU

#### CITATION

The Jury also makes a special mention of actor Nedumudi Venu for his extraordinary versatility in a range of roles in Malayalam films made in 2003.

## एच. जी. दत्तात्रेय

कर्नाटक के चित्रागुड़ा में 1942 में जन्मे दत्तात्रेय अभियांत्रिकी में पोस्ट ग्रेजुएट हैं। भारतीय वायु सेना के सेवानिवृत्त विंग कमाण्डर तथा हाल मैनेजमेन्ट अकादमी के उपमुख्य प्रबंधक तथा प्रिंसीपल रह चुके दत्तात्रेय बचपन से रंगमंच से जुड़े रहे।

1987 में ये फिल्म तथा टेलीविजन के क्षेत्र में आए। अब तक 40 नाटकों तथा 70 फिल्मों में अभिनय कर चुके दत्तात्रेय, अनेक दूरदर्शन कार्यक्रमों, वृत्तचित्रों, रेडियो कार्यक्रमों सभी क्षेत्रों में सक्रिय हैं।

## नेडुमुडी वेणु

नेडुमुडी वेणु 22 मई 1948 को नेडुमुडी ग्राम, अलपुजा, केरल में जन्मे। बचपन में इन्होंने कर्नाटक संगीत तथा कथकली नृत्य सीखा।

1978 में जी. अरविन्दन की *थम्पु* में अभिनय से फिल्मी क्षेत्र में पदार्पण कर वेणु अब तक 300 से अधिक फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं। केरल राज्य की ओर से इन्हें सर्वोत्तम अभिनेता तथा सर्वोत्तम सह अभिनेता का पुरस्कार छः बार प्राप्त हो चुका है। *ओरु मिन्नामिनुगिते नुरुंग वेत्तम* के लिए सर्वोत्तम सह अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है। इन्होंने मलयालम फिल्म *निडलकूत* फिल्म में भी काम किया है।

इसके अतिरिक्त वेणु को दूरदर्शन धारावाहिकों तथा टेलीफिल्मों में अभिनय के लिए अनेक पुरस्कार मिले हैं। इन्होंने *पूरम* फिल्म का निर्देशन भी किया है तथा अनेक मलयालम फिल्मों के लिए कहानियाँ भी लिखी हैं।



## H. G. DATTATREYA

Born in 1942 at Chitraguda in Karnataka, H. G. Dattatreya is a post-graduate in Engineering. A retired Wing Commander of the Indian Air Force and a former DGM and Principal of HAL Management Academy, he has associated himself with theatre activities right from his school days.

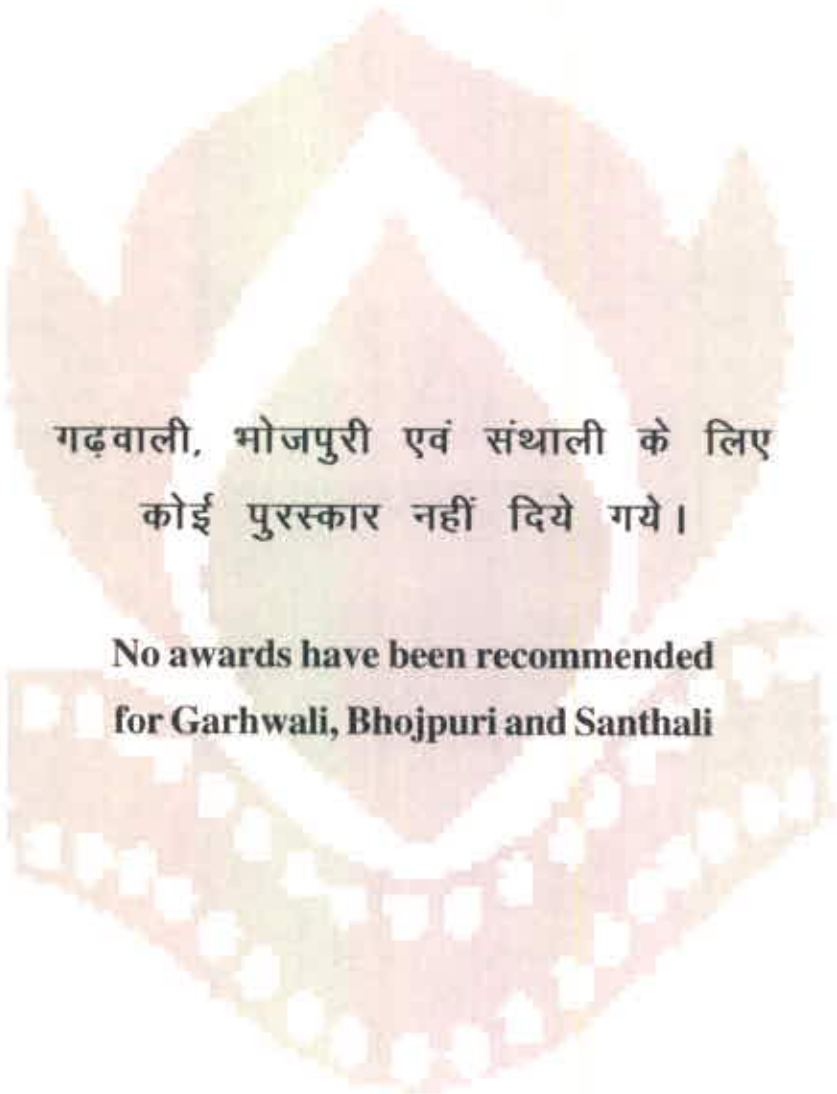
He came to the film and television world in 1987. To date he has acted in about 40 plays, 70 feature films, scores of television programmes and documentaries/radio programmes and continues to be active in all these fields.

## NEDUMUDI VENU

Nedumudi Venu was born on 22 May 1948, in Nedumudi, a village in Alappuzha District, Kerala. As a child he was initiated into Kathakali and Carnatic music.

On graduating from the University, he became active in the new theatre movement called Thiruarangu founded by Kavalam Narayana Panikkar.


In 1978 came the first opportunity to act in *Thampu* by G. Aravindan. To this day, he has acted in more than 300 films a couple of which are in Tamil. He has won awards for the best actor and best supporting actor at the Kerala State Film Awards six times. He has also won the National Award for the Best Supporting actor once for his role in *Oru Minnaminuginte Nurungu Vettom*. He has also worked Adoor Gopalakrishnan on the multiple award winner *Nizhalkuthu*.



गढ़वाली, भोजपुरी एवं संथाली के लिए  
कोई पुरस्कार नहीं दिये गये।

**No awards have been recommended  
for Garhwali, Bhojpuri and Santhali**





---

गैर कथाचित्र  
पुरस्कार

**Awards for  
Non-Feature Films**

---

## सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार

वार एंड पीस (अंग्रेजी) और काया पूछे माया से (हिन्दी)

निर्माता आनन्द पटवर्धन को स्वर्णकमल तथा रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशक आनन्द पटवर्धन को स्वर्णकमल तथा रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम गैर कथाचित्र का पुरस्कार *वार एंड पीस* और *काया पूछें माया से* को संयुक्त रूप से दिया जा रहा है ।  
*वार एंड पीस* हिंसा के मूल कारणों जैसे साम्प्रदायिकता, आणविक स्पर्धा आदि की खोज करते हुए भारत, पाकिस्तान, जापान एवं अमेरिका में फिल्मायी गई है । फिल्म में समाज में गहराई से व्याप्त तनावों को समझने के साथ – साथ गौंधीवादी विचारधारा की पृष्ठभूमि में शान्ति, सद्भावना एवं धर्मनिरपेक्षता की आकांक्षा भी है ।

## AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

**War and Peace (English) and Kaya Poochhe Maya Se (Hindi)**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **ANAND PATWARDHAN**  
Swarna Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **ANAND PATWARDHAN**

### CITATION

The Award for the Best Non-feature Film of the year 2003 is given jointly to *War and Peace* and *Kaya Poochhe Maya Se*. *War and Peace* sets out to search for the roots of violence manifest in many forms in the current times-from communal forces to nuclear race. Shot in India, Pakistan, Japan & USA, the film achieves a multi-layered understanding of these deep rooted tensions - at the same time recording the aspirations for peace, harmony and secularism, in the backdrop of Gandhian thought.

## आनन्द पटवर्धन

आनन्द पटवर्धन ने पिछले तीन दशकों में सामाजिक-राजनैतिक विषयों पर अनेक वृत्तचित्र बनाये हैं। यद्यपि इन्हें अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं तथापि ज्वलन्त सामाजिक समस्याओं को उजागर करने के कारण इनकी फिल्में शासक वर्ग द्वारा प्रोत्साहित नहीं की गईं।

इनकी फिल्में *बाम्बे अवर सिटी* (1985) फुटपाथ निवासियों पर *इन द नेम ऑफ गॉड* (1985) धार्मिक रूढ़िवाद पर, *फादर सन एण्ड होलीवार* (1995) गुंडागर्दी और जातीय हिंसा के बीच संबंध पर *ए नर्मदा डायरी* (1995) विकास के नाम पर विस्थापित लोगों की पीड़ा पर आधारित थीं।



## ANAND PATWARDHAN

Anand Patwardhan has made socio-political documentaries for nearly three decades. Despite numerous national and international awards his films have often been suppressed by the ruling elite, tackle as they do subjects like street dwellers (*Bombay, Our City*, 1985), religious fundamentalism (*In the Name of God*, 1985), the connection between machismo and sectarian violence (*Father, Son and Holy War*, 1995) and the plight of those displaced in the name of 'development' (*A Narmada Diary*, 1995).

## सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार

वार एंड पीस (अंग्रेजी) और काया पूछे माया से (हिन्दी)

निर्माता अरविन्द सिन्हा को स्वर्णकमल तथा रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक अरविन्द सिन्हा को स्वर्णकमल तथा रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

काया पूछे माया से गंगा नदी के किनारे स्थित हावड़ा स्टेशन पर मँडराते असंख्य मानवीय चेहरों की विचारशील एवं भावप्रवण किन्तु अनिर्णायक खोज है। निर्देशक की प्रखर दृष्टि मानवीय प्रतिबिम्बों में अप्रतिम साम्य ढूँढने में सफल हुई है। 'मानव' कहे जाने वाली रहस्य में इतनी आन्तरिक दृष्टि मानो तैरते मानवीय चेहरों, ध्वनियों एवं प्रतिबिम्बों के माध्यम से एक पूर्ण सभ्यता का पुनर्निर्माण हुआ हो।

## AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

**WAR AND PEACE (English) and KAYA POOCHHE MAYA SE (Hindi)**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **ARVIND SINHA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **ARVIND SINHA**

### CITATION

*Kaya Poochhe Maya Se* is a probing, thoughtful, intense, yet a non-judgmental record of the myriad faces of humanity floating around the Howrah Station that lies by the side of the river Ganga. The director with just his keen eye and an unpredictable symmetry of images, gains an inner eye into the mystery called people. It is as though an entire civilization is reconstructed through images of floating faces, people and sounds.



## अरविन्द सिन्हा

अरविन्द सिन्हा को *अजित*, *द रिक्लूज* तथा *दुई पाटन के बीच में* के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। कलकत्ता में काम कर रहे एक आठ वर्षीय बाल श्रमिक पर आधारित *अजित* 22 अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाई गई तथा सिन्हा लीपजिग फिल्म समारोह, जर्मनी 1996 के सर्वोत्तम उदीयमान निर्देशक चुने गए। फिल्म को न्यूयार्क एक्जोजीशन ऑफ शार्ट फिल्मस, 1997 का जूरी पुरस्कार भी मिला।

भारतीय शास्त्रीय वादक उस्ताद नासिर अमीनुद्दीन डागर पर आधारित *द रिक्लूज* एक सौ पचास से अधिक देशों में दिखाई गई। सिन्हा की पहली फिल्म *छाऊ* बिहार-पश्चिम बंगाल सीमा पर स्थित सेराइकेला की आदिम जाति के नर्तकों पर आधारित थी तथा भारत एवं विदेश में कई स्थानों पर दिखाई गई।

*दुई पाटन के बीच में* यह समीक्षा करती है मानवतापरक विकास ने बिहार के लाखों लोगों की आजीविका को किस प्रकार नष्ट कर दिया है।



## ARVIND SINHA

Arvind Sinha is the recipient of three National Awards for *Ajit*, *The Recluse* and *Dui Paatan Ke Beech Mein*, which won the Swarna Kamal for Best Non-feature film in 1999. His film *Ajit* about an eight-year-old boy working in a Kolkata household, participated in 22 international film festivals and Sinha was adjudged the Most Promising Documentary Filmmaker of 1996 at Leipzig, Germany. The film also received the Jury Prize at the New York Exposition of Short Films in 1997.

*The Recluse*, on the classical Indian vocalist Ustad Nasir Aminuddin Dagar was screened in more 150 countries. Sinha's first film *Chhau* about the masked dancers of tribal belt of Seraikela on the Bihar-West Bengal border, was also extensively exhibited in India and abroad.

His last film was *Dui Paatan Ke Beech Mein* is a critique of the development models that have destroyed the livelihood of millions of people in Bihar.

## निर्देशन का प्रथम सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र पुरस्कार

एन एन्काउंटर विद् ए लाइफ लिविंग (मलयालम/अंग्रेजी)

निर्माता वीनू अब्राहम को रजत कमल एवं 10,000/- रु. का नकद पुरस्कार

निर्देशिका सुजा को रजत कमल एवं 10,000/- रु. का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का निर्देशक का प्रथम सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र पुरस्कार *एन एन्काउंटर विद् ए लाइफ लिविंग* को दिया गया है। फिल्म शारीरिक रूप से असमर्थ सरसू की पीड़ा एवं जिजीविषा को चित्रित करती है। निर्देशिका मानसिक जीवन की आध्यात्मिक विपुलता को नवीन वर्णनात्मक शैली में सम्पूर्ण रूप से प्रस्तुत करने में सफल हुई है।

## AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

### AN ENCOUNTER WITH A LIFE LIVING (Malayalam/English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs.10,000/- each to Producer: **VINU ABRAHAM**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- each to Director: **SUJA**

### CITATION

The award for the Best First Non-feature Film of a Director for the year 2003 is given to *An Encounter with a Life Living* which depicts the plight of a physically incapacitated Sarasu and her cheerful will to live. The director achieves this bringing out the totality, spiritual richness of a "life lived only in the mind" – through an innovative narrative idiom.

## वीनू अब्राहम

वीनू अब्राहम केरल के सुप्रसिद्ध पत्रकार हैं तथा *वीक* पत्रिका में कार्यरत हैं। *एन एन्काउन्टर विद ए लाइफ लिविंग* का निर्माण फिल्म के क्षेत्र में इनका पहला प्रयास है।



## VINU ABRAHAM

A well-known journalist from Kerala, Vinu Abraham has been a Correspondent with the *Week. An Encounter with Life Living* is his debut production.

## सुजा

सुजा केरल के क्षेत्रीय टेलीविजन चैनल में प्रोडक्शन असिस्टेंट तथा स्टाफ प्रोड्यूसर रह चुकी हैं तथा कुछ वीडियो वृत्तचित्रों का निर्देशन कर चुकी हैं। *एन एन्काउन्टर विद ए लाइफ लिविंग* के निर्देशन से पूर्व फिल्मों के क्षेत्र में इनका अनुभव नगण्य है। इनका प्रथम प्रयास प्रशंसनीय है।



## SUJA

Suja was a Production Assistant and then a Staff Producer with a regional television channel in Kerala and has directed a few video documentaries. She has little prior experience in the film medium and this is her first venture as a director.

## सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय/जनजातीय फिल्म

और घुमन्तु ठहर गए (हिन्दी)

निर्माता लियो आर्ट्स कम्युनिकेशन को रजत कमल एवं 10,000/- रु का नकद पुरस्कार

निर्देशिका मीनाक्षी विनय राय को रजत कमल एवं 10,000/- रु का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वश्रेष्ठ मानव शास्त्रीय/जनजातीय फिल्म का पुरस्कार *और घुमन्तु ठहर गए* को दिया जा रहा है। यह फिल्म यायावर प्रजाति घुमन्तु की जीवन शैली एवं उन्हें नियमित अपराधी के रूप में चिह्नित कर दिये जाने की पीड़ा को दर्शाती है। फिल्म उनके पुनर्वास प्रयासों पर भी प्रकाश डालती है।

## AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ ETHNOGRAPHIC FILM

**AUR GHUMANTU THAHAR GAYE (Hindi)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs 10,000/- to the Producer: **LEO ARTS COMMUNICATION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Directors: **MEENAKSHI VINAY RAI**

### CITATION

The award for the Best Anthropological/Ethnographic film of the year 2003 is given to *Aur Ghumantu Thahar Gaye*. The film records the life of the nomadic tribe *Ghumantu* and their peculiar plight of being labelled 'habitual offenders'. It also records the efforts made at rehabilitating them.



## मीनाक्षी विनय राय

फिल्मकार मीनाक्षी और विनय राय की जोड़ी को सामाजिक विषयों, शिक्षा एवं संस्कृति जैसे विषयों पर फिल्में बनाने का जुनून है। कार्टून से लेकर वृत्तचित्र तक संपर्क एवं संचार के विभिन्न साधनों तथा सिनेमा में नये-नये प्रयोग करने में इन दोनों को रुचि है।

इनकी कम्पनी लिओ आर्ट कम्युनिकेशन डी ए वी पी, इ एम पी सी, इग्नू, प्रौढ शिक्षा निदेशालय एवं विज्ञान प्रसार जैसी संस्थाओं के पैनल पर है।

दो अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, चार राष्ट्रीय पुरस्कार तथा तेईस अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में नामांकन के अतिरिक्त इन दोनों ने एक अमेरिकन यूनिवर्सिटी के लिए कार्टून पर *करेक्टर एनीमेशन टू स्पेशल इफेक्ट्स* नामक पुस्क भी लिखी है।

मीनाक्षी बच्चों को कार्टूनकला में शामिल करने के उद्देश्य से शुरू किये गये प्रोजेक्ट स्पन्दन में भी शामिल हैं।



## MEENAKSHI VINAY RAI

The filmmaker duo of Meenakshi Vinay Rai is passionate about creating films on issues of social relevance, education and culture. Adopting different means of communication – from animation to documentaries the couple prefers out-of-the-box thinking to create new cinematic expressions.

The couple own the production company Leo Arts Communication, an integrated communications agency which is empanelled with DAVP, EMPC, IGNOU, Directorate of Adult Education and Vigyan Prasar.

Apart from two international awards, four national awards and 23 nominations across international film festivals, the filmmakers also have to their credit a book on Animation titled *Character Animation to Special Effects* for a US University.

Meenakshi Vinay Rai are also involved in Spandan - an ongoing project initiated to involve special children in animation filmmaking. The project has been widely appreciated.

## सर्वोत्तम जीवनी/ऐतिहासिक पुनर्निमाण/संकलन फिल्म

वैद्यरत्नम् पी. एस. वारियर (अंग्रेजी)

निर्माता केरल राज्य फिल्म विकास निगम को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशक टी. कृष्णन उन्नी को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम जीवनी फिल्म पुरस्कार *वैद्यरत्नम् पी.एस. वारियर* को आयुर्वेद में अग्रणी डा. पी. एस. वारियर के जीवन को चित्रित करने के लिए दिया गया है। फिल्म कला एवं साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान तथा उनके बहु-आयामी व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डालती है।

## AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL/HISTORICAL RECONSTRUCTION/ COMPILATION FILM

### VAIDYARATNAM P S VARIER (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **KERALA STATE FILM DEVELOPMENT CORPORATION**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **T KRISHNAN UNNI**

### CITATION

The award for the Best Biographical Film of the year 2003 is given to *Vaidyaratnam P S Varier* that records the life of a pioneer in Ayurvedic medicine Dr. P.S. Varier. The film also brings out his multi-faceted personality along with his contribution to performing arts and literature.

## मीनाक्षी विनय राय

फिल्मकार मीनाक्षी और विनय राय की जोड़ी को सामाजिक विषयों, शिक्षा एवं संस्कृति जैसे विषयों पर फिल्में बनाने का जुनून है। कार्टून से लेकर वृत्तचित्र तक संपर्क एवं संचार के विभिन्न साधनों तथा सिनेमा में नये-नये प्रयोग करने में इन दोनों को रुचि है।

इनकी कम्पनी लियो आर्ट कम्युनिकेशन डी ए वी पी, इ एम पी सी, इग्नू, प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय एवं विज्ञान प्रसार जैसी संस्थाओं के पैनल पर है।

दो अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, चार राष्ट्रीय पुरस्कार तथा तेईस अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में नामांकन के अतिरिक्त इन दोनों ने एक अमेरिकन यूनिवर्सिटी के लिए कार्टून पर *करेक्टर एनीमेशन टू स्पेशल इफेक्ट्स* नामक पुस्तक भी लिखी है।

मीनाक्षी बच्चों को कार्टूनकला में शामिल करने के उद्देश्य से शुरू किये गये प्रोजेक्ट स्पन्दन में भी शामिल हैं।



## MEENAKSHI VINAY RAI

The filmmaker duo of Meenakshi Vinay Rai is passionate about creating films on issues of social relevance, education and culture. Adopting different means of communication – from animation to documentaries the couple prefers out-of-the-box thinking to create new cinematic expressions.

The couple own the production company Leo Arts Communication, an integrated communications agency which is empanelled with DAVP, EMPC, IGNOU, Directorate of Adult Education and Vigyan Prasar.

Apart from two international awards, four national awards and 23 nominations across international film festivals, the filmmakers also have to their credit a book on Animation titled *Character Animation to Special Effects* for a US University.

Meenakshi Vinay Rai are also involved in Spandan - an ongoing project initiated to involve special children in animation filmmaking. The project has been widely appreciated.

## सर्वोत्तम जीवनी/ऐतिहासिक पुनर्निमाण/संकलन फिल्म

वैद्यरत्नम् पी. एस. वारियर (अंग्रेजी)

निर्माता केरल राज्य फिल्म विकास निगम को रजत कमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशक टी. कृष्णन उन्नी को रजत कमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम जीवनी फिल्म पुरस्कार *वैद्यरत्नम् पी.एस. वारियर* को आयुर्वेद में अग्रणी डा. पी. एस. वारियर के जीवन को चित्रित करने के लिए दिया गया है। फिल्म कला एवं साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान तथा उनके बहु-आयामी व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डालती है।

## AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL/HISTORICAL RECONSTRUCTION/COMPILATION FILM

### VAIDYARATNAM P S VARIER (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **KERALA STATE FILM DEVELOPMENT CORPORATION**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **T KRISHNAN UNNI**

### CITATION

The award for the Best Biographical Film of the year 2003 is given to *Vaidyaratnam P S Varier* that records the life of a pioneer in Ayurvedic medicine Dr. P.S. Varier. The film also brings out his multi-faceted personality along with his contribution to performing arts and literature.



## केरल राज्य फिल्म विकास निगम

केरल राज्य फिल्म विकास निगम (के.एस.एफ. डी.सी.) की स्थापना 1975 में हुई। इसका मुख्य उद्देश्य मलयालम फिल्मों तथा समस्त अच्छे सिनेमा का विकास है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 1980 चित्रांजलि स्टुडियो का उद्घाटन हुआ। दक्षिण भारत में सिनेमा क्षेत्र में तकनीकी के प्रयोग की पहल चित्रांजलि ने ही की। राजधानी तिरुवनन्तपुरम से केवल आठ किलोमीटर दूर तिरुवल्लम स्थित चित्रांजलि केरल का तकनीकी दृष्टि से सर्वाधिक सज्जित स्टुडियो है।

के.एफ.डी.सी. ने अनेक पुरस्कृत तथा लघु फिल्मों को वित्तीय सहायता भी प्रदान की है।

## टी.एन. कृष्णन उन्नी

54 वर्षीय टी. कृष्णन उन्नी केरल राज्य फिल्म विकास निगम के अन्तर्गत चित्रांजलि स्टुडियो, त्रिवेन्द्रम के रिकार्डिंग विभाग के मुख्य ध्वनि अभियंता हैं। 1976 में एफ.टी.आइ.आइ. से सिनेमा ध्वनि आलेखन तथा ध्वनि अभियांत्रिकी करने के पश्चात् इन्होंने 1980 में केएसएफडीसी में काम करना शुरू किया।

इन्होंने 1977 से 1980 तक अहमदाबाद के स्पेस एप्लीकेशन सेंटर के खेदा कम्युनिकेशन ग्रुप के साथ भी काम किया है। इन्हें ध्वनि आलेखन के लिए तीन बार पहले भी राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। ये फिल्मों थीं—अदूर गोपाल कृष्णन की *अनान्तरम्*, शाजी करुण की *पिरवी*, तथा जयराज की *देसादनम्*।

*वैद्यरत्नम् पी. एस. वारियर* निर्देशन के रूप में इनका प्रथम प्रयास है।



## KERALA STATE FILM DEVELOPMENT CORPORATION

The Kerala State Film Development Corporation Ltd. (KSFDC) was established in the year 1975. The concept behind the initiation of this Public Sector undertaking was to promote the development of Malayalam Film Industry. Another prime objective of Kerala State Film Development Corporation is to facilitate the growth of good cinema.

The Chitranjali Studio Complex, inaugurated in 1980 was the first step towards the realisation of these objectives. The KSFDC has also funded numerous award-winning feature and short films.

## T. N. KRISHNAN UNNI

T. N. Krishnan Unni, 54, is at present the Chief Sound Engineer in the Recording Department of the Chitranjali Studio in Trivandrum under the KSFDC. After graduating in Cinema (sound recording and sound engineering) from the FTII, Pune in 1976, he joined the KSFDC in 1980.

He also worked with Kheda Communications Group at the Space Applications Centre in Ahmedabad from 1977 to 1980. He has received the National Award for Audiography thrice, for *Anantharam* (by Adoor Gopalakrishnan), *Piravi* (by Shaji. N. Karun) and *Desadasam* (directed by Jayaraj).

The documentary on *Vaidyaratnam P.S. Varier* is his first attempt at direction.

## सर्वश्रेष्ठ कला/सांस्कृतिक फिल्म पुरस्कार

पिकासो मेटामोर्फोसिस (अंग्रेजी)

निर्माता वाइ. एन. इंजीनियर, फिल्म प्रभाग, मुंबई को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशक नंद कुमार सदामते को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 की सर्वश्रेष्ठ कला/सांस्कृतिक फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म पिकासो मेटामोर्फोसिस को एक शीर्षस्थानीय चित्रकार पिकासो की कला के अभूतपूर्व प्रतिपादन के लिए दिया गया है। फिल्म चित्रकार की कला को उन तक पहुँचाने में भी सफल हुई है, जो पिकासो की कला की प्रवर्तित नहीं थे। फिल्म पिकासो के जीवन की कष्टपूर्ण परिस्थितियों, उनके आदर्शों, संबंधों तथा कला का निरीक्षण करती है।

## AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

### PICASSO METAMORPHOSES (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- each to Producers: **Y.N. ENGINEER (FILMS DIVISION)**  
Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **NANDKUMAR SADAMATE**

### CITATION

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 2003 is given to *Picasso Metamorphoses* for its rare attempt at interpreting the works of the legendary painter making him accessible even to those uninitiated to his art. The film examines the troubled times that Picasso lived in, his ideals, his relationships and the inevitable symbiosis of his life and work.

## वाइ. एन. इंजीनियर

वाइ. एन. इंजीनियर ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पूना से फोटोग्राफी में डिप्लोमा प्राप्त किया है। दूरदर्शन में छायाकार के रूप में आने से पूर्व ये जाल मिस्त्री के सहायक छायाकार रहे।

1978 से ये फिल्म प्रभाग के लिए 50 से अधिक वृत्तचित्रों का निर्देशन कर चुके हैं। 1990 से ये 200 से अधिक न्यूज रील, वृत्तचित्रों तथा लघु फिल्मों के निर्माण के साथ जुड़े रहे। इन्हें मिलन समारोह का अन्तर्राष्ट्रीय तथा अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।



## Y.N. ENGINEER

Y.N. Engineer is a Diploma holder in Motion Picture Photography from the Film and Television Institute of India, Pune. He worked as an assistant with the well-known cinematographer Jal Mistry before joining Doordarshan as a cameraman.

Since 1978, he has been made more than 50 documentaries for the Films Division as Director. From 1990, he has been associated with more than 200 news magazines, documentaries and short films as Producer. He has won an international award from Milan and numerous National Awards.

## नंदकुमार सदामते

1955 में जन्मे नंदकुमार सदामते ने रेखाचित्र तथा चित्रकला में डिप्लोमा किया है तथा 1980 से मीडिया के साथ काम कर रहे हैं। ये आजकल फिल्म प्रभाग के लिए काम कर रहे हैं तथा *पिकासो* से पूर्व दो लघु फिल्मों *नो एन्ट्री* तथा *दिशा* का निर्देशन कर चुके हैं।



## NANDKUMAR SADAMATE

Born in 1955, Nandkumar Sadamate completed his Drawing and Painting Diploma and has been working with media since 1980. He is currently working in the Films Division and has directed two short films, *No Entry* and *Disha*.



सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म (विज्ञान की पद्धति एवं प्रक्रिया, वैज्ञानिकों के योगदान आदि सहित) सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म

द एटीन्थ ऐलीफेन्ट – थ्री मोनोलॉग्स (मलयालम)

निर्माता सावित्री दिवाकरन को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार  
निर्देशन पी. बालन को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म/पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण फिल्म पुरस्कार द एटीन्थ ऐलीफेन्ट – थ्री मोनोलॉग्स को हाथियों द्वारा मानवीय स्वर में अपनी व्यथा सुनाने एवं मनुष्यपरक विकास के विरुद्ध आवाज उठाने के नूतन प्रयोग के लिए दिया गया है। फिल्म में पर्यावरण संतुलन एवं पशुओं के प्रति क्रूरता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को भी उठाया गया है।

**AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM / ENVIRONMENT CONSERVATION / PRESERVATION FILM (including method and process of science, contribution of Scientists, awareness etc.)**

**THE 18<sup>TH</sup> ELEPHANT – 3 MONOLOGUES (Malayalam)**

Rajat Kamal and cash prize of Rs.10,000/- Producer: **SAVITHRI DIVAKARAN**

Rajat Kamal and cash prize of Rs.10,000/- Director: **P BALAN**

**CITATION**

The award for the Best Scientific Film/ Environment Conservation / Preservation film of 2003 is given to *The 18th Elephant – 3 Monologues* for using the novel method of elephants narrating their own story (in human voice) to raise a cry against “man centric” concept of development. The film also succeeds in raising bigger issues of ecological balance, and cruelty to animals.



## सावित्री दिवाकरन

सावित्री दिवाकरन आल्टरनेट नेटवर्क ऑफ मीडिया पीपुल (ए एन एम पी यू) का संचालन करती है। ये मीडिया संस्कृति के लिए काम करने वाले एक समान विचारधारा वाले लोगों का समूह है। ए एन एम पी यू का पहला प्रयास *आन पूवु* था। *एटीन्थ ऐलीफेन्ट* इनकी दूसरी फिल्म है।



## SAVITHRI DIVAKARAN

Savithri Divakaran runs Alternate Network of Media People (ANMPU). This is a non-profit collective of like-minded people who are working to develop an alternate media culture. Environment/gender/health/education form their prime areas of concern. The first project that ANMPU took up was *Aan Poovu: 18th Elephant* is their second initiative.

## पी. बालन

ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले पी. बालन केरल में फिल्म सोसाइटी आंदोलन के माध्यम से फिल्मों में आए। इनकी पहली फिल्म को, जो लिंग भेद पर आधारित थी, को ओबेरहाउसन इंटरनेशनल डाक्युमेंटरी फिल्म फेस्टीवल, 1997 में निर्णायक मंडल ने मानवीय विशेष उल्लेख किया। इन्हें वर्ष 2000 में केरल राज्य टेलीविजन का सर्वोत्तम पुरस्कार मिला। इनकी दूसरी फिल्म जातीय हिंसा पर आधारित थी।

ये बालन की तीसरी फिल्म है।



## P. BALAN

From a rural background, P. Balan came into filmmaking through the film society movement in Kerala. His first film dealing with gender issues from a surprising angle won an honorary special jury mention at the Oberhausen International Documentary Film Festival in 1997. He was the recipient of the Kerala State Television Award for the Best Documentary telecast in 2000. His second film was about caste violence.

This is Balan's third film.

सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फिल्म (पर्यटन, निर्यात, कारीगरी, उद्योग विषयों को शामिल करना )

लद्दाख, दी लैंड ऑफ मिस्ट्री (अंग्रेजी)

निर्माता बियोत प्रज्ञा त्रिपाठी को रजत पुरस्कार तथा रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशक बियोत प्रज्ञा त्रिपाठी को रजत पुरस्कार तथा रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फिल्म का पुरस्कार *लद्दाख दी लैंड ऑफ मिस्ट्री* को लद्दाख के मनोहर परिदृश्यों, लोगों, उनकी संस्कृति, आस्थाएं एवं जीवनशैली को दर्शाने के लिए दिया गया है ।

**AWARD FOR THE BEST PROMOTIONAL FILM (to cover tourism exports, crafts, industry etc.)**

**LADAKH, THE LAND OF MYSTERY (English)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer: **BIYOT PROJNA TRIPATHY**  
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **BIYOT PROJNA TRIPATHY**

**CITATION**

The award for the Best Promotional Film of the year 2003 is given to *Ladakh, The Land of Mystery* for capturing the shining landscape, the people, their culture, beliefs and way of life in pleasing visuals.

## बियोत प्रज्ञा त्रिपाठी

एक योग्य वकील बियोज प्रज्ञा त्रिपाठी चार वर्षों से फिल्में बना रही हैं। इससे पूर्व ये *जेजमा, महाकुम्भ—ए स्प्रिचुअल जर्नी, खम जम यादौ* (फिल्म काठमांडु इन्टरनेशनल माउन्टेन फिल्म फेस्टीवल 2002 में आमंत्रित की गई तथा हिमालयन फिल्म फेस्टीवल, अमस्टर्डम, नीदरलैंड 2003 में भी प्रदर्शित की गई) फिल्में बना चुकी हैं।

त्रिपाठी की *लद्दाख द लैंड आफ मिस्ट्री* मुंबई लघु एवं वृत्तचित्र अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 2004 में सिल्वर कॉच पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं।



## BIYOT PROJNA TRIPATHY

Though a qualified lawyer, Biyot Projna Tripathy has been making films for the last four years. The filmmaker's past credits include *Jejema, Mahakumbh – A Spiritual Journey, Kham zam yadan* (the film was invited to the Kathmandu International Mountain Film Festival in 2002 and also participated in the Himalaya Film Festival in Amsterdam, Netherlands in 2003).

Tripathy's *Ladakh, The Land of Mystery* has won the Silver Conch at the Mumbai International Film Festival for Shorts and Documentaries (2004).

सर्वोत्तम कृषि फिल्म (पशुपालन, दुग्ध उत्पादन आदि जैसे कृषि से संबंधित विषयों का शामिल करना)

सीड्स ऑफ लाइफ (अंग्रेजी)

निर्माता पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट को रजत कमल तथा रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशिका उषा अल्वुक्वर्क को रजत कमल तथा रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम कृषि फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म *सीड्स ऑफ लाइफ* को दिया जा रहा है। यह फिल्म वैकल्पिक कृषि प्रणाली की पारंपरिक गरिमा को पुनर्जीवित करने के लिए छोड़े गए 'नवदान्य' आंदोलन पर प्रकाश डालती है। कृषि के क्षेत्र में आधुनिक वैश्वीकरण जन्य अनिश्चितताओं के परिप्रेक्ष्य में इस फिल्म का महत्व और भी बढ़ जाता है।

**AWARD FOR THE BEST FILM ON AGRICULTURE (to include subjects related to and allied to agriculture like animal husbandry, dairying etc.)**

**SEEDS OF LIFE (English)**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to each Producers: **PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST**  
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **USHA ALBUQUERQUE**

**CITATION**

The Award for the Best Agriculture Film of 2003 is given to *Seeds of Life* for its focus on 'Navdanya' the movement launched to retrieve the traditional wisdom in alternative farming methods. The film's importance emerges in the face of the current globalization-led agrarian uncertainties.



## पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट

प्रसार भारती कार्पोरेशन के साथ सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट दूरदर्शन को प्रतिवर्ष स्वतंत्र फिल्मकारों द्वारा बनायी गई 52 फिल्में देता है। फिल्मों में शासन के गुणों, उनकी समस्याओं, उन्हें सुलझाने के लिए किए गए प्रयासों का विवरण होता है।

प्रसार भारती ट्रस्ट के माध्यम से जन प्रसार को लाभ के नहीं अपितु कल्याण के उद्देश्य से विस्तृत एवं प्रोत्साहित के लिए प्रयत्नशील है। पी.एस.बी. टी. द्वारा अधिकृत अनेक फिल्मों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। ट्रस्ट वृत्तचित्र एवं लघु फिल्मकारों का ऐसा समूह बनाना चाहता है जो भारत की सश्लेष एवं विधितापूर्ण झांकी को जनसामान्य तक प्रेषित कर सके।

## उषा अल्बुकर्क

उषा अल्बुकर्क इनसाइट प्राइव्जन्स तथा उषा अल्बुकर्क मीडिया एसोसिएट्स की निदेशिका हैं। ये मद्रास यूनिवर्सिटी से अंग्रेजी साहित्य में रजन पदक तथा शिक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त कर चुकी हैं। इन्हें मद्रास यूनिवर्सिटी में शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए नेशनल मेरिट स्कालरशिप भी मिल चुकी है।

दूरदर्शन की समाचारवाचिका के अतिरिक्त इन्होंने दूरदर्शन में निर्माता का कार्य भी किया है तथा *हम होंगे कामयाब* (जी टीवी के लिए), *द प्रोफेशनल्स* तथा *अवेन्यूज* (दूरदर्शन के लिए) तथा टी वी आई के लिए *मशहूर मेन* जैसे कार्यक्रम बनाए हैं।



## PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST

Public Service Broadcasting Trust with the Prasar Bharati Corporation, the national publicly funded broadcaster, provides Doordarshan 52 public service documentary film in a year produced by independent filmmakers.

The Trust is an effort by Prasar Bharati to enlarge the scope and space for public broadcasting in India by working with the not-for-profit sector and other civil society groups. A lot of PSBT films have won awards at the national and international level. The Trust hopes to build a community of documentarists as well create a body of work that is able to empower audiences with images and sounds that present India's complex panorama of life.

## USHA ALBUQUERQUE

Usha Albuquerque is the Director of Insight Productions, and Usha Albuquerque Media Associates. She is a Silver medallist graduate in English Literature and a Gold medallist in Education from Madras University.

She is a T.V. personality and a news reader. Albuquerque has also undertaken joint projects in India with Radiotelevisiao Portuguesa SA of Portugal and the Economic Development Institute of the World Bank, Washington, USA. She has authored a comprehensive two volume series written and compiled on careers in Humanities and Science Fields.

सामाजिक विषयों (जैसे मद्य निषेध, महिला एवं बाल कल्याण और दहेज, नशे की बुराई, विकलांगों का कल्याण आदि पर सर्वोत्तम फिल्म)

वे बैक होम (बंगला)

निर्मात्री राजश्री मुखोपाध्याय को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशक सुप्रिय सेन को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार *वे बैक होम* को दिया गया है। एक परिवार, जो विभाजन के कारण पूर्वी पाकिस्तान से निकाल दिया गया था, पचास वर्ष के बाद अपने घर जाने के लिए यात्रा पर निकलता है। यात्रा अन्ततः दुःखद स्मृतियों, खोये हुए संबंधों और विभाजन के उन्माद का मार्मिक आख्यान बन जाती है।

**AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES (such as prohibition, women and child welfare, and dowry, drug abuse, welfare of the handicapped)**

**WAY BACK HOME (Bengali)**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **RAJASRI MUKHOPADHYAY**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **SUPRIYO SEN**

**CITATION**

The award for the Best Film on Social Issues for the year 2003 is given to *Way Back Home* for its recounting of a remarkable journey to a homeland lost for ever, as a result of Partition. A family driven out of East Pakistan during Partition undertakes a journey back after 50 years to their "homeland". The journey eventually turns into a story of painful memories, lost relationships and the madness of Partition - all achieved through a touching personal narrative.

## राजश्री मुखोपध्याय

कलकत्ता विश्वविद्यालय से इतिहास में मास्टर राजश्री उड़ीसा के मंदिरों पर अनुसंधान कर रही हैं। फिल्मों देखने की शौकीन राजश्री 90 के दशक से फिल्म समीक्षक बन गयीं। पर्सपेक्टिव बैनर तले इन्होंने दो फिल्मों का निर्माण किया है। पहली फिल्म *द नेस्ट* को 2001 का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। दूसरी फिल्म *वे बैक होम* को कई पुरस्कार मिल चुके हैं। राजश्री को यू. जी. सी. के बेस्ट रिसोर्स पर्सन पुरस्कार के लिए भी नामित किया गया है।

## सुप्रियो सेन

कलकत्ता में जन्मे, सुप्रियो सेन ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में एम ए किया है। इनकी पहली फिल्म *वेट अन्टिल डेथ* पत्थर तोड़ने की फैक्टरी में श्रमिकों की मृत्यु पर आधारित थी। फिल्म श्रमिकों को कानूनी अधिकार दिलाने में सफल हुई।

स्क्रॉल पेन्टर्स की श्रृंखला की अंतिम कड़ी पर आधारित इनकी दूसरी फिल्म *ड्रीम ऑफ हनीफ फ्रांको*—जर्मन टेलीविजन, चैनल प्लैनट पर दिखायी गई। प्रवासी पक्षियों को बचाने के परिवार के एकल संघर्ष पर आधारित पहली फिल्म *द नेस्ट* को 2001 का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इस फिल्म को सर्वोत्तम वृत्तचित्र के लिए बी. एफ. जे. ए. पुरस्कार भी मिला तथा भारतीय पैनोरमा में भी शामिल की गयी।

*वे बैक होम* मान्वास्टर के कॉमनवेल्थ फिल्म समारोह में सर्वोत्तम वृत्तचित्र के लिए बी. बी. एस. ऑडिअन्स पुरस्कार, मुम्बई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में गोल्डन कोन्च पुरस्कार, अन्तर्राष्ट्रीय जूरी पुरस्कार तथा वर्ष की सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार पहले ही प्राप्त कर चुकी है। फिल्म अनेक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाई जा चुकी है।



## RAJASRI MUKHOPADHYAY

A research fellow of Asiatic Society, Rajasri did her Masters in History from Calcutta University and is currently pursuing her PhD on the subject of The Temple Structures in Orissa. An avid watcher of films, Rajasri began working as a film critic in the early '90s.

She later joined film production and made two documentaries under the banner of Perspective. The first production *The Nest* won the National Award for Best Documentary on Environment and Conservation in 2001. The multiple award winning film *Way Back Home* is her second production.

## SUPRIYO SEN

Born in Calcutta, the National award-winning filmmaker Supriyo Sen completed his Masters in Journalism from the University of Calcutta. He made his debut as a director with *Wait Until Death* a documentary on a worker's death caused in a stone-crushing factory near Calcutta. The film subsequently helped play a role in establishing the worker's legal rights.

His latest film *Way Back Home* has already won the BBS Audience Award for Best Documentary in the Commonwealth Film Festival at Manchester. *Way Back Home* won the Golden Conch and the International Jury Award and Best Film of the Festival Award at MIFF. The film has had screenings at various international film festivals.



## सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म

फिडलर्स ऑन दी थैच (अंग्रेजी)

निर्माता पब्लिक सर्विस ब्रॉडकारिंग ट्रस्ट को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशिका तृषा दास को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म का पुरस्कार फिडलर्स ऑन दी थैच को दिया जा रहा है। फिल्म कलिम्पोंग में एक गाँधी आश्रम विद्यालय की कहानी है, जहाँ अपदस्थ बच्चे अपनी गरिमा को प्राप्त करते हैं और उस शिक्षक की आशा हैं जो उनके शरीर और मस्तिष्क को स्फूर्त कर रहा है। निर्देशिका सहकार एवं स्नेह की भावना को संगीत के सूत्र में पिरोने में सफल हुई है।

## AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/MOTIVATIONAL/ INSTRUCTIONAL FILM

### FIDDLERS ON THE THATCH (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST**  
Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **TRISHA DAS**

### CITATION

The award for the best educational/motivational/instructional film is given to *Fiddlers on the Thatch*. This film is the story of 'The Gandhian Ashram School' in Kalimpong but it is also a story of the deprived kids gaining their dignity and hope of a teacher who fed their bodies and spirit – all bound by the common thread of music. The director achieves a poignant blend of visual narrative and music to create a heartwarming tale of 'sharing and caring' in this film.



## पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट

प्रसार भारती कार्पोरेशन के साथ सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट दूरदर्शन को प्रतिवर्ष स्वतंत्र फिल्मकारों द्वारा बनायी गई 52 फिल्में देता है। फिल्मों में शासन के गुणों, उनकी समस्याओं, उन्हें सुलझाने के लिए किए गए प्रयासों का विवरण होता है।

ट्रस्ट के माध्यम से जन प्रसार को लाभ के नहीं अपितु कल्याण के उद्देश्य से विस्तृत एवं प्रोत्साहित के लिए प्रयत्नशील है। पी.एस.बी.टी. द्वारा अधिकृत अनेक फिल्मों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। ट्रस्ट वृत्तचित्र एवं लघु फिल्मकारों का ऐसा समूह बनाना चाहता है जो भारत की संश्लिष्ट एवं विघितापूर्ण झांकी को जनसामान्य तक प्रेषित कर सके।

### त्रिशा दास

सोफिया कॉलेज मुम्बई से समाजशास्त्र में ग्रेजुएट तृषा ने न्यूयार्क यूनिवर्सिटी से एडवांस वीडियो का अध्ययन किया है। इन्होंने कम्प्यूटर आर्ट एंड एनीमेशन में डिप्लोमा भी प्राप्त किया है। ये मेट्रिक्स में फिल्मों के रचनात्मक तथा तकनीकी पक्ष का काम करती हैं। इन्होंने हाल ही में नई सहस्राब्दी में भारतीय विषय वस्तु को लेकर *स्टेप्स एंड स्ट्राइड्स* नामक वृत्तचित्र तथा दस अन्य लघु फिल्मों का निर्देशन किया है। *स्टेप्स एंड स्ट्राइड्स* डिस्कवरी चैनल पर दिखाई जाने वाली है। तृषा ने महात्मा गाँधी की विचारधारा तथा आज के परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता पर आधारित एक श्रंखला *द मिल्लेनियम महात्मा* की परिकल्पना एवं निर्देशन किया है। इस श्रंखला का उद्देश्य है महात्मा के आदर्शों तथा विचारधारा को नई पीढ़ी तक सम्प्रेषित करना है।



## PUBLIC SERVICE BROADCASTING TRUST

Public Service Broadcasting Trust with the Prasar Bharati Corporation, the national publicly funded broadcaster, provides Doordarshan 52 public service documentary film in a year produced by independent filmmakers.

The Trust is an effort by Prasar Bharati to enlarge the scope and space for public broadcasting in India by working with the not-for-profit sector and other civil society groups. A lot of PSBT films have won awards at the national and international level. The Trust hopes to build a community of documentarists as well create a body of work that is able to empower audiences with images and sounds that present India's complex panorama of life.

### TRISHA DAS

Trisha has studied Advanced Digital Video at New York University. A graduate in Sociology from Sophia College, Mumbai, Trisha is an MBS and also holds a Diploma in Computer Art and Animation. She handles the creative and technical aspects of filmmaking in Matrix and has recently scripted and directed a series of 10 short films and a documentary titled *Steps and Strides*.

Trisha recently directed a series of spots, *The Millennium Mahatma* on Mahatma Gandhi's ideologies and their relevance today. In addition, Trisha has also directed films for the Railways and leading corporate houses.

सर्वोत्तम गवेषणा/साहसी फिल्म (खेलों का शामिल करना)

मैडनेस इन दी डेजर्ट (अंग्रेजी)

निर्माता आमिर खान को रजत कमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक सत्यजित भटकल को रजत कमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम गवेषणा/साहसी फिल्म का पुरस्कार *मैडनेस इन दी डैजर्ट* को *लगान* फिल्म बनाने के महान उद्देश्य, उत्साह एवं महती प्रयासों के अन्वेषण के लिए दिया गया है ।

**AWARD FOR THE BEST EXPLORATION/ADVENTURE FILM  
(To include sports)**

**MADNESS IN THE DESERT (English)**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **AAMIR KHAN**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **SATYAJIT BHATKAL**

**CITATION**

The award for the best exploration/ adventure film for the year 2003 is given to *Madness In The Desert* that explores the spirit, the effort and the mammoth ambition behind the making of *Lagaan*. The director has rendered this into a gripping and slick tale.

## आमिर खान

1965 में जन्मे आमिर खान का फिल्म निर्माण की दुनिया में गहरा संबंध है। कॉलेज के समय से ही आमिर की रंगमंच में अभिरुचि हो गई थी तथा इन्होंने निर्देशक महेन्द्र जोशी के साथ अवान्तर में काम किया। इसके बाद वे *मंजिल मंजिल* और *जबरदस्त* फिल्मों में नाजिर हुसैन के साथ सहायक निर्देशक बन गए। *होली* के साथ इन्होंने अभिनेता बनने का निश्चय किया। *कयामत से कयामत तक* ने हिन्दी सिनेमा का उत्कृष्ट नायक बना दिया। *दिल है कि मानता नहीं* (1991), *जो जीता वो ही सिकन्दर* (1992), *हम हैं राही प्यार के* (1993), *अन्दाज अपना अपना* (1994), *गुलाम* (1998), *सर्फरोश* (1999), 1947, *अर्थ* (1999), *लगान* (2001) तथा *दिल चाहता है* (2001) सभी फिल्में सफल रहीं। इन्होंने अभी *मंगल पाण्डे* की शूटिंग खत्म की है और *रंग बसंती* में अभिनय कर रहे हैं।



## सत्यजित भटकल

1964 में जन्मे सत्यजित भटकल ने 1989 में बार में प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा मुम्बई उच्च न्यायालय में सफलतापूर्वक कार्यरत रहे। इन्होंने न्याय संबंधी पत्रिका लॉयर्स कलेक्टिव के संपादन में सर्वोच्च न्यायालय की वकील इंदिरा जयसिंह की सहायता भी की। 1999 में ये लगान की निर्माण टीम के साथ जुड़ गये। इस यूनिट की काम के लिए प्रतिबद्धता को देखकर ये चकित रह गये। इन्होंने लगान की यात्रा को प्रलेखित करना आरंभ किया जो कि 300 घंटे की फुटेज तक पहुँच गयी। भटकल ने *द स्पिरिट ऑफ लगान* नामक एक पुस्तक भी लिखी है।



## AAMIR KHAN

Born in 1965, Aamir Khan comes from a family with deep roots in filmmaking. While still in college, Aamir developed an interest in theatre and worked with the theatre group, Avantar.

But he decided to take up acting as a full-time profession and Ketan Mehta's *Holi* became his debut film. It was Mansoor Khan's *Qayamat Se Qayamat Tak* that catapulted Aamir to fame. He garnered critical and mass acclaim by essaying lead roles in films like *Dil Hai Ki Manta Nahin* (1991), *Jo Jeeta Wohi Sikander* (1992), *Ghulam* (1998), *Sarfaroosh* (1999), 1947, *Earth* (1999), *Lagaan* (2001) and *Dil Chahta Hai* (2001).

He has finished shooting *Mangal Pandey* by Ketan Mehta, and is working on *Rang Basanti*.

## SATYAJIT BHATKAL

Born in 1964, Satyajit Bhatakhal qualified at the Bar in 1989 and had a successful career in Law at the Mumbai High Court. He also assisted Supreme Court lawyer Indira Jaisingh in editing *Lawyers Collective*. In 1999, Bhatakhal quit the legal profession and joined the *Lagaan* production team. Even as a part of the film's unit, he was struck by the commitment of the entire team and the manner in which the project was being executed. He began documenting the film's journey and generated over 300 hours of rushes.



## सर्वोत्तम खोजी फिल्म

### ए साइलेंट किलर (अंग्रेजी)

निर्माता धनंजय मंडल को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार  
निर्देशक धनंजय मंडल को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

#### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम खोजी फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म *ए साइलेंट किलर* को दिया गया है। फिल्म में संख्या से प्रदूषित पेयजल जिसे लाखों लोग पी रहे हैं, के घातक परिणामों को दिखाया गया है। निर्देशक ने समस्या का सरल किन्तु प्रभावशाली प्रतिपादन किया है।

## AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

### A SILENT KILLER (English)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **DHANANJOY MANDAL**  
Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **DHANANJOY MANDAL**

#### CITATION

The award for the Best Investigative film for 2003 is given to Dhananjay Mandal for the English film *A Silent Killer*. The film is a forceful statement on the disastrous consequences of millions of people drinking water contaminated with "arsenic". In a simple but effective manner, the filmmaker explores and then brings out the enormity of the problem.



## धनंजय मंडल

पश्चिम बंगाल के आन्तरिक क्षेत्र से धनंजय मंडल ने फिल्मकारिता स्वयं अपने ही परिश्रम से सीखी तथा मृणाल सेन तथा गौतम घोष जैसे सुविज्ञों के साथ काम किया है।

मंडल लगभग दस वर्षों से वृत्तचित्र, लघु तथा फीचर फिल्मों बना रहे हैं और अब तक तेईस फिल्मों बना चुके हैं, जो देश-विदेश में दिखायी जा चुकी हैं।

फ्लेवर ऑफ़ क्राफ़्ट, फॉर ए ड्रॉप वाटर, सागर टूवर्ड्स सुनर्जी, ए सक्सेस स्टोरी ऑफ़ आर्सेनिक मिटीगेशन, ए जर्नी विद काकमराज तथा गंगासागर इनकी प्रमुख फिल्मों हैं। इन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तालनबानी भी बनाई है।



## DHANANJOY MANDAL

Dhananjay Mandal belongs to the interiors of West Bengal. He is a self-taught filmmaker entirely but has worked with eminent names in the trade such as Mrinal Sen and Goutam Ghose.

Mandal has been making documentaries, shorts and feature films for more than a decade now. He has 23 films to his credit and his films have participated in national and international film festivals at home and abroad.

Some of his important films include: *Flavour of Craft*, *For a Drop of Water*, *Sagar towards Sunergy*, *A Success Story of Arsenic Mitigation*, *A Journey with Kakmaras* and *Gangasagar*. He has also made the internationally acclaimed film *Talnabami*.

## सर्वोत्तम कार्टून फिल्म

जिओ और जीने दो (हिन्दी)

निर्माता भारतीय बालचित्र समिति को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक बी. आर. सरनाइक को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

कार्टूनकार अर्शाद सईद नूरी को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम कार्टून फिल्म का पुरस्कार हिन्दी फिल्म *जिओ और जीने दो* को वन्य जीवन सुरक्षा का संदेश मनोविनोदपूर्वक किन्तु प्रभावशाली ढंग से देने के लिए दिया गया है। कार्टून कला के काल्पनिक प्रयोग से फिल्म के आकर्षण में विशेष रूप से बच्चों के लिए वृद्धि हुई है।

## AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

### JEO AUR JEENE DO (Hindi)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **B R SARNAIK**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Animator: **ARSHAD SAYEEDNOORI**

### CITATION

The award for the Best Animation film for 2003 is given to B. R. Sarnaik for the Hindi film *Jeo Aur Jeene Do*. In a humorous, colourful but effective way, the film conveys the message of wild-life protection. The imaginative use of animation techniques enhances the appeal of the film, especially for children.

## भारतीय बाल चित्र समिति

भारतीय बाल चित्र समिति की स्थापना 1955 में हुई। संस्था बच्चों की फिल्मों के निर्माण, वितरण, प्रदर्शन एवं उन्नयन में कार्यरत है। समिति भारत तथा विदेश में बच्चों की फिल्मों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। ये अपनी फिल्मों की बीडियो कैसेट्स का वितरण भी करते हैं। भारतीय बाल चित्र समिति की फिल्में नियमित रूप से दूरदर्शन पर प्रसारित होती रहती हैं। सी.एस.एफ.आई. द्वारा निर्मित फिल्में अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की जा चुकी हैं। भारतीय बाल चित्र समिति हर दूसरे वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह का आयोजन करती है।

### भास्कर सरनाइक

सितम्बर 1941 में जन्मे सरनायक ने ऋत्विच घटक, सत्यजित राय, मृगाल सेन तथा राम मोहन के साथ काम किया है। आजकल सरनायक फिल्म प्रभाग, भारतीय बाल चित्र समिति, अनेक राज्य सरकारों जैसे महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश तथा बिहार के लिए ऑप्टिकल कार्य कर रहे हैं।

### अर्शद सईद नूरी

मुम्बई में जन्मे अर्शद बचपन से ही कार्टून की ओर आकर्षित रहे। इन्होंने कार्टूनकला के अग्रणी भीमसेन के साथ कार्टूनकार का काम किया। अर्शद ने लोक गाथा के कार्टूनकार का काम किया। अर्शद ने बल्लू शाह तथा अजीब घर में एस. एम. हासन की सहायता भी की है। ये वी. जी. सामंत के साथ सिल्वरलाइन इन्डस्ट्रीज में कार्टूनकार के रूप में कार्य कर रहे हैं तथा स्वतंत्र रूप से एक लघु फिल्म *इनर वाएस* बनायी है। ये *डेस्टिनी* तथा *ज़ूमर* की मुख्य कार्टूनकार तथा संकलनकर्ता भी रहे हैं। सिल्वरटून में कार्य करते हुए इन्होंने बीयरसी बीयर, सोप ऑन द रॉज, कमांडर आइस, एडवेचर्स फ्रॉम द बुक ऑफ विरदु तथा हनुमान के लिए योगदान दिया है।



## CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA

CFSI was established in 1955 to provide value-based entertainment to children through the medium of films. The organisation is engaged in production, acquisition, distribution, exhibition and promotion of childrens' films. The Society is committed to spreading and encouraging the children's film movement in India and abroad.

### BHASKAR SARNAIK

Born in September 1941, Sarnaik initially trained as a commercial artist from Mumbai. He specializes in the field of Animation Exposing and Preparation of Art Work and has worked with eminent filmmakers like Ritwik Ghatak, Satyajit Ray, Ram Mohan and Mrinal Sen.

### ARSHAD SAEEDNOORI

Born in 1971 in Mumbai, Arshad became interested in animation from an early age. He worked as lead animator under one of India's pioneering animation directors Bhimsain. He has assisted S. M. Hassan in the National Award Winning short animation film, *Ballu Shah and Ajeeb Ghar*. He joined the Silverline Industries with V.G. Samant as animator and made his first independent short film, *Inner Voice*. He was also the key animator and compositor in *Destiny and Zoomer*. He left Silvertoon in 2003 to work on *Jeo Aur Jeene Do* for CFSI. This is his first National Award.



## निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

द लिज्जत सिस्टरहुड (अंग्रेजी) एवं एक आकाश (मौन)

द लिज्जत सिस्टरहुड के लिए निर्देशक कादम्बरी चिंतामणि एवं अजित ऊमन प्रत्येक को रजत कमल एवं रूपये 2,500/- का नकद पुरस्कार

एवं

एक आकाश के लिए निर्देशक सुधाकर रेड्डी को रजत कमल एवं रूपये 5,000/- का नकद पुरस्कार वर्ष 2003 का निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार द लिज्जत सिस्टरहुड एवं एक आकाश को संयुक्त रूप से दिया गया है।

### प्रशस्ति

द लिज्जत सिस्टरहुड लिज्जत पापड़ उद्योग में संलग्न सैकड़ों महिलाओं द्वारा पापड़ निर्माण, विक्रय एवं निर्यात की प्रेरणात्मक कहानी है। सबसे छोटी से लेकर सबसे बड़ी उम्र की उद्यमी महिलाओं से साक्षात्कार और प्राक्कथन से पता चलता है कि यह अद्भुत प्रयोग कितना सफल हुआ।

और

अलग अलग पृष्ठभूमि से आने वाले दो बालक पतंगबाजी के खेल में जैसे शत्रु बन जाते हैं। उनका अहं उन्हें उत्तेजित कर देता है, किन्तु अंत में दोनों को एक दूसरे की सहायता की भी जरूरत है। एक आकाश इन सब बालसुलभ कृत्यों का सरल प्रतिपादन है।

## SPECIAL JURY AWARD

**THE LIJJAT SISTERHOOD (English) and EK AAKASH (Silent)**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 2,500 each to the Directors: **KADHAMBARI CHINTAMANI** and **AJIT OOMMEN** for *The Lijjat Sisterhood*

and

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 5,000/- to the Director: **SUDHAKAR REDDY** for *Ek Aakash*

### CITATION

The Special Jury Award for the year 2003 is given to the Directors Kadhambari Chintamani and Ajit Oommen for their film *The Lijjat Sisterhood* and Sudhakar Reddy for his silent film *Ek Aakash*.

*The Lijjat Sisterhood* documents the inspiring story of hundreds of women workers in the Lijjat papad-making, selling and exporting. Through the first person interviews ranging from the oldest to the youngest, it is a vibrant narration of a unique experiment turned famously successful.

and

*Ek Aakash* starts off as a simple rivalry of two kids from different backgrounds – in kite flying, becomes a battle of one-upmanship. Both are led by their ego and aggressive instincts, but eventually reach a point when they need others help.



## कादम्बरी चिंतामणि

कादम्बरी चिंतामणि फिल्म और टेलीविजन के क्षेत्र से सोलह वर्षों से जुड़ी हैं तथा इन्होंने मूविंग पिक्चर्स, मुद्रा न्यूज एण्ड फीचर्स एनडीटीवी और टेलीविजन बाजार जैसी अग्रणी कम्पनियों के लिए काम किया है। इन्होंने ओनिडा पिनकल पुरस्कार से सम्मानित वृत्तचित्र अपडेट तथा हाल ही में बीबीसी वर्ल्ड पर प्रसारित बिजनेस बिजारे का कार्यकारी निर्माण किया है।

## अजित ऊमन

अजित ऊमन ने विज्ञापन कॉपीराइटर के तौर पर शुरुआत की, किन्तु 1993 में ये टेलीविजन के विस्तृत कार्यक्षेत्र की ओर आकर्षित हुए तथा स्टार प्लस के लिए *इंडिया बिजनेस वीक*, बी बी सी वर्ल्ड के लिए *स्टाइल* तथा सी एन एन के लिए *इंडिया डॉट कॉम* का निर्देशन करने लगे। ये आजकल एक फीचर फिल्म की पटकथा लिख रहे हैं, एक ज्ञापन कार्यक्रम का निर्देशन कर रहे हैं।

## सुधाकर रेड्डी यक्काति

23 मार्च 1976 में जन्मे सुधाकर रेड्डी यक्काति जवाहर लाल नेहरू कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, फोटोग्राफी में तथा भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से छायांकन में ग्रेजुएट हैं।

यक्काति ने अभी तक *मसान*, *एक आकाश* तथा *रिगोर मॉर्टिस* लघु फिल्में बनाई हैं। इन्होंने वीडियो पर दो लघु फिल्में *द ओनली काइंड ऑफ लव* तथा *आकाशा* भी बनाई हैं।



## KADHAMBARI CHINTAMANI

Kadhambari Chintamani's 16 year career in the film and TV includes films and shows created for India's premier production houses like Moving Pictures, Mudra News and Features and NDTV.

She is currently Executive Producer of INTV, a New Delhi based current affairs, documentary and news television production company.

## AJIT OOMMEN

Ajit Oommen began his television career as an advertising copywriter but by 1993, the desire to do substantial television saw him move into directing current affairs and information based programmes *India Business Week* for Star Plus, *Style* for BBC World and *India dot com* for CNN.

## SUDHAKARREDDY YAKKANTI

Sudhakar Reddy Yakkanti was born on 23 March, 1976. A Bachelor of Fine Arts in Photography from the Jawaharlal Nehru College of Fine Arts, he also graduated in Cinematography from the Film and Television Institute of India, Pune.

Yaakanti has shot three short films, *Masan*, *Ek Aakash* and *Rigor Mortis*. He also has to his credit two short film on video, *The Only Kind of Love* and *Akankshaa*.

## सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म

### सती राधिका (असमिया)

निर्मात्री अंजलि दास को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशिका अंजलि दास को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

#### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म का पुरस्कार असमिया फिल्म *सती राधिका* को दिया गया है। यह फिल्म समाज सुधारक शंकर देव के जीवन पर आधारित है जिन्होंने जातीय असमानता का विरोध किया। एक मछुआरन सती राधिका ऐसा चमत्कार करती है, जो अन्य कोई नहीं कर पाता। फिल्म सामाजिक समानता के आदर्श का प्रतिपादन करती है।

## AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

### SATIRADHIKA (Assamese)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **ANJALI DAS**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **ANJALI DAS**

#### CITATION

The award for the Best Short Fiction Film of the Year 2003 is given to Anjali Das for the Assamese film *Sati Radhika* which is a popular tale relating to the great 14th century reformer Shankara Deva who stood against caste in equality. The tale narrates an allegory wherein Sati Radhika a fisherwoman performs a miraculous feat, which others cannot, thus bringing out the noble concept of social equality.

## अंजलि दास

शिवसागर नाट्य विद्यालय, असम से निर्देशन में पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा के अतिरिक्त अंजलि दास ने पारम्परिक असमिया संगीत में तीन वर्षीय डिप्लोमा किया है। इन्होंने *सिंगफोज कल्चर* तथा *घनश्याम, द आर्किटेक्ट ऑफ 1600 ए डी* वृत्तचित्रों पर काम किया है।

अंजलि दास ने *दयुतेर बीया* तथा *इपार सिपार* फिल्मों में अभिनय किया है एवं *दयुतेर बीया* की मुख्य सह निर्देशिका भी रही हैं।



## ANJALI DAS

In addition to a post-graduate Diploma in Direction from Sivasagar Natya Vidyalaya, Assam, Anjali Das has also undertaken a three-year Diploma in traditional Assamese music. She has worked on the documentaries *Singpho's Culture* and assisted on *Ghanshyam, the Architect of 1600 AD*.

Das has also acted in *Deuter Biya* and *Ipar Sipar* and worked as Chief Assistant Director on the feature film, *Deuter Biya*.

## सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

अरविन्द सिन्हा

निर्देशक अरविन्द सिन्हा को रजत कमल एवं रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार अरविन्द सिन्हा को उनकी फिल्म *काया पूछें माया से* के निर्देशन के लिए दिया है, जिसमें इन्होंने कलकत्ता के हावड़ा स्टेशन पर मानवता के प्रवाह को संवेदना एवं स्नेह के साथ प्रदर्शित किया है।

## AWARD FOR THE BEST DIRECTION

**ARVIND SINHA**

Swarna Kamal and Cash Prize of Rs. 20,000/- to the Director: **ARVIND SINHA**

### CITATION

The award for the Best Direction for the Year 2003 is given to Arvind Sinha for capturing the teeming surge of humanity in Howrah station with compassion and warmth in his film *Kaya Poochhe Maya Se*.



## अरविन्द सिन्हा

अरविन्द सिन्हा को *अजित*, *द रिक्लूज* तथा *दुई पाटन के बीच में* के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। कलकत्ता में काम कर रहे एक आठ वर्षीय बाल श्रमिक पर आधारित *अजित* 22 अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाई गई तथा सिन्हा लीपजिग फिल्म समारोह, जर्मनी 1996 के सर्वोत्तम उदीयमान निर्देशक चुने गए। फिल्म को न्यूयार्क एक्जोजीशन ऑफ शार्ट फिल्मस, 1997 का जूरी पुरस्कार भी मिला।

भारतीय शास्त्रीय वादक उस्ताद नासिर अमीनुद्दीन डागर पर आधारित *द रिक्लूज* एक सौ पचास से अधिक देशों में दिखाई गई। सिन्हा की पहली फिल्म *छाऊ बिहार-पश्चिम बंगाल सीमा* पर स्थित सेराइकेला की आदिम जाति के नर्तकों पर आधारित थी तथा भारत एवं विदेश में कई स्थानों पर दिखाई गई।

*दुई पाटन के बीच में* यह समीक्षा करती है मानवतापरक विकास ने बिहार के लाखों लोगों की आजीविका को किस प्रकार नष्ट कर दिया है।



## ARVIND SINHA

Arvind Sinha is the recipient of three National Awards for *Ajit*, *The Recluse* and *Dui Paatan Ke Beech Mein*, which won the Swarna Kamal for Best Non-feature film in 1999. His film *Ajit* about an eight-year-old boy working in a Kolkata household, participated in 22 international film festivals and Sinha was adjudged the Most Promising Documentary Filmmaker of 1996 at Leipzig, Germany. The film also received the Jury Prize at the New York Exposition of Short Films in 1997.

*The Recluse*, on the classical Indian vocalist Ustad Nasir Aminuddin Dagar was screened in more 150 countries. Sinha's first film *Chhau* about the masked dancers of tribal belt of Seraikela on the Bihar-West Bengal border, was also extensively exhibited in India and abroad.

His last film was *Dui Paatan Ke Beech Mein* is a critique of the development models that have destroyed the livelihood of millions of people in Bihar.

## सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

छायाकार रंजन पलित को *काया पूछे माया से* के लिए रजत कमल एवं रुपये 5,000/- का नकद पुरस्कार  
और

कै. जी. जयन को *द एटीन्थ ऐलीफैंट : श्री मोनोलॉग्स* के लिए रजत कमल एवं रुपये 5,000/- का नकद पुरस्कार  
और

प्रसाद फिल्म लेबोरेटरी को फिल्म *काया पूछे माया से* के लिए रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार रंजन पलित को *काया पूछे माया से* के लिए तथा कै. जी. जयन को *द एटीन्थ ऐलीफैंट* के लिए संयुक्त रूप से दिया गया है। *काया पूछे माया से* में छायाकार ने असंख्य मानवीय चेहरों को रंगों और प्रकाश-छाया चित्रण के माध्यम से अनुप्राणित कर दिया है।

और

कै. जी. जयन की कैमरा दृष्टि यथार्थ की तह तक जाती है और उसे अतिथार्थ के साथ प्रकट भी करती है।

## AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to the Cameramen: **RANJAN PALIT** for the film *Kaya Poochhe Maya Se* and **K G JAYAN** for the film *The 18<sup>th</sup> Elephant: 3 Monologues*

and

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the **PRASAD FILM LABORATORY** for the film *Kaya Poochhe Maya Se*

### CITATION

The Best Cinematography Award of 2003 is given to Ranjan Palit and K.G. Jayan.

*Kaya Poochhe Maya Se* is a cinematic observation of myriad shades of humanity and breathtaking chiaroscuro of light and shade.

and

K.G.Jayan's camera vision is a manifesto of exploring the reality, and transporting it to the surreal, to beyond the manifest.

## रंजन पलित

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से ग्रेजुएट रंजन पलित अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हैं। इन्होंने अपना कैरियर 1984 में *गोपाल : ए लाइसेंस टू किल* के छायांकन एवं सह-निर्देशन से शुरू किया। इन्होंने तब से अनेक वृत्तचित्रों पर काम किया है जिनमें चैनल 4 के लिए *बॉम्बे अवर सिटी*, *मेमोरीज ऑफ़ मिल्क सिटी*, जिसे ओवेर हाउसन फिल्म समारोह 1982 का मुख्य पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा 1989 की राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त *वायसिस फ्रॉम बलियापाल, कमलाबाई*, जिसे मुम्बई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह का सर्वोत्तम वृत्तचित्र का पुरस्कार प्राप्त हुआ। *द मैजिक मिस्टीक मार्केट प्लेस* को मुम्बई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह का 1996 का गोल्डन कौच पुरस्कार प्राप्त हुआ।

रंजन पलित को *एन द फॉरेस्ट हैंग्स ए ब्रिज* के छायांकन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। रंजन ने *कारवाँ, मतिर मोइना* इत्यादि कई फीचर फिल्मों का छायांकन भी किया है।

## के. जी. जयन

के. जी. जयन को छायांकन के लिए फिल्म एवं टेलीविजन दोनों में पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इनकी अनेक फिल्मों में *सुसन्ना*, *डैनी* तथा *पादम ओन्नु : ओरु विलापम्* शामिल है।



## RANJAN PALIT

Ranjan Palit is a graduate from the Film and Television Institute of India, Pune and a National Award winner. An internationally recognized cinematographer, Palit began his career in 1984 as co-director and cameraman of *Bhopal: A Licence to Kill*.

Since then, he has worked on several documentaries including *Bombay: Our City* for Channel 4; *Voices from Baliapal* which won the National Award for Best Film on Social Issues in 1989; *Memories of Milk City* for Channel 4 which won the Main Prize at the Oberhausen Festival in 1982; *Kamlabai*, winner of the Best First Documentary at the Mumbai International Film Festival in 1992; *The Magic Mystic Marketplace* bagged the Golden Conch at the Mumbai International Film Festival in 1996.

Palit has won the National Award for his camerawork for the film, *In the Forest is a Bridge*. He has also been the cameraman for several Indian Panorama entries like *Karavan* and international productions like *Matir Moina* directed by Tariq Masood.

## K G JAYAN

Jayan has won state awards for Cinematography in both the film and television mediums. His major work in cinema includes *Susanna*, *Danny* and *Padam Onnu: Oru Vilapam* among others.

## सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

रमेश बिराजदार

ध्वनि आलेखक रमेश बिराजदार को रजत कमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का पुरस्कार रमेश बिराजदार को बंगला फिल्म *भाबा पागला* में ऐसी ध्वनि निर्मित करने के लिए दिया गया है, जिसमें उन्मत्त भीड़ से दूर प्रकृति की मौलिक ध्वनियों और मौन के बीच एक संबंध स्थापित हो जाता है।

## AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

### RAMESH BIRAJDAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographer: **RAMESH BIRAJDAR** for the film *Bhabha Paagla*

### CITATION

The Best Audiography Award of 2003 is given to Ramesh Birajdar for the Bengali film *Bhabha Paagla* for the sound design which evokes a vision of a world far, far away from the madding crowd, which oscillates between the silences and nature's pristine sounds.



## रमेश बिराजदार

23 मई 1973 को जन्मे रमेश बिराजदार भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पूना के अन्तिम वर्ष के छात्र हैं। ये ध्वनि आलेखन में विशेषज्ञता हासिल कर रहे हैं। बिराजदार पूना विश्वविद्यालय से वास्तुकला में स्नातक हैं तथा इसी से संबंधित कार्य करते हैं। इन्होंने दो फिल्मों में कला निर्देशन का काम भी किया है।

ध्वनि आलेखन के रूप में *भाबा पागला* इनकी पहली फिल्म है।



## RAMESH BIRAJDAR

Born on May 23, 1973, Ramesh Birajdar is now a final year student at the Film and Television Institute of India, Pune. He is currently specializing in Audiography from there.

Birajdar has done his Bachelors in Architecture from the University of Pune and has also been a practising architect since. He also has the distinction of working as art director in two film projects.

*Bhabha Paagla* is his debut film as Audiographer.

## सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार

बीना पॉल

संपादिका बीना पॉल को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम संपादन का पुरस्कार बीना पॉल को मलयालम फिल्म उन्नी में संपादन द्वारा कहानी को अलंकृत और परिमार्जित करने के लिए दिया गया है।

## AWARD FOR THE BEST EDITING

**BINA PAUL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor: **BINA PAUL** for the film *Unni* (Malayalam)

### CITATION

The award for the Best Editing for the Year 2003 is given to Bina Paul for the Malayalam film *Unni* for the way she supports the eerie pace of a story that swings from here to beyond.

## बीना पाल वेणुगोपाल

दिल्ली विश्वविद्यालय से 1979 में मनोविज्ञान में ग्रेजुएट बीना ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से संपादन में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। ये अब तक 50 से अधिक फीचर तथा वृत्तचित्रों का संपादन कर चुकी हैं, जिनमें मुख्य हैं जी अरविन्दन की ऑफ द सियर हु वाक्स अलोन, राजीव जिय राघवन की सिस्टर अल्फोन्सा ऑफ भरनन्गानम्, जॉन अब्राहम की अम्मा अरियान्, पी.एन. मेनन की पाडीपुरा सुमा जोसन की जन्माधीनम्, शबनम विरमानी की वेन तुमेन यूनाइट, श्यामप्रसाद की अग्निसाक्षी वेणु की दया, रेवती की मित्र, माई फ्रेंड पामेला रूक्स की डांस लाइक ए मैन तथा राजवी विजय राघवन की मागम शामिल हैं।

बीना ने सरकार द्वारा प्रवर्तित संस्थान सेंटर फॉर डेवलपमेन्ट ऑफ इमेजिंग टेक्नोलोजी में वरिष्ठ संपादक का काम किया है। ये विज्ञान, समाज एवं विकास पर प्रथम वीडियो अंतर्राष्ट्रीय समारोह 1996 की उपनिदेशक रह चुकी हैं। करेल राज्य विकास निगम द्वारा आयोजित केरल अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह की उपनिदेशक भी रह चुकी हैं।

इन्हें वर्ष 2001 का सर्वोत्तम संपादक का पुरस्कार तथा 1994, 1998 तथा 2000 का केरल राज्य का सर्वोत्तम टी.वी. संपादक पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है।



## BINA PAUL VENUGOPAL

A graduate of Delhi University in Psychology Hons. in 1979, Bina Paul went on to do her training as Editor from the FTII in 1983.

The notable ones among them include, *The Seer Who Walks Alone* by the cinema stalwart G. Aravindan, *Sister Alphonsa* by the award-winning filmmaker Rajiv Vijay Raghavan, *Amma Ariyan* by John Abraham, *Paddipura* by P.N. Menon, *Janmadinam* by Suma Josson, *When Women Unite* by Shabnam Virmani, Shyamaprasad's *Agnisakshi*, Venu's *Daya*, *Mitr My Friend* for actress-director Revathy, *Dance Like A Man* for Pamela Rooks, and *Maargam* by Rajeev Vijay Raghavan.

Bina has also worked as Senior Editor at the Centre for Development of Imaging Technology, a government sponsored institution for the production of video documentaries.

Bina has been the Deputy Director of the International Film Festival of Kerala organized by the Kerala Film Development Corporation for the last few years.

She has been awarded the National Award for Best Editor in 2001. Bina received the Kerala State Award for the Best T.V. Editor in 1994, 1998 and 2000.

## सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

संगीत निर्देशक जूलिअस पैकिअम को रजत कमल एवं रूपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का पुरस्कार जूलिअस पैकिअम को अंग्रेजी फिल्म *फिडलर्स ऑन थ थैच* में संगीत को कहानी के मुख्य परिवेश के साथ संबद्ध करने के लिए दिया गया है।

## AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director **JULIUS PACKIAM**

### CITATION

The award for the Best Music Direction for the year 2003 is given Julius Packiam for the English film *Fiddlers on the Thatch* for creating an ambience of music that effectively works as part of the main narrative.



## जूलिअस पैकिअम

जूलिअस पैकिअम पॉप बैंड जोशीले के संस्थापक रहे हैं। इन्होंने 1990 में अपना साउंड स्टुडियो स्थापित किया। इनकी अनेक व्यावसायिक, विज्ञापन फिल्मों में पेप्सी, सचिन आला रे, पेप्सी ब्लू, पेप्सी शाहरुख, फाराह खान द्वारा निर्देशित *मैं हूँ ना का ट्रेलर*, पैनासोनिक, बॉश एंड लैब, ओपेल कौरसा, मैकडानल्ड, शुगर फ्री इत्यादि शामिल हैं।

इन्होंने टेलीविजन कार्यक्रम *एक से बढ़कर एक*, *लिविंग ऑन द एज*, *व्हीलज एंड कमांडो* का ध्वनि निर्माण किया है। इन्होंने सुप्रसिद्ध कलाकारों शुभामुदगल, दलेर मेहंदी, अनामिका, कर्श काले तथा शिबानी कश्यप की म्यूजिक एल्बम के लिए भी काम किया है।



## JULIUS PACKIAM

Julius Packiam was one of the founders of the Indipop band *Joshilay*. Packiam set up his own Sound Studio BPM in 1990. His work in television includes commercials for Pepsi, Sachin Aala Re, Pepsi Blue, Pepsi Shahrukh, the trailer for the Farah Khan directed *Main Hoon Na*, Panasonic, Bausch and Laumb, Opel Corsa, McDonald's series, Sugar Free among others.

He also has to his credit Sound work for television shows like *Ek Se Badhkar Ek*, *Living on the Edge*, *Wheels* and *Commando*. He has been working on music albums with various well-known artists – including Shubha Mudgal, Daier Mehndi, Annamika, Kersh Kale and Shibani Kashyap.

## सर्वोत्तम प्रकथन/वॉयस ओवर

बालचन्द्रन चुल्लीकाड़

प्रकथन बालचन्द्रन चुल्लीकाड़ को रजत कमल एवं रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2003 का सर्वोत्तम प्रकथन/वॉयस ओवर का पुरस्कार बालचन्द्रन चुल्लीकाड़ को मलयालम फिल्म *द एटीन्थ ऐलीफेन्ट : श्री मोनोलॉग्स* में हाथियों की वेदना को स्वर के द्वारा स्पर्श एवं मर्म प्रदान करने के लिए दिया गया है।

## BEST NARRATION / VOICE OVER

**BALACHANDRAN CHULLIKAD**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Narrator: **BALACHANDRAN CHULLIKAD**

### CITATION

The best Narration/Voice Over award for 2003 is given to Balachandran Chullikad for the Malayalam film *The 18th Elephant: 3 Monologues* for lending feel and depth to the agonies of elephants through his voice.

## बालचन्द्रन चुलीकाड़

1957 में एरणाकुलम, केरल में जन्मे चुलीकाड़ युवावस्था में 1970 एवं 80 के दशक में ही प्रसिद्ध हो गये थे और अब केरल राज्य की जानी मानी हस्ती हैं। इन्होंने फिल्मों, रेडियो नाटक, टेलीविजन धारावाहिकों में अभिनय किया है।



## BALACHANDRAN CHULLIKAD

Born in 1957, in Ernakulam, Kerala, Chullikad rose to fame as a young lad in the 1970s and '80s and is now a household name in Kerala.

He has also acted in films and radio plays, television serials and has appeared in several talk shows.

## विशेष उल्लेख

निर्णायक मंडल ने शिल्पी दासगुप्ता का *मंगली-एन एक्सोरसिऑ* के उत्कृष्ट एवं नवीनतापूर्ण निर्देशन के लिए विशेष उल्लेख किया है।

और

निर्णायक मंडल ने छायाकार असीम बोस का *वाटर* फिल्म में कमरे के माध्यम से फिल्म के विषय और प्रभावशाली बनाने के लिए विशेष उल्लेख किया है।

## SPECIAL MENTION

### SHILPI DASGUPTA and ASIM BOSE

The Special Mention for 2003 is made for innovative direction of **SHILPI DASGUPTA** for her maiden film *Mangali - An Exorcision* for the thoughtful and laudable craft that shaped the film.

and

**ASIM BOSE**, Cameraman for the English film *Water* for enhancing the impact of the film with his eloquent lens that captures the spirit of the subject of the film.



## शिल्पी दासगुप्ता

शिल्पी दासगुप्ता भारती फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से फिल्म कोर्स के अन्तिम वर्ष में है। पूना विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य की छात्रा शिल्पी ने पूना से ही मास कम्युनिकेशन (जन संचार) में मास्टर्स की डिग्री प्राप्त की है। इन्होंने *पल दो पल* फिल्म में कला निर्देशक समीर चन्दा की सहायता की है।

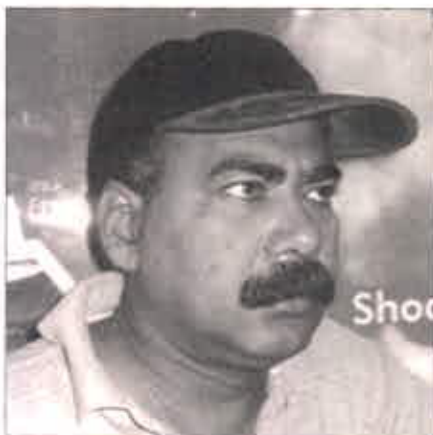
इसके अतिरिक्त दासगुप्ता के ऑल इंडिया रेडियो, भोपाल के लिए कई नाटकों में अभिनय तथा निर्देशन किया है। एफ टी आइ आइ में अपने कोर्स के अन्तर्गत लघु फिल्मों की पटकथा, निर्देशन एवं संपादन (35 एमएम तथा वीडियो) भी किया है। इन्होंने वृद्धों पर एक वृत्तचित्र *द होप* (बीटा) भी बनाया है।

## असीम बोस

मुम्बई में सहायक छायाकार के रूप में शुरुआत कर असीम बोस, दीपक दास तथा रंजीत राय के सहायक छायाकार बनने के लिए कोलकाता आये। फिर फीचर फिल्म तथा वृत्तचित्रों दोनों के लिए स्वतंत्र छायाकार बन गये। बोस ने अरविन्द सिन्हा की *द रिक्लूज*, *अजित* तथा *दुई पाटन के बीच* में का छायांकन किया। तीनों ही फिल्मों को क्रमशः 1993, 1996 तथा 1999 की सर्वोत्तम गैरकथा चित्रों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिले।

बोस बुद्धदेव दासगुप्ता की 1998 की सर्वोत्तम गैरकथा चित्र *गणेश पाइन* के साथ भी जुड़े रहे।

बोस की प्रतिभा फीचर फिल्मों में भी झलकती है। ये 1997 में रजत कमल प्राप्त पिनाकी चौधरी की *संघात*, बी. एफ. जे. ए. का सर्वोत्तम छायाकार पुरस्कार प्राप्त बुद्धदेव दासगुप्ता की *उत्तरा* (2001), 2002 की सर्वोत्तम बंगला फिल्म उर्मि चक्रवर्ती की *हेमान्तर पाखी* के छायाकार रहे हैं।




## SHILPI DASGUPTA

Shilpi Dasgupta is currently studying in her final year at the Film and Television Institute of India, Pune. A student of English Literature from Pune University, Dasgupta has also a Masters degree in Mass Communication from Pune. She has assisted Art Director Samir Chanda on his feature film *Pal Do Pal*.

In addition, Dasgupta has also performed and directed plays for All India Radio, Bhopal. She has also scripted, edited and directed short films (in 35 mm as well as video format) during her stint at FTII and has to her credit a short documentary on senior citizens, *Hope* (on Beta).

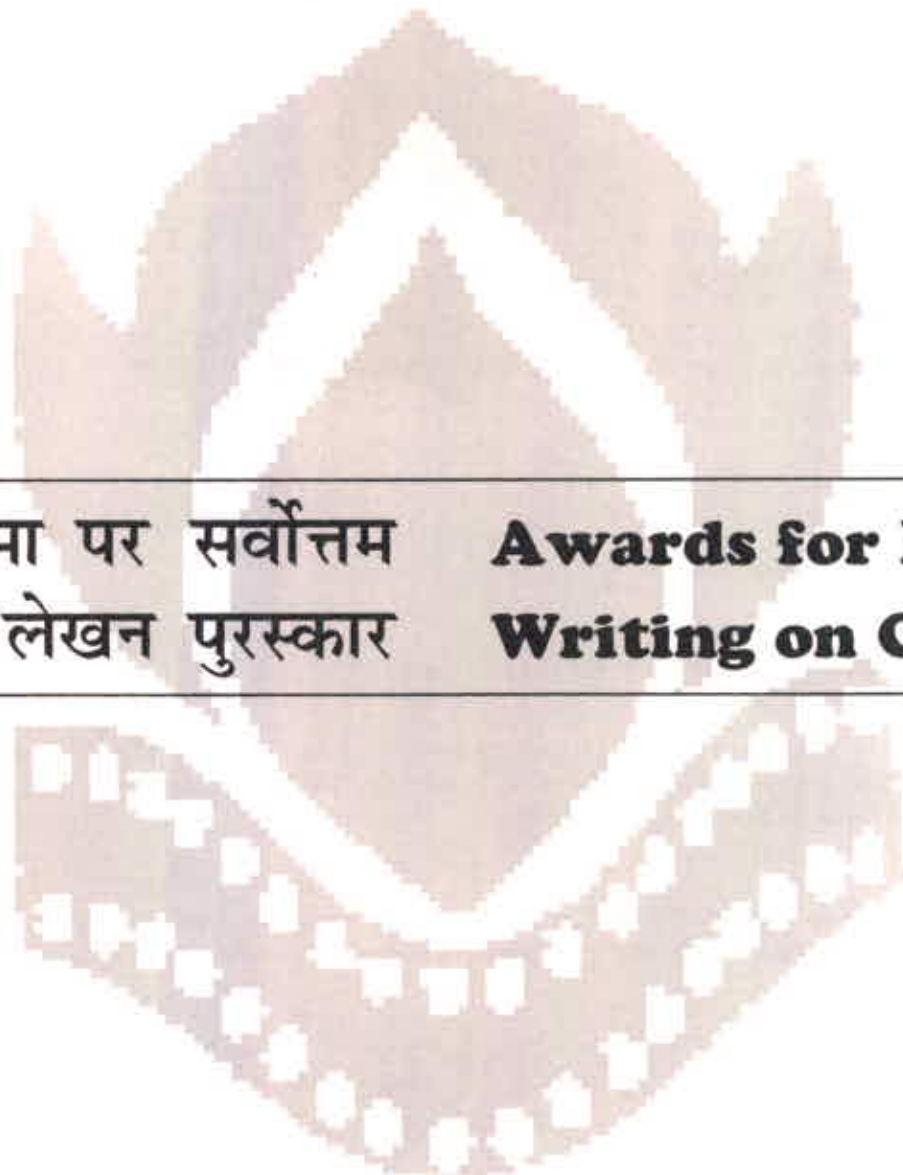
## ASIM BOSE

Asim Bose started his career as an assistant cinematographer in Mumbai and returned to Kolkata to assist Deepak Das and Ranjeet Roy in cinematography. Bose has worked with the award-winning filmmakers like Arvind Sinha on his films *The Recluse*, *Ajit* and *Due Paatan Ke Beech Mein* all three of which have won the National Awards for Best Documentary in 1993, 1996 and 1999 respectively. Bose has also been associated with Buddhadeb Dasgupta on the documentary *Ganesh Pyne* (1998). Bose has also worked as cinematographer on *Sanghat* by Pinaki Chowdhury, which won the Rajat Kamal in 1997. *Uttara* (2000) a film by Buddhadeb Dasgupta. He also worked on *Hemanter Pakhi*, a film directed by Urmil Chakraborty.



परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र  
का पुरस्कार नहीं दिया गया।

**No award has been recommended for  
Best Film on Family Welfare**



---

सिनेमा पर सर्वोत्तम  
लेखन पुरस्कार

**Awards for Best  
Writing on Cinema**

---

## सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार

प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ को स्वर्णकमल एवं 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार  
सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार 2003 *फिल्मी जगत में अर्धशती का रोमांच*  
लेखक रामकृष्ण को स्वर्ण कमल एवं 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

यह पुरस्कार लेखक द्वारा आत्मकथा के माध्यम से फिल्म जगत की अस्थिरताओं को अनुपम रूप से कालानुक्रमित करने के लिए दिया गया है। इस पुस्तक में सिनेमा के इतिहास एवं फिल्म पत्रकारिता की अभिनव प्रस्तुति है।

## AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA 2003

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 15,000/- to the publisher of the book, **BHARTIYA JNANPITH**  
Swarna Kamal and cash prize of Rs. 15,000/- to the author **RAMA KRISHNA** for the book **FILMI JAGAT  
MEIN ARDHSHTABDI KA ROMANCH**

### CITATION

The award is presented to the author for a unique style of chronicling the flip side of film personalities through his own biography. It gives an insight into the history of cinema and film journalism in a refreshingly different style.



## भारतीय ज्ञानपीठ

भारतीय ज्ञानपीठ की स्थापना के उद्देश्य उत्तम हिन्दी साहित्य को प्रोत्साहित करना है। अनेक गणमान्य साहित्यकारों के भारतीय ज्ञानपीठ से पहचान प्राप्त हुई है। हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की विशिष्ट रचनाओं को वार्षिक ज्ञानपीठ पुरस्कार भी दिया जाता है।

ज्ञानपीठ के प्रकाशन साहित्य की सभी विधाओं उपन्यास, लघुकथा, कहानी, जीवनी, यात्रा-वृत्तान्त, समालोचना, स्मृति, निबन्ध, काव्य नाटक आदि साहित्य की सभी विधाओं में मिलते हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा मासिक पत्रिका *ज्ञानोदय* भी प्रकाशित की जाती है।

## रामकृष्ण

1927 में जन्में रामकृष्ण प्रारंभ से ही पत्रकारिता में संलग्न रहे। लेखन इनका धर्म भी रहा और कर्म भी। ये उत्तर प्रदेश फिल्म पत्रकार संघ के संस्थापक तथा न्यूज फीचर्स ऑफ इण्डिया के प्रमुख संपादक रहे।

इनकी अब तक बीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अहसिक अमर, ऋतुधर और प्रद्युम्न पण्डित जैसे घदम नामों से विशद लेखन किया है।



## BHARTIYA JNANPITH

Bhartiya Jnanpith was instituted with the intention of encouraging quality publishing of Hindi books. Various eminent writers have gotten identified with the Jnanpith. The organisation has also instituted an Annual Jnanpith award which is given to outstanding works in Hindi & other regional languages.

They have brought out quality writings in almost all the literary genres prevalent in the Hindi language-including novel, short stories, fiction, biographies, travelogues, critiques, memoris, satire, essays, knowledge series, poetry and plays.

## RAMA KRISHNA

Born in November 1927, Rama Krishna since the beginning showed a keen interest in journalism. He is among the few scribes for whom writing and reportage has been their work as well as passion.

After his post-graduation, Krishna was nominated for Edward Rector Foundation Grant by D. P. University, Green Castle in USA. He has written extensively under the pseudonyms like Ansirque, Ritudhar and Pradyumna Pandit.

He has the distinction of having authored more than 20 books. Krishna is also the founder of the Journalists Association of Uttar Pradesh.

## सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक पुरस्कार 2003

फिल्म समीक्षक सैबाल चटर्जी को स्वर्ण कमल एवं 15,000/- रू० का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

यह पुरस्कार फिल्म जगत की सशक्त एवं यथार्थ समीक्षा के स्फूर्त लेखन के लिए दिया गया है ।

### **AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC 2003**

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 15,000/- to the **SAIBAL CHATTERJEE**

#### **CITATION**

The award is presented for incisive, bold and realistic criticism of the film industry couched in a refreshing style of writing.

## सैबल चटर्जी

सैबल चटर्जी 1984 से फिल्म समीक्षक एवं पत्रकार हैं। इन्होंने भारतीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सिनेमा, मीडिया तथा संस्कृति पर भरपूर लिखा है। इन्होंने कई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों तथा फिल्म संबंधी कार्यक्रमों में भाग लिया तथा उन पर लिखा है।

चटर्जी ने भारत की प्रसिद्ध जिन पत्रिकाओं एवं दैनिकों के लिए लिखा है वे हैं *द टेलीग्राफ*, कलकत्ता (1984-1990), *द टाइम्स ऑफ इंडिया*, नई दिल्ली (1990-1995), *आउटलुक* साप्ताहिक (1995-1999) तथा हिन्दुस्तान टाइम्स का ऑनलाइन संस्करण *इन्फोटेनमेंट* (2000-2003)

1999-2000 में चटर्जी मनोरंजन पत्रिका *टीवी वर्ल्ड* के संपादक तथा जी सिनेमा के फिल्मी मासिक *जी प्रीमियर* के सलाहकार रह चुके हैं। ये ब्रिटानिका के *हिन्दी सिनेमा एन्साइक्लोपीडिया* (2003) के तीन सदस्यीय संपादक मंडल में से एक थे।

ये लोकानो फिल्म समारोह 2002 के प्रकाशन *इंडियन समर : फिल्मस, फिल्ममेकर्स एंड स्टार्स* टिवीन राय एंड बॉलीवुड के लिए लिख चुके हैं तथा आजकल दो सिनेमा पुस्तकों *बॉलीवुड हॉलीवुड : द पॉलीटेक्स ऑफ क्रॉसओवर फिल्मस* एवं कवि-निर्देशक गुलजार पर आधारित *इकोज़ एंड इलोक्वेन्सेस* पर कार्य कर रहे हैं।

स्वतंत्र पत्रकार के रूप में चटर्जी हिन्दुस्तान टाइम्स डॉटकाम, बीबीसी, चंडीगढ़ का *ट्रिब्यून राष्ट्रीय* फिल्म विकास निगम की पत्रिका सिनेमा इन इंडिया तथा नेशनल रिव्यू के लिए नियमित रूप से लिखते रहते हैं।



## SAIBAL CHATTERJEE

Saibal Chatterjee has been a film critic and entertainment journalist since 1984. He has written extensively on Indian and world cinema, and the mass media and popular culture. As part of his job, he has also covered numerous international film festivals and other showbiz-related events in India and abroad.

Chatterjee has worked with well-known dailies and magazines in India. Notable among them are *The Telegraph*, Calcutta (1984-1990); *The Times of India*, New Delhi (1990-1995) and *Outlook* (1995-1999) as well served as the Infotainment Editor for the online edition of the *Hindustan Times* (2000-2003).

He was one of the three-member Editorial Board of Britannica's *Encyclopaedia of Hindi Cinema*, released in 2003. He has contributed articles to a Locarno Film Festival 2002 publication, *Indian Summer: Films, Filmmakers and Stars between Ray and Bollywood* and is currently working on two books on cinema, *Bollywood Hollywood: The Politics of Crossover Films* and *Echoes & Eloquence - a critical appraisal of the cinema of poet-filmmaker Gulzar*.

Chatterjee has been a regular contributor to the *HindustanTimes.com*, the BBC news website, *The Tribune* of Chandigarh, *Cinema in India* published by the NFDC and *National*.

## विशेष उल्लेख

निर्णायक मंडल द्वारा लेखक दीपांकर मुखोपाध्याय का फिल्मकार मृगाल सेन की प्रशंसनीय समालोचना के लिए विशेष उल्लेख किया है।

निर्णायक मंडल ने लेखक पी. एन. श्रीनिवास का फिल्म जगत की तकनीकियों एवं अन्तर्राष्ट्रीय फिल्मी हस्तियों के अनुपम प्रस्तुतीकरण के लिए विशेष उल्लेख किया है।

## SPECIAL MENTION

The Jury makes a Special Mention of **DEEPANKAR MUKHOPADHYAY** for his book *Kathapurush* for a commendable revelation of the personality of the filmmaker (Mrinal Sen).

The Jury makes a Special Mention of **P.N. SRINIVAS** for his book *Chalanchitra Nirdeshaka* (Kannada) for a unique presentation of the technicalities of filmmaking and international film personalities.



## दीपांकर मुखोपाध्याय

1950 में जन्मे दीपांकर मुखोपाध्याय दो दशकों से अधिक समय से भारतीय सिनेमा के विकास से जुड़े हैं। ये पहले फिल्म समारोह निदेशालय तथा फिर भारतीय फिल्म विकास निगम में कार्यरत रहे। कोलकाता के प्रेसीडेंसी कालेज से अंग्रेजी साहित्य के छात्र रहे मुखोपाध्याय संगीत एवं साहित्य से प्रेरित हो कर नियमित रूप से लिखते रहे। केन्द्रीय सरकार के अधिकारी मुखोपाध्याय ने विभिन्न मीडिया एककों में तीन दशकों से अधिक कार्य किया है।

इन्होंने मृणाल सेन का जीवनवृत्त *द मेवरिक साइस्त्रो* लिखा जो हार्पर कालिन्स द्वारा प्रकाशित किया गया। *कथापुरुष* इनकी प्रथम बंगला पुस्तक है जिसके लिए इनका विशेष उल्लेख किया गया है।

## पी. एन. श्रीनिवास

बंगलौर में जन्मे पी. एन. श्रीनिवास ने बंगलौर में कॉलेज की पढ़ाई की तथा अभियांत्रिकी में मास्टर किया, जिसमें इन्हें गणित के लिए स्वर्ण पदक मिला। अंतरिक्ष वैज्ञानिक के रूप में इसरो में काम करते हुए इन्होंने सुविख्यात वैज्ञानिकों डा. अब्दुल कलाम अब माननीय राष्ट्रपति प्रो. सतीश धवन और प्रोफेसर यू. आर. राव के साथ मिलकर पहले भारतीय वैज्ञानिक उपग्रह आर्यभट्ट की परिकल्पना एवं प्रक्षेपण किया। इन्होंने *स्पन्दन* (1978) *येनेबाराली प्रीति इराली* (1979) और *अभिमान* (1986) फिल्में भी बनाई हैं।



## DEEPANKAR MUKHOPADHYAY

Deepankar Mukhopadhyay (born 1950) has been associated with the development of Indian cinema for more than two decades – first with the DFF and then with the NFDC. A student of English Literature from Presidency College, Kolkata, he is also fascinated by music and literature and writes regularly on these subjects. His biography of Mrinal Sen *The Maverick Maestro* (published by Harper Collins, 1995) has been acclaimed both at home and abroad. This is his first book on cinema in Bengali.



## P.N. SRINIVAS

Born in Bangalore, P.N. Srinivas completed his college studies from Bangalore and did his Masters in Engineering, even winning a Gold Medal for Mathematics.

He also began reading on the grammar of film language. Despite no association with any filmmaker – Srinivas trained himself to learn the art of filmmaking. He has made three films *Spandana* (1978), *Yenebarali Preeti Irali* (1979) and *Abhimana* (1986).

## विशेष उल्लेख

निर्णायक मंडल ने फिल्म समीक्षक वसीराजु प्रकाशम का तेलुगु भाषा के शुष्क वातावरण में समकालीन फिल्मकारों के अथक लेखन के लिए विशेष उल्लेख किया है ।

## SPECIAL MENTION

The Jury makes a Special Mention of **VASIRAJU PRAKASAM** for introducing film personalities of parallel cinema in the parched atmosphere of Telugu filmdom.

## वसीराजु प्रकाशम्

वसीराजु प्रकाशम् हैदराबाद से प्रकाशित प्रसिद्ध तेलुगु दैनिक वार्ता के वरिष्ठ कालमनिस्ट हैं। ये पिछले चार दशकों से पत्रकार हैं तथा अंग्रेजी एवं क्षेत्रीय भाषा तेलुगु में लिख चुके हैं।

प्रकाशम् को अनेक क्षेत्रीय पुरस्कार तथा सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इन्होंने तेलुगु भाषा में भारतीय सिनेमा पर *सिने भेतलम्* पुस्तक भी लिखी है।

प्रकाशम् भारतीय सिनेमा के विस्तृत इतिहास पर, शिक्षा के क्षेत्र में सिनेमा का विशेष उल्लेख करते हुए एक पुस्तक लिख रहे हैं।



## VASIRAJU PRAKASAM

Vasiraju Prakasam is working as a Senior Columnist in the popular Telugu daily, *Vaaritha* published from Hyderabad. He has been a film journalist for the last four decades and has served both in the vernacular as well English magazines as Film Reporter and Columnist.

Prakasam has won several regional awards and is also credited with authoring *Cine Bhetalam*, a book on the Indian cinema in Telugu language.



---

कथासार : **Synopses :**  
कथाचित्र **Features Films**

---



## अबार अरण्ये

बंगला/128 मिनट/35 एमएम/रंगीन तथा श्वेत-श्याम

निर्देशन, छायांकन एवं पटकथा : गौतम घोष, निर्माता : रमेश गौधी तथा सुमिता भट्टाचार्य  
संपादन : मलय बनर्जी कलाकार : सीमित्र चटर्जी, शर्मिला टैगार, रूपा गांगुली, शुभेन्दु चटर्जी, समित भंजा, चम्पा, तबू

60 के दशक में चार शहरी युवक छुट्टियाँ बिताने के लिए पालमऊ के जंगलों में घूम रहे थे। यह दृश्य सत्यजित राय की *अरण्ये दिन रात्रि* में था। नयी सहस्राब्दी में उनमें से तीन उन दिनों की याद को ताजा करने के लिए दुबारा जंगल में जाने का विचार बनाते हैं। बहुत बदलाव आ चुका है। उनमें से एक मर चुका है और दूसरा कैसर से पीड़ित मौत के कगार पर है। इस बार उनकी पत्नियाँ और बच्चे भी साथ हैं। यहाँ तक कि जंगल भी बदल गया है क्योंकि यहाँ अब माओवादियों का आधिपत्य है और अब पर्यटकों के लिए सुरक्षित नहीं रहा। वे सब उत्तरी बंगाल के सुरम्य वनों की ओर बढ़ते जा रहे हैं।

तीनों नायक युवाकाल में सफल और मध्य अवस्था में सामान्य रहे। वे अपने विगत को फिर से जीने की चेष्टा कर रहे हैं। इनके बीच कोई अन्जान घुसपैठ हो रही है। एक युवती जिसका, प्रेमी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में मारा गया था, अपने व्यक्तिगत दुःख को इनके बीच ले आती है। बच्चे, जिनके पास पिछली यादें नहीं हैं, अपने आज में मस्त हैं।

जंगल में रहने वाली जनजाति के लोगों द्वारा बनायी गई दंसी शराब पी लेने के अतिरिक्त सब कुछ सामान्य था। सच्चाई अपने नग्न रूप में आती है। वह युवती खो गई है और फिरौती का पत्र मिलता है.....



## ABAR ARANYE

Bengali/128 minutes/35mm/Colour and B&W

**Director, Cinematography and Screenplay:** Goutam Ghose. **Producer:** Ramesh Gandhi & Sumita Bhattacharya. **Editing:** Mology Banerjee. **Cast:** Soumitra Chatterjee, Sharmila Tagore, Rupa Ganguly, Subhendu Chatterjee, Samit Bhanja, Tabu

In the '60s, four city-bred young men had wandered into the jungles of Palamau for a vacation. This was in Satyajit Ray's *Aranyer Din Ratri* (Days & Nights in the Forest). In the new millennium, three of them decide to return to the forest in a trip down memory lane.

There are major changes. One of them is dead, while another is dying of cancer. They are accompanied this time by their spouses and children. Even the forest is different because Palamau, now infested by Maoists, is unsafe

for tourists. They drive off into the more picturesque forests of North Bengal.

The three protagonists have travelled from wild youth to successful, and not so successful, middle age. They are looking to relive the past. Yet, the unknown keeps intruding especially through their offspring. Among them is a young woman who has lost her Turkish lover in the World Trade Center. Lost and lonely, she flits between the effort to relate to family and friends and the slide into personal sorrow. With no memories to haunt them, the rest of the younger crowd lives vacuously in the present.

There is nothing else that upsets the even keel of the outing except for a night of hard drinking of the country liquor brewed by the tribal communities that live on the fringes of the forest. Reality strikes in its own unusual fashion. The young woman goes missing and a ransom note is discovered...







## आकाशीतोरार कथारे

असमिया / 93 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : मंजु बोरा, निर्माता:  
संगीता तामुली छायांकन : राजु मिश्रा  
संपादन : ए. श्रीकर प्रसाद, कलाकार :  
प्रांजल सैकिया, अपर्णा दत्ता चौधरी

सामाजिक धार्मिक तंत्र एवं धर्मग्रंथों ने नारी को उच्च स्थान दिया है। किन्तु आज की वास्तविकता कुछ और ही है। न केवल आम अपितु सुसंस्कृत शिक्षित नारी भी आजकल उसी पुरुष के हाथों अपमान, अवमानना और दुःखी पा रही है, जो वास्तव में उसकी सुरक्षा के लिए है।

आकाशीतोरार की कहानी इन्हीं लाखों औरतों की कहानी है। आकाशीतोरार सुशिक्षित एवं प्रतिभाशाली युवती है, किन्तु जिस क्षण उसका आई.ए.एस. अधिकारी राघव चौधरी से विवाह हुआ, वह मात्र श्रीमती राघव चौधरी बन कर रह गई। पत्नी को अपनी सम्पत्ति समझने वाला राघव यह नहीं समझ पाता कि अब आकाशीतोरार को आगे बढ़ने और अपने मित्रों से मिलने की क्या जरूरत है। उसका पक्का विश्वास है कि श्रीमती राघव चौधरी बने रहना आकाशीतोरार के लिए काफी है। उसकी इच्छा के विरुद्ध वह स्वतंत्र होने की सोच भी कैसे सकती है।

आकाशीतोरार की कहानी हज़ारों बार सुनाई जा चुकी है, पर कोई समाधान ?

## AKASHITORAAR KATHARE

Assamese / 93 mins / 35mm / Colour

**Direction and Screenplay :** Manju Borah,  
**Producer:** Sangeeta Tamuli, **Cinematography:** Raju Mishra, **Editing:** A. Sreekar Prasad, **Cast:** Pranjal Saikia, Arpana Dutta Choudhury.

Women have had an exalted status in many of our scriptures and also across the socio-religious system. But the contemporary reality speaks a different language. It isn't the ordinary woman, but the accomplished woman who are facing insults and humiliation, unreasonable domination and suffering at the hands of the very men, who are meant to protect them.

The story of Aakashitoraar is those of millions of women throughout the world who go through a similar fate. Aakashitoraar is a highly educated, talented and ambitious young woman. But the minute she is married off to Raghav Choudhury, an IAS officer, her position in life is reduced to being only Mrs. Raghav Choudhury. She becomes her husband's sole possession. Raghav fails to understand why Aakashitoraar should continue her research and study, or why she should continue to associate with her old group of friends and guides.

He firmly believes that being his wife is enough. How can she even think of being independent is beyond his comprehension.

## अ आकारे आ

उड़िया / 95 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्माण, निर्देशन एवं पटकथा : सुभास दास, संपादन : गदाधर पूती, कलाकार : चौधरी जय प्रकाश दास, अद्याशा महापात्र

"मैं बचपन से एक आदर्श शिक्षक की खोज में थी और लंबे समय के बाद मैंने जाना कि वो मैं स्वयं थी" मिनी।

ये एक स्कूल शिक्षिका मिनी की कहानी है। परम्परागत रूढ़िवादी शिक्षातंत्र को बदलने का मिनी का प्रयास उसके अपने ही कैरियर में रोड़े अटकाता रहा। समझौता न कर पाने के कारण उसका एक स्कूल से दूसरे स्कूल में स्थानान्तरण होता रहा। उसे केवल अपने बचपन की यादों में सांत्वना मिलती। विगत और आज का संयोजन पूरी फिल्म का मूलभाव है।

मिनी आज के इस शिक्षातंत्र को स्वीकार नहीं कर पाती और अंत में त्यागपत्र दे देती है। वह एक अपना स्कूल शुरू करती है जहाँ किसी प्रकार का कोई बंधन और गुटबाजी नहीं है।



### AW, AKKARE, AA

Oriya / 95 mins / 35mm / Colour

**Direction, Production and Screenplay :** Subas Das, **Editor:** Gadadhar Puty,

**Cast:** Choudhury Jayaprakash Das, Adyasha Mohapatra

"I in my childhood had searched for an ideal teacher and in the long run I could only discover myself." Mini

This is the story of a school teacher Mini. Her efforts at changing the conventional pattern of education creates hurdles in her own career. Without being able to compromise, she is frequently transferred from one school to another. Her only solace is her childhood memory which resurfaces time and again. Throughout the film this fusion of past and present is a continuing motif.

Finally, Mini does not recognise the present educational system and resigns. She starts her own school where there are no boundaries and no regimentation.



## भाले थेको

बंगला / 122 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशन एव पटकथा : गौतम हलदर, निर्माता-  
रूपकथा छायांकन : अभीक मुखोपाध्याय संपादन :  
सुमित घोष कलाकार : सोमित्र चटर्जी, विद्या बालन,  
देवशंकर हलदर, जीय सेंगुप्ता, रिमझिम गुप्ता

एक अमिजात्य परिवार, जो शहर में किन्तु भीड़ भाड़ से दूर रहता है, की पुत्री अनादि का बत्तीसवाँ जन्मदिन है। नई दुनिया की बदलती सामाजिक व्यवस्था मानवीय मूल्यों को चुनौती दे रही है। अनेक छोटे बड़े वृक्षों से सुरक्षित इस घर में सब आपसी विश्वास और एक दूसरे के मूल्यों का सम्मान करते हैं।

अंकल ने जब तक परिवार को बाँधकर रखा है, जिसमें अनादि का बड़ा भाई रघु और छोटी बहन झिनुक है। रघु प्रतिभाशाली और भावुक किन्तु हठधर्मी है। अंकल एक कलाकार है और गीत जनका मानसिक संबल है। युवावस्था में अविभाजित कम्यूनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता रहे अंकल ने मजदूर संघ की गतिविधियों एवं संघर्षों में हिस्सा लिया, किन्तु जब पार्टी टूट गई तो वे इस परिवर्तन को स्वीकार नहीं कर पाए।

रघु अपने अंकल का सम्मान करता है, किन्तु उसकी विद्यास्थाता उनसे अलग है। वह लोगों को सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक प्रताड़नाओं से मुक्ति दिलाना चाहता है, असफल होने पर घर छोड़ कर चला जाता है। घर में सब दुःखी हैं। रघु का दोस्त बबुआ परिवार को सांत्वना देने के लिए जाता है और अनादि से प्यार करने लगता है। किन्तु वह विदेश में अच्छे अवसर को अनादि से अधिक प्रबल्य देता है और वहीं एक विदेशी से विवाह भी कर लेता है। झिनुक स्वयं को दीप के साथ सुरक्षित महसूस करती है। अनादि उपभोक्तावाद और मूल्यों पर आधारित दृढ़प्रतिज्ञता के विशेषाभास को समन्वित करने की कोशिश में है। उसे लगता है कि सुख एक मानसिक अवस्था है और उसे दर्द के साथ भी पाया जा सकता है।



## BHALO THEKO

Bengali / 122 mins / 35 mm / Colour

**Direction and Screenplay :** Gautam Haldar,  
**Producer:** Rookkatha, **Cinematography:**  
Abhik Mukhopadhyay, **Editing:** Sumit  
Ghosh, **Cast:** Soumitra Chatterjee, Vidya  
Balan, Debshankar Haldar, Joy Sengupta,  
Rimjhim Gupta.

It is the Anandi's 32<sup>nd</sup> birthday, daughter of an aristocratic family who resides near the city but far from the madding crowds. The humanitarian values are challenged by the changing social behaviour of the new world.

An Uncle is the binding force in the family which also comprises Anandi's elder brother, Raghunath and younger sister Jhinuk. Raghunath is meritorious, sensitive but uncompromising. Uncle is an artist and derives his mental stimulation from his songs. An activist of the

undivided Communist Party when he was young, The uncle had participated in several struggles and trade union activities but when the Party split, his mind did not accept the change.

Raghunath respects his uncle greatly but differs in ideology. But the mutual respect and trust remain intact between the two. He wants to free the people from all kinds of social, religious and economic oppressions which fail ultimately and he disappears. Raghunath's friend Babua who arrives to console the family falls in love with Anandi. But he chooses to leave her and go abroad because of better opportunities where he marries a foreigner.

Jhinuk finds her emotional security in Deep. Anandi, meanwhile, tries to reconcile the conflicting ideologies of consumerism and value-based uncompromising lost people. She discovers that happiness is a state of mind and that she can live with the pain.

## चोखेर बाली

बंगला/145 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : ऋतुपर्णा घोष, निर्माता: श्री वैकटेश फिल्मस छायांकन : अमीक मुखोपाध्याय संपादन : अर्घ्य कमल मित्रा, कलाकार : ऐश्वर्या राय, प्रसेनजित चटर्जी, राइमा सेन, तोता राय चौधरी, लिली चक्रवर्ती

*चोखेर बाली* रवीन्द्रनाथ टैगोर के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित है। फिल्म की पृष्ठभूमि 1902-05 का अविभाजित बंगाल है, जब राज्य में समाहित विभाजन की हलचल अपनी चरमसीमा पर थी। यह जमींदार परिवार में मानवीय एवं यौन संबंधों की कहानी है। महेन्द्र एक बिगड़ा हुआ युवक है। बिहारी उसका अंतरंग मित्र है। दोनों डाक्टर बनने के लिए पढ़ रहे हैं। महेन्द्र की माँ राजलक्ष्मी महेन्द्र की शादी सुंदर एवं सुरील बिनोदिनी के साथ करना चाहती है, किन्तु सनकी महेन्द्र इसके लिए मना कर देता है और बिहारी भी। बिनोदिनी की शादी किसी और से होती है किन्तु यह एक ही साल में विधवा हो जाती है।

महेन्द्र आशालता से शादी करना चाहता है, जिसकी बिहारी से सगाई हो चुकी थी। स्वभाविक है दोस्त होते हुए भी उनमें प्रतिस्पर्धा थी। महेन्द्र चाहता था बिहारी झुक जाए और ऐसा हुआ भी। महेन्द्र की माँ इस शादी से खुश नहीं थी। नाराज होकर वह अपने मायके चली जाती है। वहाँ एक बिनोदिनी से मिलती है और उसे अपने साथ कलकत्ता ले आती है। शहर में बिनोदिनी महेन्द्र और बिहारी से मिलती है। वह जीवन में क्या खो चुकी, जानती थी फिर भी उसका मन में आशालता के प्रति ईर्ष्या है कि जो उसे न मिल सका वह आशा को मिला।

बिनोदिनी को वैधव्य से नफरत है। वह महेन्द्र और बिहारी के निकट जाने के लिए आशालता से छल करती है।



### CHOKHER BALI

Bengali/145 minutes/35mm/Colour

**Direction and Screenplay :** Rituparno Ghosh, **Producer:** Shree Venkatesh Films, **Cinematography:** Abhik Mukhopadhyay, **Editor:** Arghya Kamal Mitra, **Cast:** Aishwarya Rai, Prosenjit Chatterjee, Raima Sen

Adapted for the screen from Nobel laureate Rabindranath Tagore's novel of the same name, *Chokher Bali* is a period film set in undivided Bengal, 1902-1905, when the raging political turmoil over the proposed partition of the province was at its peak. It is a psychological study of relationships between the sexes in a landed family.

The story revolves around four young people, two men and two women. Mahendra (Prosenjit) is a spoilt young dandy. His closest friend is Behari (Tota Raychowdhury). The two young men are studying to become doctors. Mahendra's mother, Rajlaxhmi (Lily Chakraborty), has a girl in mind for his marriage. The girl, Binodini (Aishwarya Rai) is beautiful and accomplished but the whimsical Mahendra refuses to marry her. So does Behari. Binodini, therefore, finds another husband only to be widowed within a year.

Mahendra finally settles down with Ashalata (Raima Sen), a girl who was originally engaged to Behari. It is obvious that, despite their closeness, there is a spirit of competition between the two men. Mahendra wants what Behari has and expects Behari to give in to him. Mahendra's mother, unhappy with his marriage, storms out of the house and takes refuge in her childhood home.

There, she meets Binodini and impulsively brings her back to Calcutta with her. In the city, Binodini meets the young men who she might have married. She is keenly aware of the life she has lost and resents the fact that the naïve Ashalata has what she cannot.

Binodini, condemned to the deprived life of a widow shrouded in white, begins to manipulate Ashalata in order to get closer to the young men...



## डांस लाइक ए मैन

अग्नेजी/101 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशन : पामेला रूक्स, निर्माता: राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम रूक्स ए.वी. पटकथा : पामेला रूक्स, महेश दत्तानी, छायाकन: सनी जोसेफ संपादन : बीना, कलाकार : शोभना, अरिफ जकारिया, अनौष्का शंकर, समीर सोनी, मोहन आगाशे।

रत्ना और जयराज भरतनाट्यम के नर्तक रहे हैं। वे बंगलूर के एक बंगले में रहते हैं जो जयराज के पिता अमृतलाल पारेख का है। युवा दम्पती ने बहुत चुनौतियों का सामना किया है। आर्थिक रूप से अमृतलाल पर निर्भर होने तथा उनके साथ एक ही छत के नीचे रहने के कारण वे प्रायः उनके कोपभाजन बना करते थे। अमृतलाल, जिनका नृत्य के विषय में ज्ञान कम था, का विश्वास था कि भरतनाट्यम केवल वेश्याओं के लिए है। किसी भी स्वामिमानी व्यक्ति, विशेषकर पुरुष को तो इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहिए।

दो दशकों बाद जयराज और रत्ना का अपने कष्टप्रद विगत से फिर सामना होता है, जब उनकी बेटी लता को अपना पहला नृत्य प्रस्तुत करना होता है। लता अपने मंगेतर विशाल को मिलाने के लिए लेकर आती है। अपने से बिल्कुल असंबद्ध वातावरण पाकर विशाल परिवार के आपसी संबंधों और पीढ़ियों के अन्तर्विरोध की जानकारी का माध्यम बनता है।

*डांस लाइक ए मैन* समकालीन भारतीय समाज का सही चित्रण है। विगत और आज, सुख और दुःख, के द्वन्द्व में हम समझ नहीं पाते कि रोयें या हँसे।



### Dance Like A Man

English / 101 mins / 35mm / Colour

**Direction :** Pamela Rooks, **Producer:** NFDC, Rooks A.V., **Screenplay:** Pamela Rooks, Mahesh Dattani **Cinematography:** Sunny Joseph, **Editing:** Bina, **Cast:** Shobana, Arif Zakaria, Anoushka Shankar, Samir Soni

Ratna and Jairaj, two dancers past their prime, are exponents of the classical Indian dance form called Bharatnatyam. They live in an antique-filled mansion in Bangalore that once belonged to Jairaj's authoritarian father, Amritlal Parekh. As a young couple, Ratna and Jairaj faced many challenges. Being financially dependent on Amritlal and living under his roof, they were often exposed to his ire. Amritlal believes like many that "Bharatnatyam was the craft of prostitutes." In his opinion, no self-respecting

person, let alone a man, should perform such a dance.

Some two decades later, Jairaj and Ratna are now forced to confront their troubled past as Lata, their daughter prepares for arangetram. Into this memory-laden house, Lata brings her fiancé Vishal to meet her parents. Exposed to an environment alien to his own, Vishal acts as a catalyst to reveal the dark secrets of the family's inter-personal relationship and its generational conflicts.

*Dance like a Man* is a powerful human drama which also provides an insight into the contemporary Indian social scene. In an interplay of past and present, the tragic and comic bleed into each other so that you are never sure whether to laugh or cry.

## एन्टे वीडू अपून्ते

मलयालम / 140 मिनट / 35 एम एम / रंगीन

निर्देशक : सिबी मलायिल, निर्माता : प्रेम प्रकाश  
पटकथा : बीबी एवं सजय, छायांकन : वेणुगोपाल  
संपादन : एल. भूमिनाथन, कलाकार : जयराम,  
ज्योतिर्मयी तथा कलिदास

विश्वनाथ का एक आदर्श परिवार है, जिसमें उसकी पत्नी मीरा और बेटा वासुदेव हैं। मीरा सौतेला होते हुए भी वासु को बहुत प्यार करती है। वासु बहुत छोटा था जब उसकी माँ की मृत्यु हो गई। वासु दो वर्ष का हुआ तो विश्वनाथन ने मीरा से विवाह कर लिया। मीरा एक पुत्र को जन्म देती है, वासु बहुत खुश होता है और प्यार से माई का नाम अप्पू रखता है। धीरे-धीरे वासु स्वयं को उपेक्षित महसूस करने लगता है और एक दिन अप्पू पर क्रीटनाशक छिड़क देता है। बच्चा मर जाता है। पूरा परिवार दुःखी होता है। वासु को बहुत दुःख होता है और माँ सामने अपना अपराध स्वीकार कर लेता है। माँ उसे माफ कर देती है। लेकिन पोस्टमार्टम रिपोर्ट से बच्चे की अपाकृतिक मृत्यु का पता चल जाता है। घूर्त एवं चालाक पुलिस अधिकारी वासु को पकड़ लेता है और बाल अपराधीगृह में बंद कर देता है।

बंदीगृह में वासु को सताया जाता है किंतु उसके माता-पिता असहाय हैं। आखिर एक काउन्सलर वासु की दुःखिता को समझता है। घर से भी प्यार भरे पत्र आते रहते हैं और वासु सामान्य हो जाता है। इस बीच मीरा फिर माँ बनने वाली है।

वासु बहुत खुश है, क्योंकि वह रिहा होने वाला है। रिहाई से पूर्व उसे बंदीगृह में ही एक प्रांतीय युवक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलता है, किंतु यहाँ उसका तिरस्कार होता है, जिससे वह आहत होकर घर लौटता है। मीरा नवजात शिशु के साथ वासु का इंतजार कर रही है और आशंकित भी है कि वासु ऐसी मनोदशा में इस समाचार को कैसे लेगा। वासु ने छोटे भाई का दिल खोलकर स्वागत किया और उसका नाम अप्पू रखा, घर में सभी इससे खुश हैं।



### ENTE VEEDU...APPOONTEM

Malayalam/140 minutes/35mm/Colour

**Director:** Sibi Malayil, **Producer:** Prem Prakash, **Screenplay:** Bobby and Sanjay, **Cinematography:** Venugopal, **Editing:** L. Bhoominathan, **Cast:** Jayram, Jyothirmayee and Kalidas.

Vishwanathan's family is picture perfect with his wife Meera and son Vasudev. Meera dotes on her son though she is his stepmother. Vasu is well aware of this but it has never affected his relationship with Meera. They share an unusual bond and are the best of friends. When Meera gives birth to a son, Vasu is happiest and names him Appu. But slowly, Vasu feels that Appu is getting all the attention and he becomes restless.

One day when he feels neglected, he sprays the pesticide on little Appu. The baby dies leaving the whole family in a state of shock. Vasu cannot get out of the shock and confesses

to his mother. She forgives him. But when the post mortem reports confirm that the death is unnatural, a shrewd and sadistic police officer Chandran investigates and takes Vasu into custody. He is taken for trial and sentenced to imprisonment in the Juvenile Home for a year and-a-half.

The parents are helpless, while Vasu goes through hell at the Juvenile Home. But the counselor at the home understands Vasu's dilemma. The bond between the two and the letters and visits from home bring Vasu gradually back to his normal self. Meanwhile, Meera gets pregnant and the parents keep the news from Vasu. They plan to give him a pleasant surprise when he is back home.

At home, Meera waits for Vasu with the newborn baby. Everybody is apprehensive about how the boy is going to take the news in such a state of mind. But to everyone's delight, he wholeheartedly accepts and names him Appu.



## इयरकई

तमिल / 145 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशक: एस. पी. ज्ञानानाथन निर्माता :  
प्राइसम फिल्मस पटकथा : एन. कल्याण  
छायांकन : के. अहम्बराम संपादन : वी.  
टी. विजयन कलाकार : शाम, राधिका, अरुण,  
सीमा, विरवास, पशुपति

मरुत का जहाज एक छोटे से बन्दरगाह पर पहुँचता है वह देखता है कि लाइट हाउस पर एक लड़की जहाज का बेसब्री से इंतजार कर रही है। जैसे ही जहाज लंगर में डाला जाता है, नेन्सी नाविक से मिलने दौड़ती है, किंतु जिसे वह दूँद रही है उसे ना पाकर निराश हो जाती है। धीरे-धीरे वह मरुत के बारे में काफी कुछ जानने लगती है कि मरुत को समुद्र की बहुत जानकारी है और उसने बहुत यात्राएँ की हैं। वह उससे अकेले में मिलने की बहुत कोशिश करती है किंतु मिल नहीं पाती।

एक दिन मौका मिलने पर वह मरुत को बताती है, कि तीन वर्ष पहले एक जहाज का कप्तान आया था, जिसने लौटकर आने का वचन दिया था, किंतु नहीं आया। वह मरुत से पूछती है कि क्या वह ऐसे किसी व्यक्ति को जानता है, मरुत इससे इन्कार करता है और उसे सलाह देता है कि उसे कप्तान की इंतजार छोड़ किसी से शादी कर लेनी चाहिए। इस पर नेन्सी गुस्सा हो जाती है।

मरुत कहता है कि वह उस कप्तान को ढूँढने की कोशिश करेगा। नेन्सी को उसका सहयोग अच्छा लगता है और उसे पता ही नहीं चलता कि वह उसकी ओर आकर्षित होने लगी थी। मरुत भी उसकी तरफ आकर्षित था।

मरुत की कोशिशों से पता चलता है कि वह कप्तान एक जहाज दुर्घटना में छः महीने से लापता है। कप्तान के दोस्त नेन्सी को बताते हैं कि कप्तान संभवतः मर चुका है। नेन्सी की आँटी उसे मरुत से शादी करने की सलाह देती है? नेन्सी दुविधा में है, कि वह क्या करे?



## EYARKAI

Tamil / 145 mins / 35 mm / colour

**Director:** S. P. Jhananathan, **Producer:**  
**Prisem Films, Screenplay:** N. Kalyan,  
**Cinematography:** K. Ahambaram, **Editor:**  
V.T. Vijayan, **Cast:** Shaam, Radhika, Arun,  
Seema Biswas, Pasupathy

As Marudhu's ship sails into a small harbour, he spots a young girl atop a light house eagerly awaiting the ship's docking. As the ship puts in anchor, Nancy – the young girl, runs out to meet the sailors. But she is disappointed to find that the person she is looking for is not there that ship. As days pass, she comes to

know a lot about Marudhu – that he is a knowledgeable seaman and widely traveled. She tries to meet him alone a couple of times but is unable to manage it.

But upon getting a chance to be with him one day, she tells him about a Captain of a ship who had visited the port three years ago and who had promised to be back for her. But he hasn't returned. She enquires of Marudhu if he has heard of such a man. Marudhu replies in the negative and advises that she not wait for him anymore and get married and move on in life. She angry with him for giving unsolicited advice.

Marudhu informs her that he will try and locate the Captain and over the next few days as he goes

about making enquiries, Nancy appreciates his helpfulness and is attracted without to him without realizing it. He also tells her that he is attracted to her. She asks him how he could tell her he loved her when he knows that she loves another.

Marudhu's efforts yield result, but it is found that the Captain has been missing for the last six months following an accident of his ship. His friend informs Nancy that the Captain is presumed dead. Her aunt suggests that Nancy marry Marudhu. She is confused. What should she do?

## गंगाजल

हिन्दी / 160 मिनट / 35 एम एम / रंगीत

निर्देशन, पटकथा एवं संपादन : प्रकाश झा  
निर्माता : एन्टरटेनमेंट वन तथा प्रकाश झा छायांकन:  
अरविन्द के. कलाकार: अजय देवगन, ग्रेसी सिंह,  
मोहन जोशी, यशपाल शर्मा, अखिलेश मिश्रा

अमित एक इमानदार पुलिस अधिकारी है, जो अपनी पत्नी की इच्छा के विरुद्ध एक छोटे से जिले तेजपुर में नियुक्ति स्वीकार कर लेता है। उसका लक्ष्य है, पुलिसतन्त्र को भ्रष्टाचार से मुक्त करना।

तेजपुर पहुँचने पर उसे पता चलता है कि पूरा पुलिसतन्त्र कुछ भ्रष्ट अधिकारियों, जिन्हें साधु यादव और उसके बेटे सुन्दर यादव का संरक्षण प्राप्त है, के चंगुल में है। अमित सारे मामलों को सुलझाने की कोशिश करता है, चाहे वह अपूर्वा का अपहण का मामला हो या सुन्दर यादव के अतरंग मुन्ना ठाकुर और केशरी दलाल को अंधा किया जाना। तेजपुर के निवासियों के अनुसार पुलिस का पाप अपराध करने का सबसे कारगर उपाय है। अपराधी को एसिड द्वारा अंधा करना, एसिड यानि पवित्र गंगाजल जो समाज की खोई हुई गरिमा को पुनः स्थापित करेगा।

अमित इस केंस की जड़ तक जाने के लिए कटिबद्ध है। मुन्ना और केशरी के बयान के आधार पर अमित अपराधी अधिकारियों को पकड़ लेता है। इसी बीच सुन्दर बदला लेता है और एक पुलिस इंस्पेक्टर की हत्या कर देता है। अमित सुन्दर को पुलिस हिरासत में लेने में सफल हो जाता है। गृहमंत्री केंस की छानबीन के लिए जाँच कमेटी नियुक्त करते हैं।

सुन्दर पुलिस से छूटने पर अपूर्वा पर आक्रमण करता है तथा उसके घर को मार डालता है। अपूर्वा वहीं आत्महत्या कर लेती है। दुल्हा - दुल्हन की मृत्यु से क्रोधित शादी में जुटे मेहमान बदला लेने की चेष्टा करते हैं। अमित उन्हें रोकता है, क्योंकि अभी भी कानून में आस्था है। बाप - बेटे को पुलिस के हवाले किया जाता है। पुलिस हिरासत से भागने की चेष्टा में दोनों अमित के हाथों मारे जाते हैं।

जाँच कमेटी किसी नतीजे पर नहीं पहुँचती। कोई इंस्पेक्टर अपराधी नहीं पाया जाता। सबकी पुनः बहाली हो जाती है।



## GANGAAJAL

Hindi/160 mins/35mm/Colour

**Direction, Screenplay and Editing :** Prakash Jha, **Producer:** Entertainment One and Prakash Jha, **Cinematography:** Arvind K., **Cast:** Ajay Devgan, Gracy Singh, Mohan Joshi, Yashpal Sharma, Akhilendra Mishra.

Gangaaajal is a story about a young and honest police officer Amit Kumar (Devgan) who takes a posting to a small district of Tejpur as the SP against the wishes of his wife Anuradha (Singh). His mission is to clean up the system and curb corruption.

On reaching his district, he learns that the whole system is uprooted by some corrupt officers who have a strong backing from Sadhu Yadav (Mohan Joshi) and his son Sunder Yadav (Yashpal Sharma).

Amit tries his best to curb the disturbances that are being raked up all over town, whether it is kidnapping of a young girl, Apoorva or the blindings of Munna Thakur and Kesari Dalal - who are Sunder Yadav's cronies by

cops. According to the inhabitants of Tejpur, blinding is the best way to curb the growing crime rate. Acid is perceived to be Gangaaajal (holy water) to bring back the lost spirits into the fold of society.

Amit is determined to get to the root of the blindings. The blinded duo make their statements and Amit confronts the guilty officers. In the meantime, Sunder takes revenge and kills one of the inspectors. Amit now begins gunning for Sunder to bring him to book. He manages to remand Sunder to be Police custody, even as the Home Minister (an ally of Sadhu Yadav) sets up an enquiry committee to investigate the blindings.

Sunder upon release attacks Apoorva - the girl he had kidnapped once- and kills the groom. While he commits suicide. As the wedding guests turn on Sunder and Sadhu to take revenge for the couple's death, Amit steps in to stop the crowds because he still believes in the sanctity of the law. The father-son are handed over to the police but attempt to escape, whereupon they both are killed by Amit himself.



## जूये पूरा हून

असमिया / 105 मिनट / 35 एम एम / रंगीन

निर्माता, निर्देशक एवं पटकथा : संजीव  
सभापंडित छायांकन : मृणाल कांतिदास संपादन:  
ए श्रीकर प्रसाद कलाकार : जतिन बोरा, बीना  
पंतमिया, मास्टर निशान्त बरूआ

जूये पूरा हून की कहानी बीसवीं शताब्दी के  
उत्तरार्ध में असम में घटित घटना पर आधारित है।  
27 वर्षीय मानव घर से, जिसमें बड़ा भाई कोसेस्वर,  
भाभी प्रभा, भतीजा और भतीजी हैं, पत्र आने पर  
कि वे लोग मुसीबत में हैं, अपने घर लौटता है।  
उसी रात भूमाफिया के लोग और अवैध अप्रवासी  
मिल कर उनके घर पर हमला करते हैं। भयभीत  
होकर ये लोग भागकर प्रभा के पिता के यहाँ आ  
जाते हैं जो इन्हें नदी किनारे रहने के लिए एक  
भूखण्ड भी दे देते हैं।

मानव अपने सलाहकार जैन साहब, जिनके साथ  
वह इन दिनों काम कर रहा था, की मदद से  
अपनी जमीन के बचाव के लिए जाता है। उधर  
कोसेस्वर और उसका नया घर बाढ़ में बह जाते  
हैं। पूरी तरह से टूट चुकी प्रभा एक विधुर के घर  
में बाई का काम करने लगती है।

जैन मानव के सामने एक नई फैक्टरी में नौकरी  
का प्रस्ताव रखता है, जहाँ स्थानीय नवयुवकों  
द्वारा रोजगार की माँग को लेकर आंदोलन होने  
की संभावना है। प्रभा और मानव अपनी अपनी  
जगह संघर्ष करते हुए अपनी अन्तः प्रेरणा से ही  
प्रतिकूलताओं से जूझना सीख रहे हैं।



## JUYE POORA XOON

Assamese/105 minutes/35mm/Colour

**Director, Producer and Screenplay:** Sanjib Sabhapandit, **Cinematography:** Mrinal Kanti Das, **Editing:** A. Sreekar Prasad, **Cast:** Jatin Bora, Bina Patangia, Master Nishanta Baruah

Manab, 27, comes home from Rajasthan after receiving a letter that his family (comprising an elder brother Koseswar, a sister-in-law Prabha, a nephew and niece) is facing some difficulty. On the very night that he arrives, suspected land-grabbers and illegal immigrants torch their house. They flee and arrive at the home of Prabha's father, who offers them a plot of land by the riverside. The family accepts the offer.

Manab goes to salvage the abandoned land with the help of his mentor, Mr Jain, under whom he had been working all this while. While Manab is away on the mission, Koseswar and his newly built house perish in swirling floods. A shattered Prabha finds a job as a domestic help.

The struggles of Prabha and Manab run a parallel course and both learn to cope with adversities by letting their inner self guide them.

## कल हो ना हो

हिन्दी / 186 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशक : निखिल अडवानी, निर्माता : करण जोहर, यश जोहर पटकथा : करण जोहर, छायांकन : अनिल मेहता संपादन : संजय सक्ला, कलाकार : शाहरुख खान, साैफ अली खान, जया बच्चन, प्रीति जिन्टा, सुष्मा सेठ

एक पारिवारिक त्रासदी के कारण नैना कैथरीन कपूर (प्रीति जिन्टा) की जिन्दगी उदास, नीरस और रंगहीन है। वह अपने छोटे भाई और बहन का ध्यान रखती है। माँ (जया बच्चन) की आर्थिक तंगी में मदद करती है। पंजाबी - कैथलिक परिवार में छोटी माँटी आन्तरिक कलह और दादो का गुस्सा चलता रहता है। नैना के पास पार्टी मोजमस्ती और दोस्तों के लिए समय नहीं है। वह तेईस साल की होकर पचास की लगती है।

तभी उनके पड़ोस में अमन माधुर (शाहरुख खान) एक ताजी हवा के झोंके की तरह आता है। वह समस्याओं को सुलझाने और जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सबकी मदद करता है। यह कह सकते हैं कि अमन के पास हर बात का जवाब है। नैना चिढ़ती है, वह फिर भी उसकी जिन्दगी में दखलअंदाजी करता ही रहता है। अमन नैना से वह सब करवा लेता है, जिसकी उसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी।

वह उसे तब तक परेशान करता रहता है, जब तक वह मुस्कुराना नहीं सीख जाती। अमन नैना के दोस्त रोहित (साैफ अली खान) के साथ मिलकर नैना की जीवन भी की खुशियों का पक्का प्रबंध कर देता है। वो यह सब इसलिए कर रहा है, क्योंकि उसके स्वयं बहुत थोड़ा समय बाकी है। कैंसर से पीड़ित वह जानता है कि शायद उसके पास कल हो ना हो।

कल हो ना हो अमन, रोहित और नैना के सफर की कहानी है। उन्होंने साथ साथ जीवन में मिलकर चलना, प्यार करना और हँसते हँसते मुश्किलों का सामना करना सीखा।



## KAL HO NAA HO

Hindi / 186 mins / 35mm / Colour

**Director:** Nikhil Advani, **Producer:** Karan Johar, Yash Johar, **Screenplay:** Karan Johar, **Cinematography:** Anil Mehta, **Editing:** Sanjay Sankla, **Cast:** Shahrukh Khan, Saif Ali Khan, Jaya Bachchan, Preity Zinta, Sushma Seth, Lillete Dubey.

For Naina Catherine Kapur (Preity Zinta) life is cold, grey and full – as it has ever

been since a family tragedy shook her world. In between the constant bickering in her half-Punjabi-half Catholic household, her grandmothers' temper, looking after her little sister and brother and helping her mother (Jaya Bachchan) deal with the family's financial troubles – Naina has no time for things like parties, fun or boyfriends. She is 23 going on 50, she is serious and she is boring.

Enter Aman Mathur (Shahrukh Khan). He moves into their tiny Indian neighbourhood to take it over, helping others resolve their problems and face life's little challenges. In short, Aman has all the answers. Much to Naina's irritation, he insists on interfering in her life too.

Aman pushes her to do things that she would never dream of doing. He nags her till learns to smile, he conspires with her friend Rohit (Saif Ali Khan) an eligible Manhattan bachelor to help her find happiness. And he does this all because his own time is limited and he realises that there may be no tomorrow.

*Kal Ho Naa Ho* is the story of Aman, Rohit and Naina's journey together. It is about how they discover themselves, find the courage to love and come together to celebrate life.



## कोई मिल गया

हिन्दी / 166 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशक एवं निर्माता : राकेश रोशन, पटकथा: सचिन भोमिक, हनी इरानी, रॉबिन भट्ट तथा राकेश रोशन छायांकन : रवि के चन्द्रन, समीर आर्य, संपादन : संजय वर्मा कलाकार : ह्रितिक रोशन, प्रीति जिन्टा, रेखा, जॉनी लीवर

संजय मेहरा एक वैज्ञानिक है, जिसे दूसरे ग्रहों पर जीवन के बारे में खोज करने का जुनून है। आखिरकार वह एक कंप्यूटर बनाने में सफल हो जाते हैं, जिससे अंतरिक्ष में संदेश भेजे जा सकते हैं, किन्तु बताने पर वह अपने ही लोगों के बीच ईंसी का पात्र बनते हैं। एक दिन घर लौटते हुए वे एक उड़नतट्टरी को देखते हैं, उत्तेजित होकर अपनी कार पर नियन्त्रण खो बैठते हैं तथा दुर्घटना में मारे जाते हैं। उनकी गर्भवती पत्नी भी उनके साथ थी, जो स्वयं तो बच जाती है, किन्तु उसके गर्भस्थ शिशु के मरिस्थक को चोट पहुँचती है। वह नियत समय से पूर्व एक बच्चे को जन्म देती है, जो शरीर से तो स्वस्थ है किन्तु मानसिक रूप से नहीं – एक युवक शरीर में एक बच्चा कैद है।

रोहित अपने सहपाठियों के बीच ईंसी का पात्र बना रहता है, क्योंकि सब आगे बढ़ चुके हैं और वह अभी तक सातवीं कक्षा में ही है। इन सबके बीच उसके पाँच छः दोस्त भी हैं और निशा है जो उसके भोलेपन को पसन्द करती है।

एक दिन रोहित अपने पिता के कंप्यूटर के साथ खेलते हुए अन्जाने में ही अन्तरिक्ष में संदेश भेज देता है, प्रतिक्रिया होती है और रोहित के शहर में एक उड़नतट्टरी उतरती है जिससे सब उत्सुक हो जाते हैं। इस चमत्कार को देखने के लिए दुनिया भर से वैज्ञानिक इकट्ठे होते हैं, पता चलता है कि उड़नतट्टरी में से उतरे प्राणियों में से एक को लौटने के पदचिह्न नहीं मिलते। धरती पर छूट गए अन्तरिक्ष के इस प्राणी की तलाश शुरू होती है।

अन्ततः वह रोहित को मिलता है, वह रोहित का दोस्त साबित होगा या दुश्मन ?



## KOIMIL GAYA

Hindi/166 minutes/35 mm/Colour

**Director and Producer :** Rakesh Roshan, **Screenplay:** Sachin Bhowmick, Honey Irani, Robin Bhatt and Rakesh Roshan **Cinematography:** Ravi K. Chandran, Sameer Arya, **Editing:** Sanjay Verma, **Cast:** Hrithik Roshan, Preity Zinta, Rekha, Johnny Lever.

Sanjay Mehra is a scientist obsessed with his work conducting extensive research about forms of life on other planets. He is finally able to devise a computer that can communicate with other worlds in outer space but members of his own fraternity ridicule him when he goes to inform them.

On way back home, he sights a UFO but unfortunately meets with an accident and dies on the spot. His wife who is pregnant at the time and in the car with him is thrown out of the vehicle. Though she is alive, the foetus' brain gets damaged and she gives birth to a

premature child who grows physically but is born mentally challenged – a child who is trapped in the growing body of a young man.

Rohit becomes the butt of his schoolmates jokes as he continues to remain in class seven, while the rest of them move ahead. But amid all these ridiculing people, there are those who root for him – like his bunch of five-six friends and Nisha, who loves him for his innocence and befriends him.

One day, Rohit inadvertently sends off communication signals to the outer space. A response is generated and a spaceship lands in Rohit's town, generating a lot of speculation. As the phenomena is explored, it is discovered that one sets of footprints of those who came down from the spacecraft do not return, and a hunt is launched to find out who has been left behind.

Is he a friend or a foe to Rohit who finally finds him?

## मार्गम

मलयालम/108 मिनट/35 एम एम/रंगीन

निर्माता, निर्देशक : राजीव विजय राघवन  
पटकथा : एस.पी. रमेश, अनवर अली, राजीव  
विजय राघवन छायांकन : वेणु संपादन :  
बीना पॉल कलाकार : नेडुमुडी वेणु, मीरा  
कृष्णा, के पी ए सी ललिता, वल्सला मेनन

केरल 1957 में लोकतान्त्रिक प्रणाली से चुनी गई  
साम्यवादी सरकार वाला दुनिया का पहला राज्य  
है। छठे और सातवें दशक में बहुत से सदस्य  
पार्टी से टूट कर वाम मोर्चे की ओर उन्मुख होते  
रहे, किंतु उनकी क्रांति की आशा घूमिल होती  
रही।

वेणु मेनन एक ऐसे ही असफल क्रांतिकारी थे।  
मेनन एक शहीद जॉय साइमन की अनाथ बहन  
से विवाह करता है और शहर में एक अध्यापक  
की नौकरी कर लेता है। रोमन कैथलिक पत्नी  
पुत्री, बेन्नी का चरण - पोषण अपने धर्मनुसार  
करती है। उच्च हिन्दु मातृपरक परिवार में जन्मा  
मेनन अपने गत मार्क्सवाद के प्रति निष्ठा रखता  
है किंतु रूढ़ नहीं है। बेटी धार्मिक प्रतिबद्धताओं  
से मुक्त नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। मेनन  
प्रायः खिन्न रहता है। पिता की मदद करने की  
इच्छुक बेटी उनके विगत को समझने की चेष्टा  
करती है, जहाँ विविधाओं से परिपूर्ण समाजवादी  
समाज एवं संस्कृति स्वयं प्रश्न बने हुए हैं।

बेटी पिता को पर्यटन के लिए मनाती है। पिता  
और पुत्री मानवीय कहानी की पुनः पारिभाषित  
करते हैं, किंतु पीछे शहर में धार्मिक विश्वासों से  
संबंधित अच्युत काम पिता की प्रतीक्षा में हैं।



## MAARGAM

Malayalam / 108 mins / 35mm / Colour

**Director:** Rajiv Vijay Raghavan, **Producer:**  
Rajiv Vijay Raghavan, **Screenplay:** S. P.  
Ramesh, Anwar Ali, Rajiv Vijay Raghavan,  
**Cinematography:** Venu, **Editing:** Bina Paul,  
**Cast:** Nedumudi Venu, Meera Krishna, KPAC  
Lalitha, Valsala Menon.

The film explores a father-daughter relationship  
against the backdrop of the contemporary  
realities of a globalising, urban society in Kerala.  
The state had the world's first-ever  
democratically elected Communist government  
in 1957. The late 60s and 70s saw many party  
members breaking away to the extreme Left.  
But their hopes of a revolution were dashed.

The father Venu Menon, is one such failed  
revolutionary. Menon marries the orphaned  
sister of Joy Simon, a martyred comrade and

takes up a teaching job in the city. His wife,  
Elizabeth, a devout Roman Catholic brings up  
her daughter, Benny, in her faith. Menon,  
though born in a matrilineal Hindu upper caste  
family is a non-believer, loyal to his Marxist  
past. The daughter represents a new generation  
free from religious or philosophical baggage.

Menon suffers from frequent spells of  
depression. In her emotional efforts to help  
her father, the daughter begins to understand  
the dichotomies of his past and paradoxes of  
the present, where the concept of a culturally  
diverse egalitarian society itself is being  
questioned. The daughter persuades Menon  
to go on a trip.

The father and daughter take an inward journey  
of re-discovery. But there are, unfinished tasks  
waiting for the father back in their city  
existence.



## मकबूल

हिन्दी / 133 मिनट / 35 एम एम / रंगीन

निर्देशक : विशाल भारद्वाज, निर्माता : बॉबी बेदी  
पटकथा : अब्बास टायरवाला, छायांकन : हेमन्त चतुर्वेदी संपादन : आरिफ शेख, कलाकार : इरफान खान, तब्बू, पंकज कपूर, नसीरुद्दीन शाह, ओम पुरी

शेक्सपीयर के सभी नाटकों में आज सर्वाधिक प्रासंगिक है *मैकबेथ* नैसर्गिक संवेग एवं मनोभावों की कहानी, जिसमें महत्वाकांक्षा, प्यार, हिंसा और मृत्यु सब एक साथ हैं।

*मकबूल* की पृष्ठभूमि माफिया है और मुख्य किरदार का नाम भी मकबूल (खान) है। मकबूल अछेड़ पर सशक्त अब्बाजी का विश्वासपात्र है। निम्मी अब्बाजी की रखैल है, उसे अपनी स्थिति से नफरत है, मकबूल से प्यार करती है, उसे अब्बाजी की हत्या करने के लिए उकसाती है।

मकबूल शुरू में तो हिचकिचाता है कि तु शक्ति पाने की लालसा भी उसके अंदर कहीं दबी है। वह अब्बाजी की हत्या कर स्वयं को उत्तराधिकारी घोषित करता है। अब्बाजी के गिरोह में फूट पड़ जाती है। सभी को मकबूल पर शक है कि तु काका (जिसके बेटे की अब्बाजी की बेटों से शादी होने वाली थी) गुब्बु और बोटी के सिवाय उसे कोई चुनौती नहीं देता। अपने ही गुट में फूट पड़ने और पुलिस और राजनेताओं हस्तक्षेप से मकबूल की दुनिया बिखरने लगती है।

क्या निम्मी मकबूल का साथ देगी। क्या मकबूल अपना प्रभुत्व दोबारा स्थापित कर पायेगा।

*मकबूल* न केवल सुप्रसिद्ध नाटक का पुनर्कथन है अपितु आज की वस्तुस्थिति भी है जहाँ अपराध ही जीवन है। इसमें न केवल मानवीय संवेदनाओं का चित्रण है, अच्छा और सही एवं गलत और बुरा के बीच का द्वन्द्व भी है।



## MAQBOOL

Hindi / 133 mins / 35mm / Colour

**Director:** Vishal Bhardwaj, **Producer:** Bobby Bedi, **Screenplay:** Abbas Tyrewala, **Cinematography:** Hemant Chaturvedi, **Editing:** Aarif Sheikh, **Cast:** Irfan Khan, Tabu, Pankaj Kapur, Naseeruddin Shah, Om Puri.

Of all the plays penned by William Shakespeare, one that seems extremely relevant to our times is *Macbeth*. A tale about primal instincts and emotions, *Macbeth* deals with ambition, love, violence and death all in a breath.

The mafia forms the backdrop for *Maqbool* and the central character, as the name of the film suggests is also Maqbool (Khan), the right hand man of Abbaji

(an aging but still powerful don played by Kapur). Nimmi who is Abbaji's mistress and hates her situation is in love with Maqbool and leverages her advantage with him by inciting him to kill Abbaji.

Maqbool, though initially reluctant and yet driven by the thirst for power murders Abbaji and declares himself the successor. Abbaji's gang gets divided and though all the others suspect Maqbool, none challenges him openly except for Kaka (whose son was slated to marry Abbaji's daughter),

Guddu and Boti. They challenge his unbridled rise to supremacy. With the battle lines drawn among his own troops, the police and politicians zeroing in on the weakened kingdom, Maqbool's world begins to spin out of control.

Will Nimmi by his side, will Maqbool right his world ever again?

*Maqbool* seeks not to become a tame attempt to simply retell a well-known play but also to rediscover its shades in our times, in an environment where even though crime is a way of life for some, much is left to represent the human facet underneath it. It aims not only to portray human emotions but also serves as a morality tale discriminating wisely between the right and the good, and the wrong and the evil.

## मीनाक्षी : टेल ऑफ थ्री सिटीज

हिन्दी/115 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक : एन0 एफ0 हुसैन, निर्माता : रीमा  
— फाँजा हुसैन पटकथा : ओवाएस हुसैन,  
छायांकन : संतोश सिवन संपादन : ए  
श्रीकर प्रसाद कलाकार : तब्बू, कुणाल कपूर,  
रघुवीर यादव, नादिरा बब्बर

नवाब हैदराबाद के प्रसिद्ध उपन्यासकार अजीब उलझन में हैं, पाँच वर्ष से कुछ लिख नहीं पाए। पारम्परिक कव्वाली उत्सव में उन्हें मीनाक्षी मिलती है। मीनाक्षी उन्हें एक पहेली सी लगती है। वह उनकी कहानी का पात्र बनने की ज्यादा इच्छुक नहीं है।

मीनाक्षी अपनी ही कल्पना में अलग — अलग रूप धारण करती है। वह हैदराबाद की इत्र की रहस्यमयी व्यापारी हो सकती है। जैसलमेर के रेगिस्तान की कोमल कली हो सकती है और प्राग शहरी की अनाथ नारिया भी हो सकती है। उपन्यासकार पर उसकी मजबूत पकड़ है। वह हर बार उनकी कहानी को साधारण और बेकार कहकर नकार देती है। जिससे नवाब और निराश हो जाते हैं। मीनाक्षी उसकी कहानी की कड़ी आलोचना करती है, खासकर प्रेमी कामेश्वर का किरदार उसे बड़ा हास्यप्रद लगता है।

नवाब नए सिरे से लिखना शुरू करता है। मीनाक्षी का कहना है कि किताब बेकार है और अब बहुत देर भी हो चुकी है। लेखक को अगर जीना है, अगर जी सकता है तो उसे उसके सहारे प्रेरणा और आलोचना के बिना ही जीना होगा।



### MEENAXI: Tale of Three Cities Hindi/115 minutes/35mm/Colour

**Director:** M.F. Husain, **Producer:** Reima-Faiza Husain, **Screenplay:** Owais Husain, **Cinematography:** Santosh Sivan, **Editor:** A. Sreekar Prasad, **Cast:** Tabu, Kunnal Kapoor, Raghuvir Yadav, Nadira Babbar

Nawab, a popular novelist of Hyderabad, is suffering from the classic case of a writer's block. Five years have elapsed. Stories of substance seem to have dried up. Almost providentially, Nawab comes across Meenaxi at a traditional qawwali ceremony. The young woman is enigmatic and individualistic. She's not quite willing to perform the part of a passive muse.

Meenaxi assumes different personae. She can be the mysterious perfume trader of

Hyderabad, the exotic desert bloom of Jaisalmer and the orphaned Maria of Prague. Inexorably, she consolidates her command over the novelist. She dismisses his renewed attempts at writing as insubstantial and hackneyed, plunging him into a state of deeper despair. She is scathingly critical about his story and is amused by one of the characters he creates, the lovelorn and awkward Kaameshwar.

Nawab strives to start on a new page all over again. Meenaxi comments that perhaps the book is in vain. In any case, it is much too late. The writer must survive and live, if he can, without her support, inspiration and criticism.



## मौनी

कन्नड/114 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशक : बी. एस. लिंगादेवारू निर्माता :  
एन. सिवनन्दन, पटकथा : उदय मर्किनी,  
छायांकन : एच. एम. रामचन्द्रन, संपादन :  
अनिल नायडू, कलाकार : एच. जी. दत्तात्रेय,  
अनन्त नाग, नगेन्द्र शाह, अच्युता, हरीश राज

भारत में बहुत से धार्मिक विश्वास मौन से जुड़े हैं जो एक प्रकार का व्रत है, तपस्या है। मौन एक प्रार्थना है जो साधन और साध्य दोनों ही है। मौन हमें स्वयं से तथा ईश्वर से और गहराई से जोड़ता है। ऐसा विश्वास है कि इससे हम ईश्वर की वाणी को सुन पाते हैं तथा हमें जीवन के बहुत से अनबूझ रहस्यों का उत्तर भी मिल जाता है।

मौनी ऐतिहासिक, व्यस्त तथा दुराग्रही एवं मानवीय स्वभाव के मौलिक तत्वों की असंगति का सन्निधान करती है।

अप्पन भट्ट तथा कुप्पन भट्ट बदलती परिस्थितियों में मनुष्य को सामंजस्य बनाए रखने की समुत्थान शक्ति का साक्षात् उदाहरण हैं।

दृढ़ प्रतिज्ञ कुप्पन किसी छलयोजना अथवा बाह्य दबाव से विचलित नहीं होते। मानवीय अन्तःशक्ति का प्रतिपादन इस फिल्म की विशेषता है।



### Mouni

Kannada/114 mins/35 mm/colour

**Director:** B.S. Lingadevaru, **Producer:** N. Sivanandam, **Screenplay:** Uday Markini, **Cinematography:** H.M. Rmachandran, **Editor:** Anil Naidu, **Cast:** H.G. Dattatreya, Anant Nag, Nagendra Shah, Achyutha

Among the many prominent beliefs of India one of the most important revolves around the practice of silence, which is regarded as a *vrata*, which means a kind of penance. Silence is a prayer and is at the same time both a means and an end. Silence is sought by us when we need a deeper contact with ourselves and God. The belief is that we hear God's voice and

find answers to many questions in our lives.

Mouni juxtaposes through two protagonists the irreconcilable conflict between the historical – pragmatic and the intransigent - and elemental dimensions of human nature. Appana Bhatta and Kuppanna Bhatta exemplifies the spirit of resilience that enable human beings to come to terms with changing circumstances whereas Kuppanna symbolizes the utterly uncompromising spirit that transcends the pulls and pressures of historical forces especially of the manipulative kind. The extraordinary dimension of this story lies in the image that it throws up of the human spirit.

## मुन्नाभाई एम बी बी एस

हिन्दी / 155 मिनट / 35 एम एम / रंगीन

निर्देशक : राज कुमार हिरानी निर्माता : विधु विनोद चोपड़ा पटकथा : अब्बास टायरवाला छायांकन : विनोद प्रधान संपादन : राजीव बिस्वास कलाकार : सुनील दत्त, संजय दत्त, अर्शद वरसी, बोमन ईरानी, ग्रेसी सिंह, खुरुश देबू

मुन्नाभाई एक मस्त, खुशमिजाज आदमी है। मुम्बई के धोबी घाट की गलियों में अपने गिरोह का साथ रहता है। वह अपने को समाज सेवी समझता है (वास्तव में वे लोगों की समस्याएँ सुलझाते भी हैं, किंतु दादागिरी से), शराब, दंगा, जिंदगी में सबके मजे ले रहा है।

मुन्ना के पिता हरिप्रसाद शर्मा एक आदर्शवादी भले व्यक्ति हैं। वे यह समझते हैं कि उनका बेटा शहर में एक चैरिटी अस्पताल चला रहा है। हर साल जब माता-पिता शहर आते हैं, मुन्ना और उसके साथी साफ सुथरे सफेद कोट पहन, स्टेथ स्कोप लगाकर डाक्टर बनने का नाटक करते हैं।

इस साल शर्माजी अचानक अपने दोस्त डा. अस्थाना से मिलते हैं, जिनकी लड़की सुमन डाक्टर है। दोनों पिता यह सोचते हैं कि दोनों डाक्टरों की जोड़ी अच्छी रहेगी। मुन्ना की लाख कोशिशों के बावजूद हरिप्रसाद सच्चाई को जान जाते हैं। आहत हो कर वे अपने डाक्टर दोस्त के कदमों पर अपनी पगड़ी रखकर रोने लगते हैं। तब मुन्ना भाई ने निर्णय किया और इससे कड़ियों का जीवन बदल गया। मुन्नाभाई एम बी बी एस हास्य विनोद से भरपूर फिल्म है।



## MUNNABHAI M.B.B.S.

Hindi / 155 mins / 35mm / Colour

**Director:** Raj Kumar Hirani, **Producer:** Vidhu Vinod Chopra, **Screenplay:** Abbas Tyrewala, **Cinematography:** Binod Pradhan, **Editing:** Rajib Biswas, **Cast:** Sunil Dutt, Sanjay Dutt, Arshad Warsi, Boman Irani, Gracy Singh, Khurush Deboo.

Munnabhai is a happy man. He lives with his gang in the bylanes of *dhobhi ghat* in Mumbai; takes pride in being a 'social worker' (they actually settle financial disputes through '*dadagiri*'); enjoys his booze, babes, brawls followed by a good night's sleep. Not much bothers Munna except his parent's annual visit from the village.

Munna's father Hari Prasad Sharma, an upright, moralistic man believes that his son is actually a doctor running a charity hospital.

This year, however, the clever charade falls apart. Sharma runs into an old friend Dr. Asthana who has a daughter, called Suman. The two decide that their children, both doctors, would make a perfect match. Munna tries hard to save the situation but his father discovers the truth. And all hell breaks loose.

Hari Prasad Sharma now broken by the truth is miserable. Munnabhai then takes a decision that will change many lives; he decides to become a doctor. *Munnabhai MBBS* is hilarious and heart-warming story of a local goon's journey into the medical world – a place he neither belongs nor believes in. It is a classic story of the right man in the wrong place.



## नॉट ऑनली मिसेज राउत

मराठी/122 मिनट/35 एमएम/रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : गजेन्द्र अहिरे, निर्माता:  
अदिति देशपाण्डे छायांकन : इमिआज बरगीर  
संपादन : शिवाजी चौधरी, महेश पावसकर,  
गजेन्द्र अहिरे कलाकार : अदिति देशपाण्डे,  
रवीन्द्र मन्कानी

नॉट ऑनली मिसेज राउत नारी के उत्पीड़न की कहानी है, जिस समाज में सभ्य व्यवहार, समानता और न्याय की प्रभुता में विश्वास किया जाता है। विद्या राउत ने अकेले ही अपनी बेटी को पाला है। उसका बॉस दोस्त होने का नाटक करता है, मदद कर उसका विश्वास जीत लेता है। एक बार जब विद्या शहर से बाहर जाती है, तो वह उसे घर जाकर उसकी किशोर बेटी के साथ बलात्कार करता है। कोर्ट में उसका वकील मनगढ़त कहानी बनाकर विद्या पर दुस्रचार का आरोप लगाता है। उसे तीन साल के लिए जेल हो जाती है। रिहा होने पर विद्या का एक ही उद्देश्य था, उस आदमी से बदला लेना जिसने उसका जीवन बर्बाद कर दिया था। वह उसे मार कर पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर देती है।

स्वाति, एक युवा वकील, विद्या का केस लड़ती है। इसके लिए उसे भारी कीमत चुकानी पड़ती है, क्योंकि यह उसके पति और ससुर के हितों के विरुद्ध था। एक संघर्षशील वकील गरुड़, जिसने विद्या राउत का केस लड़ा था, स्वाति की सहायता करता है। उसके पास केस से सम्बंधित महत्वपूर्ण सुराग भी है।



### NOT ONLY MRS. RAUT

Marathi/122 minutes/35mm/Colour

**Direction & Screenplay:** Gajendra Ahire,  
**Producer:** Aditi Deshpande, **Cinematography:** Imtiaz Bargir, **Editor:** Shivaji Chaudhary, Mahesh Pawaskar, Gajendra Ahire, **Cast:** Aditi Deshpande, Ravindra Mankani

The plot revolves around the life of Vidya Raut, a single parent who brings up her daughter alone. Her boss pretends to be her friend by helping her and wins her confidence.

When Vidya goes out of town, he goes to her house and rapes her teenaged daughter.

In the court of law, his lawyer manages to fabricate a false story and implicates Vidya as a woman of loose morals. She is imprisoned for three years. Upon her release, her only mission is to find the man who has ruined her life and take revenge. She kills him and surrenders to the police.

Swati, a young lawyer from a distinguished family of solicitors, fights Vidya's case. She has to pay a heavy price for her daring decision, which is against the interests of her husband and father-in-law. Her only supporter in this case, Mr. Garud, is a struggling lawyer who had fought Vidya Raut's case against her boss, has some vital information.

## पाठम ओन्नु : ओरु विलापम्

मलयालम / 107 मिनट / 35 एम एम / रंगीन

निर्देशक : टी.वी. चन्द्रन निर्माता: आर्यदन शौकत  
पटकथा : टी.वी. चन्द्रन छायांकन : के.जी. जयन  
संपादन : वेणुगोपाल, कलाकार : मीरा जैस्मिन

रजिया शिशु को गोद में लिए बस से उतरती है। दहेज की माँग न पूरी कर पाने के कारण ससुराल वालों ने उसे मायके वापस भेज दिया है। सहेली शाहिना उसे सांत्वना देती है। पिछड़े गरीब लोग अपनी बेटियों की शादी मैसूर के अज्ञान आदमियों से करने के लिए मजबूर हैं। हसन मोयीन एक व्यस्त दलाल है।

शाहिना की माँ साफिया धान कूट कर गुजारा करती है। इन सबसे बेखबर शाहिना मनोयोग से पढ़ रही है। रजाक पहले से शादीशुदा है। वह दोबारा शादी करने की सोचता है ताकि दहेज में मिली रकम से वह गल्फ जाने के लिए धन जुटा सके। हसन मोयीन साफिया और उसके भाई पर दबाव डालता है कि शाहिना की शादी का यही समय है।

शाहिना विवाह नहीं करना चाहती, पढ़ना चाहती है, किन्तु बड़ों की इच्छा के आगे उसे झुकना पड़ता है।

रजाक शाहिना के साथ सहवास में कभी सफल नहीं हो पाता। उसे देखते ही शाहिना को घृणा होने लगती है। रजाक शाहिना को कुछ नशा देने के लिए अपनी पहली पत्नी वाहिदा को मजबूर करता है।

शाहिना नौद में होती है और रजाक को अपनी हवस पूरी करने का मौका मिल जाता है। जागने पर शाहिना गुस्से में पागल हो उठती है। रजाक शाहिना के इस व्यवहार को तलाक का बहाना बनाकर मायके भेज देता है।

शाहिना दोबारा अपनी पढ़ाई शुरू करती है। परीक्षा के पहले दिन डेस्क पर वह अचेत हो जाती है। पता चलता है कि वह गर्भवती है। विषण्ण साफिया मर जाती है। शाहिना पर दुरावार का आरोप लगाकर बहिष्कृत कर दिया जाता है।



### PADAM ONNU: ORU VILAPAM

Malayalam/107 minutes/35 mm/Colour

**Direction and Screenplay :** T.V. Chandran.  
**Producer:** Aryadan Shoukath. **Cinematography:** K.G. Jayan. **Editing:** Venugopal.  
**Cast:** Meera Jasmin

Razia, holding a baby, gets down from a bus and makes her way home in the wee hours of the morning. She has been sent back by her husband for her parents have failed to keep their promise of dowry. Razia's friend, Shahina, visits her.

Hassan Moyeen is a busy matchmaker. Economically backward families opt for Mysore marriage – they give their daughters in marriage to unknown men from the neighbouring province of Mysore. Razia's was one such marriage brokered by Hassan Moyeen. Her husband arrives seeking the remaining dowry amount and seeks Hassan's intervention.

Shahina's mother, Saphia, makes a living by making rice dumplings and selling them at a nearby teashop. Shahina, an assiduous student, is blissfully unaware of the ways of the world. Razak is already married. He also has a child. He is

trying to leave for the Gulf in search of a job. He decides to get married again so that he can use the dowry to fund his trip. Hassan is told to find a match for him. He impresses upon Saphia and her brother Abdu that it is time for Shahina to be married off.

Shahina reacts violently to the proposal because she wants to continue her studies. In spite of her mother's sympathy, the elders, especially the men, try to dissuade her from her studies. For them her defiance amounts to deviant behaviour. Finally, Shahina is forced to give in.

Razak meets with repeated failure in his attempts to consummate his marriage with Shahina. His very sight provokes revulsion in her. Razak's first wife Wahida, feels sorry for Shahina.

Meanwhile, Razak forces Wahida to administer sedatives to Shahina. While she sleeps, Razak has his way. When she wakes up, a shocked Shahina turns hysterical in anger. Razak uses her behaviour as a pretext to divorce her. He takes her back to her place. Back home, Shahina resumes life but a medical examination reveals that she is pregnant. A dejected Saphia Shahina is accused of adultery and ostracized.



## पिंजर

हिन्दी / 168 मिनट / 35 एम एम / रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : डा. चन्द्र प्रकाश द्विवेदी  
निर्माता : लकी स्टार एन्टरटेनमेन्ट लिमिटेड छायांकन:  
संतोष बुद्धियाल संपादन : बल्लु सलूजा कलाकार:  
मनोज बाजपेयी, उर्मिला मातोंडकर, प्रियांशु चटर्जी,  
ईशा कोप्पीकर, संजय सूरी, संदाली सिन्हा

*पिंजर* अमृता प्रीतम की विभाजन एवं विभाजन पूर्व समय की कहानी पर आधारित है। पारिवारिक विवादों के चलते एक हिन्दु युवती पुरो का एक मुस्लिम युवक रशीद अपहरण कर लेता है। पुरो का परिवार दुःखी और चिन्तित भी है, क्योंकि पुरो की श्यामलाल के बेटे रामचन्द के साथ मैंगनी हो चुकी थी। अदला - बदली के रिवाज के अनुसार पुरो के भाई त्रिलोक की शादी रामचन्द की बहन लाजो के साथ निश्चित थी। संबंध न टूटे, इसलिए पुरो की छोटी बहन रज्जो की शादी रामचन्द के चचेरे भाई के साथ हो जाती है।

वहीं रशीद को अपने किये पर पछतावा है और यदि पुरो राजी हो तो वह उससे शादी करना चाहता है। पुरो एक रात भागने में सफल भी हो जाती है, किन्तु उसके माता-पिता उसे अस्वीकार कर देते हैं, क्योंकि वह एक मुसलमान के घर में रह चुकी है। दुःखी पुरो रशीद से शादी कर लेती है। वे एक नया जीवन शुरू करते हैं, किन्तु पुरो की जिजीविषा खत्म हो चुकी है।

विभाजन होता है और ज्यादातर हिन्दु भारत जा रहे हैं। पुरो को पता चलता है कि उनमें उसके और रामचन्द के परिवार वाले भी हैं। एक शरणार्थी कैम्प में पुरो का रामचन्द से मिलना होता है। रामचन्द से उसे अपने भाई और बहन की शादियों का पता चलता है और यह भी कि लाजो का अपहरण हो गया है।

रशीद और पुरो लाजो को ढूँढने का फैसला करते हैं। पुरो चिन्तित है कि उसका परिवार लाजो को भी अस्वीकार कर देगा, जैसे उसे कर दिया था। पुरो लाजो को ढूँढ निकालती है। त्रिलोक और रामचन्द दोनों उसे स्वीकार कर लेते हैं। पुरो जानती है कि उसका भाई माता-पिता के विरोध के बावजूद उसे ढूँढने में लगा रहा, वह पुरो को हिन्दुस्तान चलने के लिए भी कहता है, किन्तु पुरो निर्णय कर चुकी है कि अब रशीद ही उसका जीवन है।



## PINJAR

Hindi / 188 mins / 35mm / Colour

**Direction and Screenplay :** Dr. Chandra Prakash Dwivedi, **Producer:** Lucky Star Entertainment Ltd., **Cinematography:** Santosh Thundial, **Editing:** Ballu Saluja, **Cast:** Manoj Bajpai, Urmila Matondkar.

*Pinjar* is based on a story penned by Amrita Pritam. Puro, a young Hindu girl is kidnapped by Rashid, a Muslim because of a dispute between their families. Her parents and younger brother, Trilok, try and locate Puro despite warnings from a few village Muslims. Matters are made worse because Puro's family had just fixed her marriage with Shyamlal's son, Ramchand. As per the adla-badli (exchange) custom, Trilok's wedding has also been fixed with Ramchand's sister, Lajo. The families decide to go ahead with the marriage, including that of Rajjo, Puro's younger sister who is now married to Ramchand's cousin, Kirpal.

Here, Rashid is repentant and wants to marry

Puro but she refuses. One night Puro manages to escape but her parents disown her because she has stayed in a Muslim's house. As Puro walks away disillusioned, she finds Rashid waiting for her. Next morning she is married to him. Fearing trouble, Rashid decides to move to another village Sakaddali where he has some distant relatives.

Puro and Rashid begin a new life but Puro has lost all interest in living. In time, she bears Rashid a son but then Partition takes place and she is told that most of the Hindus are leaving for India. Among them are her family members and Ramchand's family too. She meets Ramchand one day and he tells her about the marriages that have taken place and also mentions that Lajo has also been kidnapped on the night they were trying to escape.

Rashid and Puro decide to search for Lajo and manage to find her too. Now, she has to be taken back to the family but will she be accepted by them? Or will they disown her as they done with Puro?

## पितामगन

तमिल/157 मिनट/35 एम एम/रंगीन

निर्देशक : बाला, निर्माता : वी.ए. दुरई,  
छायांकन : बालासुब्रह्मन्यम् संपादन : वी.  
टी. विजयन, कलाकार : विक्रम, लैला, सूर्य  
शिवकुमार, संगीता

एक गर्भवती शमशान में आती है, वहीं पर एक बच्चे को जन्म देकर मर जाती है। अत्येष्टि प्रबंधक उस बच्चे का पालन पोषण करता है और उसे नाम देता है - सीतन। पलक पिता की मृत्यु के बाद सीतन शहर आता है, जहाँ लोग उसे छोटी जाति का अछूत कहकर दुत्कार देते हैं।

गोमती, नशीली दवाओं का घंघा करने वाले महादेवन के साथ काम करती है, सीतन को काम देने के लिए कहती है। महादेवन, सीतन को अपने साथ ले लेता है, किंतु सीतन पकड़ा जाता है, उसे जेल हो जाती है।

शक्तिवेल छोटी-मोटी चोरियाँ करता है। उसकी दोस्त मंजु छोटी सी बात पर उससे नाराज होकर पुलिस में उसकी शिकायत कर देती है और शक्ति जेल चला जाता है। जेल में शक्ति और सीतन की मित्रता होती है। मंजु यह महसूस करने लगती है कि शक्ति अच्छा आदमी है, धोखेबाज नहीं। शक्ति जेल से छूटने के बाद महादेवन से सीतन को जेल से छुड़ाने के लिए कहता है। महादेवन मान भी जाता है। एक सिपाही जो महादेवन की जासूसी कर रहा था, महादेवन के आदमियों द्वारा पकड़ लिया जाता है। महादेवन उसकी हत्या कर देता है। पुलिस फिर सीतन को पकड़ लेती है। शक्ति कलक्टर से मिलकर सीतन को छुड़ता है। महादेवन चतुर शक्ति को अपना शत्रु समझता है और उसे भी मार खलता है। मंजु सदमे से मूगी हो जाती है। सारा शहर शक्ति की मौत पर दुःखी है। सीतन अपने प्यारे दोस्त के हत्यारे महादेवन की हत्या कर देता है और शमशान वापस लौट जाता है। शहर का वातावरण सीतन को रास नहीं आया।



## PITHAMAGAN

Tamil / 157 mins / 35mm / Colour

**Direction and Screenplay :** Bala, **Producer:** V.A. Durai, **Cinematography:** Balasubramanyam, **Editing:** V.T. Vijayan, **Cast:** Vikram, Laila, Surya Sivakumar, Sangitha.

A pregnant woman comes to a cremation ground, gives birth to a child and dies. The undertaker becomes a foster father to the child and names him Sithan. After his foster father's death, Sithan enters the town but is shunned by the city folk who see him as a low caste untouchable.

Gomathi, who works with a drug peddler Mahadevan, gets a job for Sithan. Mahadevan agrees and takes him on. But Sithan is caught drug peddling, arrested and jailed.

Meanwhile, we are introduced to Sakthivel, who makes a living out of petty thievery. Then there is Manju, whose anger with Sakthivel

over a trivial matter leads her to complain against him to the police. He too is jailed where he meets Sithan. They become friends and, in time Manju realises that Sakthi is actually a compassionate man and not a crook.

When Sakthi has served his term he goes to Mahadevan to get Sithan out on bail, and Mahadevan agrees. Meanwhile, a cop spying on Mahadevan is caught by Mahadevan's henchmen. He is brought to the drug smuggler and Mahadevan kills him, and Sithan buries the body. The cops zero in on Sithan and arrest him but Sakthi manages to get him out by speaking to the collector. Recognising an enemy in the intelligent Sakthi, Mahadevan murders him also, with the result that Manju goes mute with shock.

Even as the entire town mourns Sakthi, Sithan unable to accept the death of his friend turns on Mahadevan in his fury and murders him. He then walks back to the cremation ground.



## प्रीति प्रेमा प्रणया

कन्नड / 125 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : कविता लंकेश निर्माता : मनो मूर्ति, छायांकन : ए. सी. महेन्द्रन संपादन : एम. एन. स्वामी, कलाकार : अनंत नाग, प्रकाश राज, अरुण सागर, भावना, सुधा रानी, भारती वि. गुर्वधन

*प्रीति प्रेमा प्रणया* में प्यार के अलग-अलग रूप दिखाए गए हैं। यह एक विशाल घर में रह रहे अमीर संयुक्त परिवार की तीन पीढ़ियों की कहानी है। चन्द्रशेखर (अनंत नाग), घर का मुखिया एक सेवानिवृत्त डाक्टर 64-65 वर्ष का है। यह अभी काम करना चाहता है, किंतु उसके दोनों बेटों ने उसे रिटायर होने के लिए मजबूर कर दिया। अब चन्द्रशेखर का काम तीन बेटों के साथ सुबह की सैर करना रह गया था।

चन्द्रशेखर के छोटे बेटे (अरुण सागर) और पुत्रवधू (भावना) का कोई बच्चा नहीं है।

अशोक (प्रकाश राज) और ज्योति (सुधा रानी) ठेठ साधारण दम्पती हैं। एक दिन सुबह की सैर के दौरान चन्द्रशेखर की मुलाकात शारदा के साथ होती है। वे दोनों एक दूसरे से रोज मिलते हैं। उन दोनों के बीच गहरी दोस्ती हो जाती है। ऐसी दोस्ती जो चन्द्रशेखर की अपने बेटों से नहीं थी और न ही शारदा की अमेरिका में रह रहे अपने बहु बेटे से।

इसी समय शारदा की पोती काव्या (अनु प्रभाकर) अमेरिका से आती है। उसकी चन्द्रशेखर के पोते विवेक से दोस्ती हो जाती है। परिवार युवाओं की दोस्ती को तो स्वीकार कर लेता है किंतु बड़ों की दोस्ती उनकी समझ से बाहर थी। चन्द्रशेखर और शारदा अपना निर्णय स्वयं लेते हैं, चाहे उसमें बच्चों की रजामन्दी हो या न हो।



### Preethi Prema Pranaya

Kannada / 125 min / 35 mm/colour

**Direction and Screenplay :** Kavitha Lankesh, **Producer:** Mano Murthy, **Cinematography:** A.C. Mahendra, **Editing:** M.N. Swamy, **Cast:** Anant Nag, Prakash Raj, Arun Sagar, Bhavana, Sudha Rani, Bharathi Vishunvardhan

*Preethi, Prema, Pranaya* deals with Love in all its different forms and facets. The story revolves around three generations of a fairly rich joint family living in a large house. The head of a household is Chandrashekhar (Anant Nag) a retired doctor who is in his mid-60s. Though Chandrashekhar is still sprightly, his two doctor sons have forced him into retirement. So Chandrashekhar's only activity is his morning walk with three other aged men.

Chandrashekhar's younger son (Arun Sagar)

and daughter-in-law Sheela (Bhavana) have no children. Ashok (Prakash Raj) and Jyothi (Sudha Rani) represent the typical middle-aged couple. One day on his ritualistic walks Chandrashekhar meets Sharada, a lady in her mid-50s. They continue meeting each other regularly and gradually a fondness for each other and a deep friendship develops between them. A friendship that neither his sons, nor her family which comprises a son and daughter-in-law staying in the US approve of.

Around the same time, Sharada's granddaughter Kavya (Anu Prabhakar) comes from the US and becomes friends with Chandrashekhar's grandson, Vivek. While the family sanctions the younger couple's attraction they're unable to reconcile themselves to the elders. Whereupon Chandrashekhar and Sharada decide to take matter into their own hands, with or without their childrens' consent.

## रघु रोमियो

हिंदी / 99 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशक : रजत कपूर, निर्माता : राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, पटकथा : रजत कपूर, छायांकन : रफी महमूद, संपादन : सुरेश पाल, कलाकार : विजय राज, सौरभ शुक्ला, सादिया सिद्दिकी, मारिया गोरेल्लो, वीरेन्द्र सक्सेना

रघु (राज) एक डांस बार में वेटर है जहाँ कुछ संदेहास्पद ग्राहक आते हैं। उसकी दुनिया अस्तव्यस्त है। माँ उसे हमेशा डाँटती रहती है, मामा नाराज रहते हैं और लोग उसकी हँसी उड़ाते रहते हैं। स्वाम्याधिक है कि यह दुनिया रघु को अच्छी नहीं लगती। रघु के जीवन में अगर कोई आशा की किरण है तो वो है नीता जी से उसका रिश्ता, जिसे वह आदर्श नारी समझता है।

रघु की नजर में नीता जी धैर्य की प्रतिमूर्ति है, साक्षात् धरती माँ है, प्यार का सागर है। समस्या केवल यह है कि वह टेलीविजन धारावाहिक का एक किरदार है। रघु को पता चलता है कि कोई नीताजी को मारना चाहता है, रघु को हर हाल में उन्हें बचाना है। बार की डांसर स्वीटी (सिद्दिकी) रघु से प्यार करती है, और डॉन (सौरभ शुक्ला) जो बार का रोज का ग्राहक है स्वीटी से प्यार करता है। वह उसे खुश करने के लिए किसी भी सीमा तक जा सकता है। इनमें से कौन सी प्रेम कहानी पूरी हो पायेगी।



### Raghu Romeo

Hindi / 99 mins / 35mm / Colour

**Direction and Screenplay :** Rajat Kapoor, **Producer:** NFDC, **Cinematography:** Rafey Mahmood, **Editing:** Suresh Pal, **Cast:** Vijay Raaz, Saurabh Shukla, Sadiya Siddiqui, Maria Goretti, Virendra Saxena.

Raghu (Raaz) is a waiter in a dance bar – a nightclub with somewhat suspect clientele. The world around him is chaotic. His mother nags him constantly, his uncle bores him to death and people are mean to him all the time. It is obviously a world where Raghu does not belong. Only, one shining light inspires Raghu to coast through his humdrum existence with some sem-

blance of equanimity – his relationship with Neetaji – his ideal woman. To Raghu, Neetaji is Mother Earth herself. She is so warm, all embracing, generous and brimming over with love. There is only one problem with her. She is a character on a TV serial. In real life, Raghu discovers that somebody is trying to kill Neetaji. He decides to save her.

To add to the chaos, there is Sweetie (Siddiqui), the dancer at the bar. She is in love with Raghu but hates Neetaji, and the Don (Shukla) who is a daily customer at the bar is in love with Sweetie. He is willing to go to any lengths to please her. Who will finally get whom?



## सबलम्

मलयालम / 118 मिनट / 35एमएम / रंगीन

निर्देशक : अशोक आर. नाथ निर्माता : अनिल थॉमस, पटकथा : माडम्पु कुंजीकुट्टन, छायांकन : मधु नीलकंठन, संपादन, विजयकुमार कलाकार : बालचन्द्र, मेनन, सुमित्रा, मनोज के. जयन, उमा शंकरी

*सबलम* समकालीन समाज में पारिवारिक संबंधों के बारे में बताती है। बैरिस्टर नांबियार और उनकी पत्नी सुमद्रा, अपने जीवन के अंतिम चरण में भी एक दूसरे से प्यार करते हैं, ख्याल रखते हैं। नांबियार ने अपना पेशा छोड़ दिया है और सुदूर गाँव में पत्नी के साथ शांत जीवन बिता रहे हैं जहाँ कोई भागदौड़ नहीं, कोई योजनाएँ नहीं, कोई तनाव नहीं।

समय ने उनकी अनेक परीक्षाएँ ली, लेकिन उनका बंधन अटूट रहा। उनका साथ बिल्कुल प्राचीन अर्धनारीश्वर के आख्यान से मिलता है। वे सदा से एक दूसरे के साथ हैं, और स्वतंत्र भी हैं, एक दूसरे से स्नेह करते हैं और अंत तक करते रहेंगे।



### Sabhalam

Malayalam / 118 mins / 35mm / Colour

**Director:** Asok R. Nath, **Producer:** Anil Thomas, **Screenplay:** Madambu Kunjikuttan, **Cinematography:** Madhu Neelakandan, **Editing:** Vijayakumar, **Cast:** Balachandra, Menon, Sumitra, Manoj K. Jayan, Umashankari

*Sabhalam* provides an insight into familial relations in the contemporary world. Barrister Nambira and his wife Subhadra, even in the dusk of their life,

care for each other very deeply. Nambiar gives up his profession and settles for a quiet life with his wife in a remote village where he is no longer in a hurry nor has to plan anything.

Their marriage is one that has lasted the tests of time and remains everlasting. Their togetherness is not unlike the perfect union of 'Ardhnarishwara' as symbolized in the scriptures. They are together – for each other and yet independent of each other, loving and nurturing one another till the very end.

## समय

हिन्दी / 140 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशन : रॉबी गरेवाल, निर्माता : आईडीम प्रॉडक्शन्स और रेड आइस फिल्मस, छायांकन : मोहनन पटकथा : रॉबी गरेवाल और समीर कोहली, संपादन : आरिफ शेख कलाकार : सुष्मिता सेन, सुशान्त सिंह

एक सफल उद्योगपति की हत्या ए सी पी मालविका चौहान की बुद्धिमत्ता और योग्यता की परीक्षा (का इम्तहान) है। सफाई से की गई हत्या के कुछ अस्पष्ट सुराग मिलते हैं, जिनमें गर्दन पर घाव भी शामिल है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक उन घावों में कोई बाहरी तत्व नहीं है, जो बड़ा बेतुका लगता है।

मालविका केस की जाँच कर ही रही थी कि एक और हत्या हो जाती है - इस बार एक अभिनेत्री की। छानबीन के दौरान मालविका अभिनेत्री के वृद्ध पिता के पास पहुँचती है, जो इतने स्तमित है कि बात नहीं कर पाते। गुत्थी को सुलझाते सुलझाते मालविका जिस नतीजे पर पहुँचती है, उस पर उसे खुद विश्वास नहीं होता। कमीश्नर मौडिया और उच्च अधिकारियों के दबाव में आकर मालविका से दोस सबूतों के आधार पर काम करने के लिए कहते हैं न कि अनुमान पर। अपने ही पुलिस स्टेशन की डेड टेलीफोन लाइन से मालविका के मोबाइल पर एक फोन से पूरा केस उलट जाता है। मालविका एक फोटोग्राफर के पास पहुँचती है जिसे भाड़े के हत्यारे ने मालविका के फोटो खींचने के लिए कहा था। भाड़े के हत्यारे के घर पर छापा मारने पर मालविका जो घर की दीवारों पर अपने फोटो और खुद किलर की लाश मिलती है। हत्याओं के समय पर ध्यान देने से मालविका इस नतीजे पर पहुँचती है कि हत्याओं का एक क्रम चल रहा है। तीस वर्ष पहले भी ऐसा ही हुआ था। वह अभिनेत्री के पिता के पास वापस पहुँचती है, जो तीस वर्ष पहले की घटनाओं के जाँच अधिकारी थे। उनके साथ घर्ष करके मालविका अगली हत्या के समय और स्थान का अनुमान लगाती है। हत्यारा सम्भावित स्थान पर तो आता किन्तु समय पर नहीं।



## SAMAY

Hindi / 140 mins / 35mm / Colour

**Director:** Robby Grewal, **Producer:** IDream Production and Red Ice Films, **Screenplay:** Robby Grewal and Sameer Kohli, **Cinematography:** Mohanan, **Editing:** Arif Sheikh, **Cast:** Sushmita Sen, Sushant Singh.

The death of a successful industrialist tests the skill of ACP Malvika Chauhan. The finely executed murder presents inexplicable clues including the fatal stab wound on the neck. But the post-mortem rules out known weapons since the wound lacks foreign particles - which is bizarre.

As she mulls over this case, another murder this time of a young actress takes place. The routine investigation takes her to the victim's father - an old man who is apparently too shocked to talk. Malvika builds the puzzle piece by piece only to come up with answer that she herself doesn't believe in. The Commissioner, under

pressure from newshounds and demanding seniors asks Malvika to work on tangible clues not hunches.

A freak call on Malvika's cell phone made from a dead telephone line from within her own police station turns around the case. The chase that follows leads to a photographer who had been hired by a contract killer to click pictures of the ACP. Malvika raids the premises of the contract killer where she finds her own pictures plastered on the walls and the dead body of the killer himself.

The time of the murders leads Malvika to conclude that a serial killer is at work. A similar spree of killings (which had taken place 30 years ago) leads her back to the father of the dead actress, who was the investigating officer on those cases. Discussions with him lead Malvika to predict the time and place of the next murder. The killer lands up at the place but not at the expected time.



## शवास

मराठी / 107 मिनट / 35 एम एम / रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : संदीप सावंत निर्माता : अरुण नालवाड़े छायांकन : संजय मेमाने संपादन : नीरज वोरालिया कलाकार : अरुण नालवाड़े, अश्विन चितले, संदीप कुलकर्णी, गणेश मांजरेकर

शवास एक कैंसर सर्जन के जीवन की सत्य घटना पर आधारित है। एक वृद्ध अपने सात वर्षीय पोते परशुराम को शहर के नेत्र-विशेषज्ञ डा. साणे के पास लेकर आते हैं। जांच के बाद पता चलता है कि बच्चा 'रेटिनो - ब्लास्टोमा' से पीड़ित है और बच्चे के जीवन को बचाने के लिए उसकी आँखें निकाल देने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है। दादा बहुत विचलित होते हैं, पहले तो वह सत्य को स्वीकार नहीं कर पाते, अन्ततः ऑपरेशन के लिए तैयार हो जाते हैं। नियमानुसार बच्चे को यह बताया जाना जरूरी है कि उसकी आँखें निकाली जा रही है। यह काम दादा को सौंपा जाता है, किन्तु वह परशुराम को बताने का साहस नहीं जुटा पाते। डॉक्टर स्वयं तथा एक समाजसेवी असावरी अपनी व्यवहार कुशलता से परशुराम को बताते हैं। परशुराम को अस्पताल में दाखिल कराया जाता है। किसी आपात स्थिति के कारण ऑपरेशन 24 घण्टों के लिए टल जाता है।

आँखों में तकलीफ, दृष्टि खोने का भय, ऑपरेशन का इतजार सब बच्चे के लिए असह्य हो उठते हैं। इसी समय दादा उसे इन सबसे बाहर निकालने की सोचते हैं। किसी को बिना कुछ बताये दोनों अस्पताल से गायब हो जाते हैं। डॉक्टर, पोलिस सब परेशान हो उठते हैं। दादा-पोता लौटकर डॉक्टर को बहुत झुद्ध पाते हैं। तब दादा बताते हैं कि वह परशुराम को कुछ उपहार दिलाने ले गए थे तथा वह सब दिखाने ले गए थे जो दृष्टि खोने के बाद वह कभी नहीं देख पाएगा; उन खुशियों को परशुराम अपनी मधुर स्मृतियों में संजो कर रखेगा।



## SHWAAS

Marathi / 107 mins / 35mm / Colour

**Director and Screenplay:** Sandeep Sawant, **Producer:** Arun Nalawade, **Cinematography:** Sanjay Memane, **Editing:** Neeraj Voralia, **Cast:** Arun Nalawade, Ashwin Chitale, Sandeep Kulkarni, Ganesh Manjrekar.

The story is based on a real life incident of a Cancer surgeon.

An old man from a village on the Western coast of India brings his seven-year-old grandson Parashuram, to the city to consult Dr. Sane. Parashuram is having trouble with his eyes. After a series of investigations, the child is diagnosed with retino-blastoma. Dr. Sane comes to the conclusion that there is no option left but to remove both of Parashuram's eyes to save him. The grandfather is shaken and refuses to acknowledge the truth.

But eventually the grandfather decides to go in for surgery. Since medical ethics state that the child must know the truth before his eyes are removed, the job is entrusted to the grandfather, who cannot bring

himself to convey the news to the little boy. The doctor and a Medical social worker Asavari do the job. Parashuram is admitted into the hospital but the operation gets postponed by 24 hours because of an emergency.

The discomfort in his eyes, the fear of darkness and the waiting makes things worse for the child. That is when the grandfather decides to take him away from all of this. Both of them disappear from the hospital without informing anybody and when their absence is discovered a search is launched. But they can't be found. With media having a field day at the hospital's expense and the police almost in despair, the duo returns to find a furious doctor Dr. Sane.

The grandfather then explains that he had taken the young one out to buy gifts and to show him everything that he will miss once he loses his eye-sight. It is those happy memories that Parashuram will live by for the rest of his life.

Shwaas is also India's entry to the Academy Awards 2005 in the Best Foreign Language Film category.

## टैगोर

तेलगु / 170 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशक एवं वटकथा : वी. वी. विनायक  
निर्माता : बी. मधु, संपादन : गीतम राजू  
संगीत : मणिशर्मा, कलाकार : चिरंजीवी, प्रकाशराज,  
कोटा, के. विश्वनाथ, मुनीत इस्सर.

टैगोर (चिरंजीवी) एक प्राध्यापक है और रिश्तत लेने वालों से उसे किट्ट है। उसका विश्वास है कि रिश्तत लेने वाले देशद्रोही होते हैं। वह युवकों (छात्रों) का एक दल बनाता है जो किसी भी ऑफिस में रिश्तत देने और लेने वालों के खिलाफ कार्यवाही करेगा। दल प्रोफेसर को सूचना देता है और वह अपराधियों को दंड देता है।

जैसे-जैसे टैगोर का भ्रष्टाचार-विरोधी दल उत्कर्ष को प्राप्त हो रहा है, वैसे ही छिपकर विरोध करने वाले भी। इनमें से एक बंदीनारायण है, जो गैर कानूनी व्यवसाय चलाता है। अनेक अनिमित्तताओं के साथ अपना गिजी अस्पताल चलाने वाला उसका पिता डॉ. रवीन्द्र भी टैगोर की निगाह में आता है। जनता का सहयोग टैगोर के साथ है और उसकी नींव है कि इस अस्पताल को बंद कर दिया जाए। सरकार तुरंत कार्यवाही करती है और अस्पताल पर अधिकार कर लेती है।

किंतु बंदी और उसके अनुचर भी सरकार में ही हैं। वह सरकार से टैगोर और स. टाचार विरोधी दल के सदस्यों को पकड़ने के लिए पुलिस भेजने में सफल हो जाता है। टैगोर भूमिगत हो जाता है, पुलिस उसके अनुचरों को उसका पता बताने के लिए परेशान करना शुरू कर देती है। टैगोर से यह सहन नहीं होता, वह आत्मसमर्पण कर देता है। बंदी को मौका मिल जाता है। वह टैगोर को मारने की कोशिश करता है पर स्वयं टैगोर के हाथों मारा जाता है। मामला न्यायालय में पहुँचता है, टैगोर का तर्क है कि भ्रष्टाचार विरोधी दल जनता के कल्याण के लिए बनाया गया था, यदि न्यायालय को लगता है कि ऐसा करके उसने अपराध किया है तो उसे मृत्युदंड दिया जाए। न्यायाधीश को टैगोर के प्रयत्नों में सत्यनिष्ठा दिखाई देती है और वह टैगोर के लिए केवल पाँच वर्ष की साधारण केंद की सजा सुनाता है।

## TAGORE

Telugu / 170 mins / 35mm / Colour

**Direction and Screenplay:** V.V. Vinayak,  
**Producer:** B. Madhu, **Editing:** Gowtham Raju, **Music:** Manisharma, **Cast:** Chiranjeevi, Prakashraj, Kota, K. Vishwanath, Punit Issar.

Tagore (Chiranjeevi) is a Professor and hates those who take bribes. He believes that those who indulge in bribery are traitors. He prepares a group of students who will take action against those offering or receiving bribes in any office. He receives



information from the students and punishes those found guilty. Eventually, the system is so well entrenched that even the cops are afraid of Tagore.

As the Anti-Corruption Force (ACF) set up by Tagore gathers prominence, there are those who secretly resent his rise. One among them is Badri Narayan, who runs illegal businesses. His father Dr. Ravindra has also come under Tagore's scanner for running a private hospital with severe irregularities. With public support behind him, Tagore demands that the hospital be closed down. The government reacts promptly and the hospital is seized.

But Badri Narayan has his cronies in the Government too. He manages to get the Government to depute a cop to nab Tagore and members of ACF. Even as Tagore goes underground, the police start harassing his followers to reveal his whereabouts. Since Tagore can't digest the harassment being meted out to them, he surrenders. Badri Narayan sees this as his chance to get even. He tries to kill Tagore but instead ends up getting killed by Tagore.

As his case comes up in court, Tagore argues that the ACF was built keeping in mind the welfare of the people, and appeals that he be given the death sentence should the court genuinely find that he has committed a crime. The judge recognises the integrity behind Tagore's efforts and imposes a simple imprisonment of five years.



## तोरा

असमिया / 83 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : जाहनु बरूआ निर्माता:  
भारतीय बालचित्र समिति छायांकन : पी राजन  
संपादन : शिवाजी चौधरी कलाकार : प्रतिभा  
चौधरी, अतुल पासोनी, दीना बैस्या

दो मित्र परिवार असम के सुदूरवर्ती ग्राम में रहते हैं। जानकी और पूर्ण की सात वर्षीय बेटी तोरा का परिवार इनमें से एक है। पूर्ण की साइकल मरम्मत की छोटी-सी दुकान है। पड़ोसी परिवार में डाबा, नाबा और उनकी बीमार माँ है। डाबा विधुर है और उसका भाई नाबा अविवाहित है। तोरा स्थानीय स्कूल में पढ़ती है और उसे प्रकृति से प्रेम है। एक भूमि के टुकड़े को लेकर दोनों परिवारों में विवाद हो जाता है। एक मानवीय कहानी के माध्यम से फिल्म तोरा के भोलेपन और सरलता को बताती है।



### TORA

Assamese / 63mins / 35mm / Colour

**Direction and Screenplay:** Jahnu Barua, **Producer:** Children's Film Society, India, **Cinematography:** P. Rajan, **Editing:** Shivaji Choudhury, **Cast:** Pratibha Chaudhury, Atul Pasoni, Dina Baisya.

There are two happy and friendly families who live in a remote Assam village. Tora, a seven-year-old girl belongs to one of the families and lives with her parents Jonaki and Purna. Purna, is a farmer who also has a small cycle repairing shed. The neighbouring family has Daba, Naba and their sick mother who is bed-ridden. Daba, is a widower and his younger brother Naba is a bachelor.

A passionate lover of nature, Tora studies in a local school. A conflict ensues over a peice of land between the two families. Through a touching human tale, the film underlines the importance of Tora's innocence and empathy.



---

कथासार : **Synopses :**  
गैर कथाचित्र **Non-Features Films**

---

## ए साइलेंट किलर

अंग्रेजी / 30 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्देशन, निर्माण एवं पटकथा : धनंजय मंडल छायांकन : समीर देबनाथ संपादन : रूपम तथा अमित देबनाथ

पानी जीवन का पर्याय है।

जहाँ तक पीने के पानी का प्रश्न है, भूमिगत जल तथा ट्यूबवेल इसके प्रचलित स्रोत हैं। पश्चिमी बंगाल के आठ जिलों के 75 खंडों में ट्यूबवेल से प्राप्त होने वाले पानी में आर्सेनिक की मात्रा 0.05 पी. पी. एम. के अनुमत स्तर से बहुत अधिक है। लोग आर्सेनिक प्रदूषित पानी को पीने से अनेक रोगों तथा समस्याओं के शिकार हो रहे हैं।

कुल आठ करोड़ लोगों में से 2.8 करोड़ आर्सेनिक प्रदूषण से ग्रस्त हैं। आर्सेनिक न केवल इनके स्वास्थ्य अपितु परिवारों के सामाजिक आर्थिक जीवन को भी प्रभावित कर रहा है।

अभी तक आर्सेनिक जनित रोगों का कोई इलाज नहीं है। आर्सेनिक रहित पानी ही इनसे बचने का एकमात्र उपाय है। छोटे मोटे कई उपाय किये गये हैं किंतु वे निष्फल रहे। इसके लिए स्थायी समाधान की आवश्यकता है।

भारत सरकार आर्सेनिक के भय को दूर करने में असफल रही है।



### A SILENT KILLER

English / 30 mins / Video / Colour

**Director, Producer, Script:** Dhananjay Mandal. **Cinematography:** Samir Debnath, **Editing:** Rupam and Amit Debnath

Water is synonymous with life. As far as drinking water is concerned, ground water through the tube-wells is the most popular source. But the ground water drawn through tube-wells in 75 blocks of eight districts in West Bengal shows Arsenic content well above the permitted levels 0.05 ppm. People are susceptible to all kinds of diseases and problems after long term consumption of Arsenic contaminated water.

Of the total 80 million people in the entire state, about 28 million are affected with arsenic contamination. Consuming arsenic is not bad just health wise but also detrimental to the social and economic well-being of the families concerned and society as a whole.

Till date, no antidote or cure has been found for Arsenic. Arsenic free drinking water is the only preventive solution. Various short-term measures have been taken to mitigate the menace, but the only long term solution is treated surface water based water supply schemes.

The government of India has failed to wipe out the fear of Arsenic.

## एन एन्काउंटर विद् ए लाइफ लिविंग

मलयालम एवं अंग्रेजी / 22 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशक : सुजा निर्माता : वीनू अब्राहम  
छायांकन : के. जी. जयन संपादन : अजीत

यह फिल्म स्वयं (वाचक), स्वयं (नायक) से स्वयं (दर्शक) की एक यात्रा है।

सरसू कई वर्षों से अंगघात से पीड़ित है, पर उसकी आत्मिक सम्पूर्णता, आध्यात्मिक बहुलता तथा सजीवता लोगों को चकित कर देती है।

निर्देशक ने इस आत्म-संतुष्टि के रहस्य का पता लगाया तथा वह इसे दर्शकों के साथ बाँटना चाहती है, यद्यपि यह पूर्णतया व्यक्तिगत है।

यदि किसी को जीवन से सचमुच प्रेम है और उसके अंदर जिज्ञासा है तो यह फिल्म सहायक सिद्ध होगी।



## AN ENCOUNTER WITH A LIFE LIVING

Malayalam & English / 22 mins / 35 mm / Colour

**Director:** Suja, **Producer:** Vinu Abraham, **Cinematography:** K.G. Jayan, **Editor:** Ajith

The film is a journey of one Self (the narrator) through another Self (the main character) to yet another Self (the viewer). Sarasu has been paralysed for many years but the totality, colourfulness and spiritual richness of her life will make one curious to know the secret behind it.

The director of the film finds out the secret of this self-contentment. She shares her realisation through the film with the viewers. Of course, it is very personal and subjective too. She breaks down the reality through the prism of her perception.

If one loves life, has an overwhelming need to know it, this soul-searching film will reveal itself to such a person.



## और घुमन्तु ठहर गए

अंग्रेजी / 24 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्देशन, पटकथा एवं छायांकन : मीनाक्षी  
विनय राय, निर्माता : लियो आर्ट कम्यूनिकेशन  
संपादन : विनय राय

घुमन्तु एक भ्रमणशील आदिम जाति है। स्वतंत्र  
भारत में इनको अभी तक नागरिकता के  
अधिकार प्राप्त नहीं हुए हैं, क्योंकि इनकी जीवन  
शैली इन्हें एक स्थान पर नहीं रहने देती, जिसे  
वे अपना कह सकें।

औद्योगीकरण के इस युग में संस्कृति के घनी  
इन घुमन्तुओं का संघर्ष एक वकील रतन  
कात्यायनी के प्रयासों द्वारा प्रकाश में आया।  
फिल्म हैबीटुअल आफेंडर्स एक्ट की व्यवहार्यता  
पर भी प्रश्न चिन्ह लगाती है, जो अभी भी कई  
राज्यों में लागू होता है तथा इन यायावर  
जातियों के मूलभूत अधिकारों का उल्लंघन है।



### AUR GHUMANTU THAHAR GAYE

English / 24 mins / Video / Colour

**Director, Cinematography and Script:** Meenakshi Vinay Rai, **Producer:** Leo Arts Communication, **Editing:** Vinay Rai.

Ghumantu are the names given to wanderers... nomads. Even in independent India these nomads are denied citizenship rights simply because their lifestyles have never allowed them to belong to a place they can call their own.

The film addresses the struggle of these culturally rich nomads in an era of globalisation and industrialisation bringing to light the selfless efforts of a lawyer Ratan Katyayini in settling these nomads. The film questions the viability of the Habitual Offender Act which is still prevalent in many states and violates the fundamental rights of these nomadic tribes.



### भाबा पागला

बंगला / 17 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : अभिजीत मजूमदार, निर्माता : भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, छायांकन : मोहन कृष्ण अगपू, संपादन : शान मोहम्मद

यह फिल्म भ्रमणशीलता पर है—एक उद्देश्यविहीन यात्रा जो भौगोलिक न होकर आध्यात्मिक है, आत्मिक है। फिल्म में प्रकृति का सौन्दर्य निखरा है, इसमें शांति की आकांक्षा भी है।

**BHABHA PAAGLA** Bengali / 17 mins / Video / Colour

**Direction and Script:** Abhijit Mazumdar, **Producer:** FTII, **Cinematography:** Mohana Krishna Agapu, **Editing:** Shan Mohammad

The film is about the spirit of wandering – journeying without a destination – a search - self and spiritual in nature rather than geographical. Nature is shot in this film with the purpose of exploring it in its most magical self – a journey that helps the film travel on its desired path of peace.



## एक आकाश

मौन / 16 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशक एवं छायांकन : सुधाकर रेड्डी यत्कांति निर्माता : यूनेस्को  
 भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान संपादन : नवनिता सेन संगीत :  
 रजत डोलकिया कलाकार : संदीप, मनोज, अश्विनी गिरी

राहुल और अब्बास बहुत से धर्मों और सांस्कृतियों वाले एक छोटे से शहर में मजे से रहते हैं। उनका पतंगबाजी का खेल अचानक उनकी अहम और पहचान की लड़ाई बन जाती है। भावनाओं के आवेश में अंधे हुए उनकी लड़ाई इस सीमा तक पहुँच जाती है कि उन्हें अंत में एक दूसरे की ही सहायता की जरूरत पड़ती है।

## EK AAKASH

Silent / 16 mins / 35 mm / Colour

**Director, Screenplay and Cinematography:** Sudhakar Reddy Yakkanti, **Producer:** UNESCO and FTII, **Editing:** Navnita Sen, **Music:** Rajat Dholakia, **Cast:** Sandeep, Manoj, Aswini Giri

Set in a multi-cultural /religious suburban town *Ek Aakash* is an incident in the life of two boys Rahul and Abbas. Their playful kite flying session turns into a battle of one-upmanship and lets loose a strange mix of ego and aggression. Blinded by their emotions, they reach a point in their quarrel where they end up needing each other's help.



## फिडलर्स ऑन द थैच

अंग्रेजी / 28 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : तृषा दास निर्माता :  
पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट प्रकथन :  
मनीष भारद्वाज, तृषा दास छायांकन : असीम  
मिश्रा संपादन : हरीश चंदर संगीत : जूलिअस  
पैकिअम

मिशनरी फादर एडवर्ड मकगुरे 1954 में भारत आते हैं। पूर्वी भारत के दार्जीलिंग क्षेत्र में 35 वर्षों तक अध्यापन करने के पश्चात् कालिम्पोंग में एक छोटा सा विद्यालय शुरू करते हैं। इस गाँधी आश्रम स्कूल की छत फूस की है। स्थानीय निवासियों, अधिकतम कुली, श्रमिक आदि के बच्चों को स्कूल की ओर आकर्षित करने के फादर बच्चों को तीन समय भोजन देते हैं और इन्होंने एक संगीत के अध्यापक को भी रखा है। माता-पिता और बच्चे प्रोत्साहित होते हैं और संगीत का वाद्य-वृद्ध बढ़ता ही जाता है। चार से चौदह वर्ष के बच्चों का अथक परिश्रम मोजार्ट, विवाल्दी और स्ट्राँस को 70 शास्त्रीय संगीत वाद्यों द्वारा स्वर-संगीत प्रदान करता है।

*फिडलर्स ऑन द थैच* इन बच्चों में छिपी प्रतिभा और वे चार व्यक्ति जो संगीत और गाँधी आश्रम स्कूल के सूत्र में बंधे हैं, की कहानी है।



### FIDDLERS ON THE THATCH

English / 28 mins / video / Colour

**Direction and Script:** Trisha Das,  
**Producer:** Public Service Broadcasting  
Trust (PSBT) and Madhur Das,  
**Narration:** Munish Bhardwaj, Trisha Das,  
**Cinematography:** Aseem Mishra, **Editing:**  
Harish Chander, **Music:** Julius Packiam

Father Edward McGuire, a missionary came to India in 1954. He started his teaching career in Darjeeling in the Eastern end of India. After a career of over 35 years, he retired and began a little school on a patch of land in Kalimpong.

This school called 'The Gandhi Ashram School' has a thatched roof. Hoping to attract the children of the local inhabitants, mostly coolies and road construction

labourers, Father wisely offered three square meals and the services of an inspired music teacher.

Parents and children responded and the music orchestra grew. Alongside, so did the three R's. Today, after years of hard labour these children (from age 4-14) bring to life symphonies of Mozart, Vivaldi and Strauss amongst others through a 70-strong western classical music orchestra.

The film, *Fiddlers on The Thatch* brings to life the story of these children and their amazing talent. It follows the lives of four different individuals whose lives are entwined by a common factor - music and the Gandhi Ashram School. *Fiddlers on The Thatch* is a heart-warming story of the triumph of the human spirit.



## जीयो और जीने दो

हिन्दी / 13 मिनट / 35 एमएम / संगीत

निर्देशन एवं छायांकन : बी. आर. सरनाइक,  
निर्माता : भारतीय बाल चित्र समिति पटकथा  
एवं संपादन : राजेश अग्रवाल  
संगीत : उषा खन्ना

सलीम खान और दयाराम जंगली जानवरों का शिकार करने वन में जाते हैं। कई जानवरों का शिकार कर वे लौटते हुए एक रीछ पर गोली चलाते हैं। वे दोनों बड़े खुश हैं कि रीछ के चर्म को बेचकर उन्हें बहुत पैसा मिलेगा। लेकिन जैसे ही वे उस घायल रीछ के पास पहुँचते हैं, यह उन पर आक्रमण करता है, दोनों जान बचाकर भागते हैं। डरे हुए वे दोनों एक घट्टान पर से गिर पड़ते हैं और यही रीछ उनके प्राण बचाता है। तीनों गहरे दोस्त बन जाते हैं।

सलीम और दयाराम रीछ के साथ वन में जाते हैं और घायल पशुओं की हालत देखते हैं। हाथी कुछ खाने में असमर्थ है, क्योंकि उसके दाँत निकाले जा चुके हैं। हरिण चल नहीं पा रहा, क्योंकि उसकी टाँगें टूट चुकी हैं। बंदर, मोर और शेर सभी कष्ट भोग रहे हैं। इन सबसे मिलकर सलीम और दयाराम को यह महसूस होता है कि इन भोले भाले प्राणियों पर मानव ने कितने अत्याचार किए हैं। वे वही उन जानवरों के सामने अपने हथियार हमेशा के लिए फेंक देते हैं।



### JEO AUR JEENE DO

Hindi / 21 mins / 35 mm / Colour

**Direction and Cinematography :** B.R. Sarnaik, **Producer:** Children's Film Society of India, **Screenplay:** Rajesh Aggarwal, **Editing:** Rajesh Aggarwal, **Music:** Usha Khanna.

Salim Khan and Dayaram come into the forest to hunt wild animals. After a lot of rounds when they are returning in their jeep they see a bear eating honey. Salim Khan shoots from his Bندوق. The bear falls down on being hit by a bullet. They are happy at the thought that the bearskin will fetch them a lot of money. But when they go near the huge wounded animal, it pounces on them and both the friends run

for their lives. In their fright they topple off a cliff but are saved by the same bear. Now the three are really close friends.

Salim and Dayaram now accompanied by the bear are taken on a tour of the forest and see for themselves how the other wounded animals are leading their lives. The elephant is unable to bite and chew since he has lost his teeth. The deer is unable to walk since her legs are broken. The monkey is in a bad state as he has broken his waist. The peacock and the tiger are also suffering. After meeting all these animals Salim and Dayaram realise the atrocities that the humans are committing against these innocent creatures and discard their own weapons in front of the animals.

## काया पूछे माया से

हिन्दी / 88 मिनट / 16 एमएम / रंगीन

निर्देशक एवं निर्माता : अरविन्द सिन्हा,  
छायांकन : रंजन पलित, संपादन : अमिताभ  
चक्रवर्ती

काया पूछे माया से गंगा नदी के तट पर बसे हावड़ा स्टेशन पर तैरते असंख्य मानवीय चेहरों का विचारपूर्ण, तीव्र, किन्तु निर्णय से रहित प्रकथन है। मानव कहे जाने वाले अनबूझ रहस्य और उसकी छवियों में अकल्पनीय साम्य पर निर्देशक की पैनी निगाह है। स्टेशन पर विद्यमान चेहरों व्यक्तियों ध्वनियों की छवि से मानो एक सम्पूर्ण सम्यता का पुनर्निर्माण हुआ है।



### KAYA POOCHHE MAYA SE

Hindi / 88 mins / 16 mm / Colour

**Director and Producer :** Arvind Sinha, **Cinematography:** Ranjan Palit, **Editing:** Amitabh Chakraborty

*Kaya Poochhe Maya Se* is a probing, thoughtful, intense, yet a non-judgmental record of the myriad faces of humanity floating around the Howrah Station that lies by the side of the river Ganga.

The director with his keen eye and an unpredictable symmetry of images, gains an inner eye into the mystery called people. It is as though an entire civilization is reconstructed through images of floating faces, people and sounds.

The documentary focuses on life in and around the busy and bustling Howrah railway station, the entry point to the Eastern Indian metropolis of Kolkata.

लद्दाख, द लैंड ऑफ मिस्ट्री  
अंग्रेजी / 49 मिनट / बीटाकैम / रंगीन

निर्देशन, निर्माण, स्क्रीनप्ले तथा संपाद:  
बियोत प्रज्ञा त्रिपाठी छायांकन : अमित शरण

विश्व की महानदी सिंधुतट पर बसा लद्दाख  
अनेक सभ्यताओं का प्रदेश रहा है। भारत में  
और कहीं भी मनुष्य प्रकृति पर इतना निर्भर  
नहीं है, जितना कि लद्दाख में है। फिल्म में  
लद्दाख का सौन्दर्य, बादल, पहाड़, नदियाँ,  
वन्यजीवन तथा वनस्पतियाँ दिखाई गई हैं।

नुबरा वैली, पेनगांग लेक तथा लद्दाख में  
शरण लिए हुए विस्थापित तिब्बतियों का दर्द भी  
फिल्म में दिखाया गया है।

बौद्ध धर्म की सादगी एवं सफलता हर लद्दाखी  
में झलकती है, जिनके लिए यह केवल एक  
धर्म नहीं अपितु जीवन शैली है।

हिमालय की चोटियों में छिपे इनकी अदभुत  
जीवन शैली आधुनिक जटिलताओं से मुक्त हैं,  
किन्तु उनके विश्वास के साथ छल हो रहा है।



## LADAKH, THE LAND OF MYSTERY

English / 49 mins / Video / Colour

**Director, Producer, Screenplay and  
Editor:** Biyot Projna Tripathy,  
**Cinematography:** Amit Sharan.

Ladakh, the land of many passes is a  
civilization, a world of its own. One of the  
world's greatest rivers, Sindhu is its life  
line. Nowhere else in India is man so  
dependent on nature as in Ladakh. This  
film shows the beauty of the land, the  
clouds, the mountains, rivers, wildlife and

the wild flowers.

The Nubra Valley, the Pengong Lake and  
the pain of the uprooted people of Tibet  
who have sought shelter in Ladakh are  
also explored in the film.

The simplicity of Buddhism is present in  
the body language of every Ladakhi, for  
whom it isn't just a religion but a way of  
life. Hidden away in the Himalayan ranges,  
with their unique way of living, are these  
people away from the complexities of  
modern day survival process? Is their trust  
being exploited?



## द लिज्जत सिस्टरहुड

अंग्रेजी / 29 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्देशन एवं प्रकथन : कादम्बरी चिंतामणि  
तथा अजित ऊमन निर्माता : पब्लिक सर्विस  
ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट पटकथा : महेश जयरामन  
छायांकन : प्रकाश सिमवाल  
संपादन : मुनीश्वर सिंह

चार दशक पहले मुम्बई में निम्न मध्यवर्गीय परिवार की सात महिलाओं ने मिलकर आत्मनिर्भरता की ओर एक यात्रा शुरू की। आज यह एक आन्दोलन का रूप ले चुकी है जिसमें 42,000 महिलाएँ जुड़ी हुई हैं और इनका व्यवसाय 300 करोड़ तक पहुँच चुका है। इस आंदोलन का नाम है—श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़।

फिल्म इस उद्योग की चार नायकियों, उनकी सहयोगियों तथा परिवारों के माध्यम से अनुशीलन करती कि इन सबके लिए लिज्जत बहनों का हिस्सा होना क्या महत्व रखता है। लिज्जत व्यवसाय की बहुत सी बातें, जैसे आपूर्ति करने वालों से उधार न लेना, बाजार की परंपराओं से बिल्कुल अलग है। बहनों ने यह पहचाना कि आत्मनिर्भरता, सह-स्वामित्व तथा श्रम की गरिमा उन्हें अपने घर की चारदीवारी, जहाँ उन्होंने पापड़ बेचना शुरू किया था, से लेकर ओबेरॉय होटल तक ले जा सकती है, जहाँ उन्हें वर्ष की महिला उद्यमी का सम्मान प्राप्त हुआ।



### THE LIJJAT SISTERHOOD

English / 29 mins / video / Colour

**Director:** Kadhambhari Chintamani and Ajit Oommen, **Producer:** Public Service Broadcasting Trust (PSBT), **Script:** Mahesh Jayaraman, **Narration:** Kadhambhari Chintamani, **Cinematography:** Prakash Simwal, **Editing:** Munishwer Singh

More than four decades ago, seven women in a lower middle class suburb of Mumbai began a journey towards self-reliance. Today, more than 42,000 others have joined them in this Rs. 300 Crore grassroots level movement called the Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Pappad.

The film looks at what it means to be a part of this sisterhood through the eyes of four key protagonists, their colleagues and their families. Many of the Lijjat business practices, like not accepting credit from suppliers, stand in contrast to conventional market practices.

But the sisters discover that a business built on the principles of self-reliance, co-ownership and dignity of labour can take them a long way – from the terrace where they first began to roll papad, to the ballroom of the Oberoi Hotel where they were honoured by the corporate world, as Business Women of the year.





## मैडनेस इन द डेजर्ट

अंग्रेजी / 141 मिनट / बीटाकॉम / रंगीन

निर्देशक एवं पटकथा : सत्यजित भटकल  
निर्माता : आमिर खान छायांकन : प्रकाश  
भट्ट, मधु, बिमल बिस्वास, सत्यजित भटकल  
संपादन : हेमन्ती सरकार

*मैडनेस इन द डेजर्ट* ऑस्कर नामित *लगान* के निर्माण की साहसिक एवं प्रेरणात्मक कहानी है। न तो यह परंपरागत निर्माण कथा है और न ही यह *लगान* के उत्थान के लिए बनाई गई है। अपितु यह एक उद्देश्यपूर्ण फिल्म के निर्माण में लगे लोगों के साहस और प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

1996 में आशुतोष गोवारीकर ने एक कहानी लिखना शुरू किया जो ऑस्कर के लिए नामित हुई। इस पटकथा ने फिल्म निर्माण की अब तक की सभी परंपराओं को झुल्ला दिया। दो वर्ष तक कोई निर्माता इस पटकथा को छूने का साहस

नहीं कर सका। तब आमिर खान ने वह कार्यभार अपने कंधों पर लिया। इसमें अभिनय के लिए यह पहले ही राजी हो चुके थे। फिल्म उद्योग का विचार था कि निर्माता निर्देशक पागल हो चुके हैं, किंतु ये दोनों अपनी अन्तःप्रेरणा से आगे बढ़ते रहे।

यद्यपि अदृश्य घोर परिश्रम के लिए कोई तैयार न था। जनवरी से जून तक कच्छ के रेगिस्तान में इसकी शूटिंग सभी के धैर्य की परीक्षा थी, जो भी इसमें शामिल था। कलाकार, निर्देशक बीमार हुए, यहाँ तक कि आशुतोष ने बिस्तर पर लेटकर निर्देशन किया, बजट सीमा के पार हुआ, हजारों ग्रामवासी धूल और धूम में थककर चूर होने तक काम करते रहे किंतु अंततः टीम अपने लक्ष्य को पाने में सफल रही।

*मैडनेस इन द डेजर्ट* *लगान* फिल्म कैसे बनी, इसकी कहानी तो है ही, साथ ही पूरी टीम की कभी न मरने वाली इच्छा शक्ति तथा अदम्य साहस की गाथा भी है।

## MADNESS IN THE DESERT

English / 141 mins / Betacam / Colour

**Direction and Script:** Satyajit Bhatkal  
**Producer:** Aamir Khan, **Cinematography:** Prakash Bhat, Madhum, Bimal Biswas, Satyajit Bhatkal, **Editing:** Hemanti Sarkar

Madness in the desert is a feature length documentary that explores the dramatic and inspiring journey of the Oscar-nominated film, *Lagaan*. The film is not a conventional 'making of the film'. Instead, it is a tale of human adventure about a group of people who set out to make an ambitious film.

Ashutosh Gowariker's *Lagaan* script broke all known conventions of filmmaking and for two years no producer would touch the script. It was then that Aamir Khan stepped in and produced the film.

Planned out as a single schedule shoot during the months of January – June, in the desert of Kutch, the film tested each one's mettle involved. Actors fell ill, Ashutosh ended up flat on a bed because of a slip disc and yet came to direct lying on a cot, the schedule collapsed and the budget spiralled out of control. Yet, the unit doggedly pushed little realising that they were creating history.

At one level, it is the story of how *Lagaan* was made - at another it is of a script that nearly died, a shoot that was nearly abandoned and a spirit that refused to die.



मंगली : एन एक्सोरसिऑ

35 एमएम / 10 मिनट / रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : शिल्पी दासगुप्ता निर्माता : भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान ध्वनि आलेखन : बकिम वेन्डे छायांकन : अंजलिा हजरा संपादन : बीजू कलाकार : अनुपम श्याम, आदित्य लाखिया, शालिनी खन्ना

छत्तीसगढ़ के एक सुदूर गाँव बरुका में मंगली कर्मकाण्ड एवं रूढ़िवाद के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रतिबद्ध है। क्या वह नई धारा प्रवाहित करने में सफल हो पाएगी?

**MANGALI: AN EXORCISON**

35mm / 10 mins / Colour

**Director and Script-writer:** Shilipi Dasgupta, **Producer:** FTII, **Audiography:** Bankim Vende, **Cinematography:** Oindrilla Hazra, **Editing:** Biju, **Cast:** Anupam Shyam, Aditya Lakhia, Shalini Khanna.

In a remote village – Baruka, Chattisgarh.

Mangali comes in between a ritual and stands against all odds to fight it. Will she be able to create a new wave?

## पिकासो मेटामॉर्फसिस

अंग्रेजी / 29 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : नन्दकुमार  
सदामते, निर्माता वाई. एन. इंजीनियर,  
छायांकन : रामचन्द्र कशिद, संपादन :  
हरीश सुतार

फिल्म महान चित्रकार पिकासो की चित्रकला में प्रतिबिम्बित उनके जीवन का विश्लेषण करती है। उनके अस्तव्यस्त जीवन, उनकी प्रेमिकाओं, उनकी शैली और आदर्शवाद का अन्तर्विरोध फिल्म में बहुत प्रभावशाली ढंग से उतारा गया है।

उनकी सर्वोत्कृष्ट कलाकृतियों को आधार बनाकर फिल्म में जनसाधारण और कला के बीच की खाई को पाटने का नूतन प्रयास किया गया है। कला के छात्र पिकासो के सार तत्व पूर्णतया संपृक्त रहते हैं।



## PICASSO METAMORPHOSES

English / 29 mins / 35mm / Colour

**Direction and Script:** Nandkumar  
Sadamate, **Producer:** Y. N. Engineer,  
**Cinematography:** Ramchandra Kashid,  
**Editing:** Harish Sutar.

The film delves into the life and times of Picasso as reflected in his legendary paintings. The turbulent times he went through both in his personal relationships and at a macro level, his lady lovers and the eternal conflicts of styles and idealism as recorded with a telling effect in his candid canvasses.

Covering his masterpieces and the landmark paintings created from 1900 to 1972, the film strives to explain his works to the lay viewers in a novel attempt to bridge the gap between the modern art and the common people. In the bargain the art students do not miss at all the essence of Picasso. In fact, they can enrich themselves from the painstaking details.



## सती राधिका

असमिया / 55 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशन, निर्माण एवं पटकथा : अंजलि दास  
छायोकरन : परेश बरुआ एवं निर्मल डेका  
संपादन : दीपक भुयन कलाकार : निपन गोस्वामी, रूपांजलि कोन्वार, जयंता भगवती, निरहाली देवी, सुवांजलि दास

सती राधिका फिल्म संत श्रीमंत शंकरदेव के समता के सरल संदेश पर आधारित है। उन्होंने प्रतिपादित किया कि केवल उच्च जाति का होने से ही कोई बड़ा नहीं हो जाता, अपितु अपने गुणों और विवेक से होता है।

विख्यात बोरदोवा सत्र स्थापित करने के बाद श्रीमंत शंकरदेव वहीं बस गए। लोगों पर उनका धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रभाव था। एक दिन गोंदवालों ने बाढ़ में डूबते खेतों, फसलों और घरों को बचाने का उपाय पूछा। श्रीमंत ने तेम्बोनी नदी, जो बाढ़ का मुख्य स्रोत थी, पर बाँध बनाने की सलाह दी।

ग्रामवासियों ने इसकी पूरी कोशिश की, किंतु असफल रहे। श्रीमंत ने तब बताया कि यदि एक सती नदी में मछली पकड़ने वाले बाँस के जल से तीन बार पानी डाले तो बाँध बन जाएगा। उच्च जाति की महिलाओं में प्रतिस्पर्धा हो जाती है कि उनमें कौन सती है। बहुत प्रयत्न करने पर भी वे सफल नहीं हो पाती।

इस बीच एक निर्धन मछुआरे की पत्नी राधिका इस काम के लिए तैयार होती है। उसका पति पूर्णानंद उच्च जाति के विरोध से मयभीत होता है। जब श्रीमंत शंकरदेव यह सुनते हैं तो राधिका से जल प्रवाहित करने के लिए कहते हैं। सती राधिका श्रीमंत शंकरदेव के आध्यात्मिक बल से सफल होती है।



### SATI RADHIKA

Assamese / 55 mins / 35 mm / Colour

**Director, Producer and Script:** Anjali Das,  
**Cinematography:** Paresh Barua and Nirmal Deka, **Editing:** Deepak Bhuyan, **Cast:** Nipan Goswami, Rupanjali Konwar, Jayanta Bhagawatim Nirhali Devi, Suvanjal Das.

The great Vaishnavite saint Srimanta Sankaradeva's wanted to convey the message of equality among the masses. He wanted to establish that nobody is superior by virtue of his caste alone. He ensures his superiority by virtue of quality and a high degree of rationality.

Srimanta Sankaradeva after establishing the famous Bordowa Satra has settled down there with high spiritual and religious command over the people. One days villagers approach him for his suggestion to get rid of the impending flood which will drown the village. Srimanta suggests that a dike be constructed on the

Tembouni stream – the main route of the flood waters.

The villagers try their level best to build the dike but remain unsuccessful. Srimanta then informs them that if a Sati (pure sacred woman) pours water with a bamboo-fishing trap with big holes in the stream thrice, the dike would be constructed without a problem. This leads to a competition of sorts among the upper caste village women who want to prove that they are 'Satis'. But none of them succeed.

Meanwhile a poor fisherman's (Purnanada) wife Radhika, persuades her husband to take her to the spot. Purnanada, fearful of the reaction of the upper castes tries to stop Radhika but to no avail. But Srimanta Sankaradeva personally invites Radhika to the contest and with his spiritual powers helps her pour the water from the hole-ridden bamboo trap, thereby making her the only Sati.



## सीड्स ऑफ लाइफ

अंग्रेजी / 30 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्देशिका : उषा अल्बुकर्क निर्माता : पी. एस. बी. टी. पटकथा : शालिनी रे  
छायांकन : एस. कुमार, राज कुमार  
संपादन : अनिल शर्मा

हरे भरे खेत होते हुए भी हताश किसान आत्महत्या कर रहे हैं। सरकारी भण्डार खाद्यान्नों से भरे हुए हैं, फिर भी राजस्थान में बच्चे भूख से मर रहे हैं। भारतवर्ष में कृषि का संक्रमण काल है। रसायनों ने भूमि की गुणवत्ता को नष्ट कर दिया है। जल स्रोत क्षीण हो रहे हैं, कीटाणुओं से फसलों तथा मिट्टी के रक्षक जीवाणु नष्ट हो रहे हैं। हरित क्रांति के पश्चात् बड़े कृषि व्यापारियों द्वारा अधिक उपज देने वाले बीजों के प्रयोग से किसान अपने परम्परागत कृषि तरीकों को छोड़ कर धनोत्पादक किस्मों की ओर उन्मुख हो रहे हैं। जिससे जैव विविधता नष्ट हो रही है।

1980 में वन्दना शिवा द्वारा छेड़े गए नवदान्य आंदोलन से किसानों को एक नई दिशा मिली। इन्होंने एक बीज बैंक स्थापित किया और बीजों के स्वतंत्र आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया और अपने आदर्श खेत द्वारा यह प्रमाणित किया कि जैविक खाद लाभकारी है।

सीड्स ऑफ लाइफ पंजाब के संगरूर जिले में किसानों की आत्म हत्याओं के परिप्रेक्ष्य में यह खोज करती है कि क्या नवदान्या आंदोलन इन समस्याओं का समाधान बन पाएगा।



### SEEDS OF LIFE

English / 30 mins / video / Colour

**Director:** Usha Albuquerque, **Producer:** PSBT, **Script:** Shalini Reys, **Cinematography:** S.Kumar, Raaj Kumar, **Editing:** Anil Sharma

Even as a the fallout of the Green Revolution of the 60s becomes evident global agri-business giants are moving in with high-yielding seed varieties that induce farmers to relinquish traditional produce for apparently more lucrative cash crops that are slowly eroding the land's bio-diversity.

On the other hand, structural adjustments brought on by liberalisation have meant a near total withdrawal of government support from this sector, leaving the small

farmer out in the cold and cutting off the poor man's access to affordable and nutritious food. These are the concerns expressed by Dr. Vandana Shiva, environmental activist and champion of India's farmers.

The Navdanya movement launched in the 1980s is fast gaining ground. Dr. Shiva has instituted a seed bank to conserve crop strains and encourages free exchange of seeds. Her model farm proves that organic farming is sustainable.

*Seeds of Life* investigates Dr. Shiva's work within the context of the farmer suicides in the Sangrur district of Punjab and asks whether the Navdanya can be replicated on a macro level.

## द एटीथ एलीफेन्ट : थ्री मोनोलोग्स

मलयालम/63 मिनट/बीटा/रंगीन

निर्देशक : पी. बालन निर्माता : ए एन एम पी  
यू मीडिया ट्रस्ट पटकथा : राधा आर  
प्रकथन : बालचन्द्रन चुल्लीकाड छायांकन :  
के. जी. जयन संपादन : बीजू एस. कूथनम

फिल्म मानव की प्रकृति के प्रति स्वार्थपरक वृत्ति तथा विकास की मानव केंद्रित परिकल्पना, जो प्रकृति तथा अन्य प्राणियों के लिए मृत्यु एवं विध्वंस का कारण बन गया है, की समीक्षा करती है। हाथियों की जंगल एवं पालतू दोनों ही स्थितियों में करुण दशा इसका सशक्त उदाहरण है। परंपरागत वृत्तचित्रों से भिन्न इस फिल्म में तीन हाथी, जिनमें से कुछ की प्रजाति विनाश के कगार पर है, मानवीय स्वर में अपनी करुण कहानी सुनाते हैं।

फिल्म मानव को एक चेतावनी है कि अगर वह अभी नहीं संभला तो प्रकृति की भयंकर और विध्वंसकारी प्रतिक्रिया हो सकती है।

हाथी, विश्व का सबसे बड़ा रतनपायी जीव हैं। एक समय था जब इसकी 352 प्रजातियाँ पृथ्वी पर थीं, अब केवल दो बची हैं, एशियन और अफ्रीकन। भारत में आजकल लगभग 20,000 हाथी हैं, जो दक्षिण और उत्तर पूर्व भारत में बिखरे हुए हैं। केरल में हाथी दाँत की चोरी के कारण, हाथियों के पालतू बनाने के कारण तथा मंदिर महोत्सवों इत्यादि में हाथियों के प्रयोग के कारण इनका लिंग असंतुलन 1:40 तक पहुँच गया है, घेतने का समय है।



### THE 18<sup>TH</sup> ELEPHANT : 3 MONOLOGUES

Malayalam (with English subtitles) / 63  
mins / Video / Colour

**Director:** P. Balan, **Producer:** Anmpu  
Media Trust, **Script:** Radha R., **Narration:**  
Balachandran Chullikad, **Cinematography:**  
K.G. Jayan, **Editing:** Biju S. Koonthanam

This film is a critique of Modern man's mercenary attitude towards Nature and his anthropocentric conception of development which has wreaked death and havoc on the life and habitat of other species.

The sad plight of the elephant in both its wild and domesticated states is used as a powerful example to bring home this point.

In an innovative break, with the usual style of the documentary, three elephants 'talk' about their condition in monologues

form while some of the extinct species 'present' the film as a warning to man to mend his ways if destiny is to have in store anything different for him.

The Elephant is the world's largest land mammal, 352 species of which once walked the earth. Now only two survive – the African and the Asian. In India about 20,000 elephants survive today, distributed over the remaining forests of the three southern states and in parts of the North-East.

In Kerala due to heavy poaching by ivory-hunters, capture of tuskers for domestication and use in temple rituals and festivities – the male-female ratio has dropped to an alarming 1:40.



## उन्नी

मलयालम / 13 मिनट / 35 एमएम / रंगीन

निर्देशक एवं पटकथा : महेश तोट्टातिल  
निर्माता : चेतना मीडिया के लिए बेन्नी बेनेडिक्ट  
कहानी : कमला दास छायांकन : संतोष  
तुंडियाल संपादन : बीना पॉल संगीत :  
टोनी जोस कलाकार : पूर्णिमा परमेश्वरन्,  
मास्टर विग्नेश

एक अछेड़ घनाढ्य महिला, जिसके बच्चे नहीं हैं और एक दस वर्षीय बालक के बीच की कहानी है—उन्नी। एक दिन उस महिला के जीवन में यह बालक हवा के झोंके की तरह आता है। महिला, जो अपने पति के आने की प्रतीक्षा कर रही थी, उसे भगाने की पूरी कोशिश करती है। किंतु उस बालक पर उसके कहने का, धमकियों का कोई असर नहीं होता, अपितु वह उसे उन मधुर स्मृतियों में ले जाता है, जो अतीत में कहीं खो गई थीं।

इस फिल्म को वर्ष 2003 की सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म के लिए जॉन अब्राहम पुरस्कार तथा नौवें एशियन फिल्म एण्ड कल्चर फेस्टीवल के समारोह में सर्वोत्तम लघु फिल्म के लिए जूरी का तीसरा पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। यह कॉमनवेल्थ फिल्म 2004, केरल अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 2003, मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 2004 तथा बासीलोना अंतर्राष्ट्रीय लघु फिल्म समारोह 2003 में भी दिखाई जा चुकी है।



## UNNI

Malayalam / 13 mins / 35 mm / Colour

**Direction and Script :** Mahesh Thottathil, **Producer:** Fr. Benny Benedict for Chetna Media, **Story:** Kamala Das, **Cinematography:** Santosh Thundiyaal, **Editing:** Bina Paul, **Music:** Tony Jose, **Cast:** Poornima Paramesh-waran, Master Vignesh.

The film unveils an encounter between a middle-aged, childless housewife and 10-year-old. On a lazy afternoon the boy appears as if from thin air and steps into her rich household. The woman who is expecting her husband's arrival, tries to

kick him out of the house but the boy ignores her requests. He reminds her of something vivid and familiar, something that remains fogged somewhere in the past.

The film has received John Abraham Award for Best Short Fiction Film, 2003 and the 3<sup>rd</sup> Jury Award for Best Short Film at the 9<sup>th</sup> Asian film and Culture Festival, Lyon (France) 2003. It has also participated in the Commonwealth Film Festival 2004, International Film Festival of Kerala 2003, Mumbai International Film Festival 2004 and the Barcelona International Short Film Festival 2003.

वैद्यरत्नम् पी. एस. वारियर  
मलयालम/30 मिनट/वीडियो/रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : टी.के. कृष्णन  
उन्नी निर्माता : केरल राज्य फिल्म विकास  
निगम प्रकथन : जी महादेव छायांकन :  
ज्योतिकुमार संपादन : विजय कुमार

यह वृत्त चित्र आधुनिक भारत में आयुर्वेद के जनक डाक्टर पी एस वारियर के जीवन पर आधारित है। केरल के कोट्टकल (मालापुरम) के मध्यवर्ती परिवार में जन्मे पी एस वारियर अपने दृढसंकल्प एवं इच्छा शक्ति द्वारा 18वीं सदी के आयुर्वेदीय उपचारों को रूपान्तरित कर प्रयोग में लाए। इसके अतिरिक्त वारियर ब्रिटिश सरकार तथा तत्कालीन लोगों की आयुर्वेद के प्रति विचाराधारा को बदलने में भी सफल रहे। इनके द्वारा संस्थापित छोटा-सा संस्थान आज आयुर्वेद का प्रमुख संस्थान बन गया है तथा इससे केरल के एक छोटे-से स्थान को विश्व में पहचान मिली है। सारी दुनिया से आयुर्वेदिक इलाज के लिए लोग यहां आते हैं। संस्कृति में भी रुचि रखने वाले पी.एस. वारियर ने पी एस वी नाट्य संघम की स्थापना की है तथा शास्त्रीय नृत्य कथकली के उन्नयन के लिए प्रयत्नशील है। पी एस वी नाटक कम्पनी की स्थापना करके इन्होंने रंगमंच के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया है।



**VAIDYARATNAM P.S. VARIER**  
Malayalam / 30 mins / Video / Colour

**Direction and Script:** T.N. Krishnan Unni,  
**Producer:** KSFDC, **Narration:** G.  
Mahadevan, **Cinematography:** Jyothikumar,  
**Editing:** Vijayakumar

This documentary tries to depict the life and works of Dr. P. S. Varier, who could be called the Father of Ayurveda in the present day India. Born in a middle class family in Kottakal in the present Malapuram district of Kerala, Dr. P.S. Varier through his sheer determination and goodwill brought about a transformation in the treatment and practise of Ayurvedic medicines of the 18<sup>th</sup> century.

Along with that P.S. Varier also managed to bring about a revolutionary change in the attitude of the British government and

the people of the era. The establishment he started has now grown into a prime institution which has made this small Kerala town known across the world.

People from all walks of life from all over the world come here for Ayurvedic treatment. Thanks to Dr. Varier, Kottakal has also become home for cultural enthusiasts, with P. S. V Natya Sanghom started by Dr. Varier still pursuing its efforts in promoting that great classical performing art of Kathakali.

He had made inroads into the Malayalam and Sanskrit literature of his period. He also founded the P.S.V Nataka Company which contributed a great deal to the theatre community. Each and every institution that Varier set up then is functional even today.



## वार एंड पीस

हिन्दी-अंग्रेजी / 163 मिनट / वीडियो / रंगीन

निर्माता, निर्देशक, छायाकार एवं संपादक:  
आनन्द पटवर्धन ध्वनि आलेखन: सीमान्तिनी  
धुरु, मोनिका वाही, विपिन भाटी

वार एंड पीस सैन्यवाद एवं युद्ध के युग में शान्ति की यात्रा का प्रलेखन है। इसमें महात्मा गांधी की हत्या जनित दुख भी है और परमाणु परीक्षण की सफलता का हर्ष भी। इसमें सैन्यवाद का विरोध किया गया है। शत्रु देश पाकिस्तान में भारतीय प्रतिनिधियों का स्वागत होता है। राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर नागरिकों को जो मूल्य चुकाना पड़ता है, परमाणु परीक्षण स्थल के आसपास के निवासियों पर उसका रसायनिक प्रभाव तथा यूरेनियम खनन के दुष्प्रभाव इन सबसे यह स्पष्ट हो जाता है कि अमेरिका द्वारा प्रकल्पित शांतिमय परमाणु जैसी कोई वस्तु नहीं होती।

वार एंड पीस इस पर भी प्रकाश डालती है कि विकासशील राष्ट्रों पर शक्तिसम्पन्न अमेरिका ने किस प्रकार अपना प्रभुत्व बनाया हुआ है।

इस दुनिया में आदर्श एवं महात्मा की स्मृतियों के लिए कोई स्थान नहीं है।



## WAR AND PEACE

Hindi-English / 163 mins / Video / Colour /

**Director, Producer, Cinematography and Editing:** Anand Patwardhan, **Sound:** Simantini Dhuru, Monica Wahi, Vipin Bhati

The sub-continent's trajectory towards militarism is explored with sorrow, though *War and Peace* captures stories of resistance along the way. Among these is a visit to the 'enemy country' Pakistan, where Indian delegates are showered with affection by the uninitiated common folk.

Moving on to examine the costs being extracted from citizens in the name of national security, from the plight of

residents living near the nuclear test site to the horrendous effects of uranium mining on local indigenous populations, it becomes abundantly clear that contrary to a myth first created by the USA there is no such thing as a 'peaceful atom.'

*War and Peace* focuses on how an aggressive us has become a role model, its doctrine of 'Might is Right' only too well absorbed by aspiring elites of the developing world.

In the moral wastelands of the world memories of the Mahatma seem like a mirage that never was.



## वाटर

अंग्रेजी / 105 मिनट / 35 एम एम / रंगीन

निर्देशक : फिल्म प्रभाग निर्माता : उर्मि चक्रवर्ती छायांकन : असीम बोस संपादन : अर्धकमल मित्रा ध्वनि आलेखन : अनूप मुखर्जी

फिल्म बढ़ते जल संकट तथा जलस्रोतों के संरक्षण पर प्रकाश डालती है ताकि हम आने वाले आपदा से बच सकें।

## WATER

English / 105 mins / 35mm / Colour

**Director:** Films Division, **Executive Producer:** Urmil Chakraborty, **Cinematography:** Asim Bose, **Editing:** Aruhakamal Mitra, **Audiography:** Anup Mukherjee

The film deals with an imminent problem of water crisis looming in the near future and has also thrown light on proper management of water and other resources, to overcome this impending calamity.

## वे बैक होम

बंगला / 117 मिनट / बीटाकैम / रंगीन

निर्देशन एवं पटकथा : सुप्रियो सेन, निर्माता: राजश्री मुखोपाध्याय छायांकन : रंजन पलित, संपादन : सुमित घोष

15 अगस्त 1947 को भारत को अंग्रेजी राज से स्वतंत्रता तो मिली किंतु उसका मूल्य विभाजन के रूप में चुकाना पड़ा। मुसलमानों के लिए एक अलग देश पाकिस्तान बन गया। हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक दंगों से देश बिखर गया, दस लाख लोग मारे गए, 75000 तक का अपहरण तथा बलात्कार हुआ, खेद करोड़ लोग बेघर हो गए। जब विभाजन हुआ तब मेरी माँ केवल आठ वर्ष की थी। वे संख्या नदी के किनारे बनरीपुर गाँव में रहती थी, जहाँ सभी धर्मों के लोग शांति एवं सदभावना पूर्वक रहते थे।

1942 में ब्रिटिश पुलिस ने मेरे पिता को भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के लिए हिरासत में ले लिया। वे एक राजनैतिक कार्यकर्ता थे और वह धार्मिक और जातीय भेदभाव से रहित एक स्वतंत्र राष्ट्र का सपना देखा करते थे। विभाजन ने उनके सपनों को चकनाचूर कर दिया। 11 फरवरी, 1950 को पूर्वी पाकिस्तान में बारीसाल में सामूहिक हत्याकांड हुआ। यद्यपि इसके सरकारी आँकड़े प्राप्त नहीं हैं, फिर भी अनुमान है कि पूर्वी भारत से सर्वाधिक अनुमानतः 6,50,000 लोग निर्वासित हुए। लोग लूटे गए, अपहृत हुए, मारे गए। अधिकतर यह नहीं जानते थे कि वे भारत पहुँच पायेंगे या नहीं।

मेरे लिए यह कलकत्ता से बारीसाल की व्यक्तिगत यात्रा थी। मैं स्मृतियों के आधार पर अपनी खोई हुई मातृभूमि का पुनर्निर्माण करना चाहता था। कुछ वर्ष पहले भारत और पाकिस्तान ने स्वतंत्रता के पचास वर्ष मनाए। कुछ लोगों के लिए अपने घरों से विस्थापित होने के पचास वर्ष थे। मैं अपने माता-पिता को उनके खोए हुए घर में ले जाकर यह पंचासवीं वर्षगांठ मनाना चाहता था। फिल्म को अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।



### WAY BACK HOME

Bengali / 117 mins / Betacam / Colour

**Direction and Script:** Supriyo Sen,  
**Producer:** Rajashri Mukhopadhyay,  
**Cinematography:** Ranjan Palit, **Editing:** Sumit Ghosh

On 15<sup>th</sup> August 1947, India achieved Independence at the cost of Partition. On the eve of Independence violent communal riots between Hindus and Muslims tore up the country – a million people died, some 75,000 were abducted and raped, thousands of families split, homes burnt and more than 15 million people were forced to leave the only homes they had ever known. My mother was 8, when the Partition took place.

In 1942, the British police had arrested my father for participating in the Quit India

Movement. Partition thwarted his dreams. Starting 11 February, 1950 the biggest massacre of East Pakistan took place in Barisal.

No official records are available to determine the number of dead but it triggered the largest migration in the Eastern part of the country. On road to the border they were looted, abducted and killed. Most of them didn't know whether they'd be able to reach India. The Indian Government labelled them as 'Permanent Liabilities' and left them to rot.

For me, this film is a personal journey from Calcutta to Barisal. I wanted to reconstruct the lost land with restored memory. A few years ago, India and Pakistan celebrated 50 years of Independence. For some it also meant 50 years of a lost home.